(गीताञ्जली धारा=30)

उपलब्धि-गीताञ्जली

सृजेता - महाकवि आचार्यश्री कनकनन्दीजी

द्रव्य/(ज्ञान) दाता

1. स्व. श्रीमती पुष्पा देवी पत्नी श्री धनराज जी जैन, चीतरी की पुण्य स्मृति में सुपुत्र-1. भरत कुमार, 2. मणिभद्र जैन
2. श्री छगनलाल शोभाचन्द जी सिंघवी (अध्यापक) सलूम्बर (आप 1998 से प्रतिवर्ष ज्ञानदान के लिए 1111/- रु. देने का नियम लिये हैं।)
3. श्री इन्दरमल जी टीमरवाँ
4. श्री भँवरलाल जी मादावत
5. सुश्री संध्या माता श्री सुशीला चीतरी
6. श्री देवेन्द्र कुमार जी जावरिया
7. श्रीमती चन्द्रावती पुत्री श्री एम.पी. गाँधी
8. श्री सुमतिप्रकाश जी लोलावत
9. श्री जमनालाल जी बोहरा
10. श्री बंसीलाल जी सिंघवी
11. श्रीमती अनिता गोदावत

ग्रंथांक	**- 231**	**प्रतियाँ**	**- 500**
संस्करण	**- 2014**	**मूल्य**	**- 101/-**

सम्पर्क सूत्र व प्राप्ति स्थान

आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव द्वारा आशीर्वाद प्राप्त

धर्म-दर्शन सेवा संस्थान, द्वारा-श्री छोटूलाल जी चित्तौड़ा

चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर आयड़, आयड़ बस स्टॉप के पास

उदयपुर (राज.) 313001 / मो. : 09783216418

डॉ. नारायणलाल कछारा

सचिव - धर्म-दर्शन सेवा संस्थान

55, रवीन्द्र नगर, उदयपुर (राज.) 313001

फोन नं. 0294-2491422 / मो. : 09214460622

E-mail:nlkachhara@yahoo.com

विषयानुक्रमणिका

क्र.सं.	नाम	पृ.सं.
1.	स्वाध्याय तपस्वी आचार्य कनकनन्दी गुरुवर के ससंघ का कृतित्व	7
2.	आचार्यश्री कनकनन्दीजी गुरुदेव का व्यक्तित्व-कृतित्व एवं उपलब्धि	8
3.	स्व-शुद्धात्म वन्दन	9
4.	अन्तरात्मा से प्रार्थना	9
5.	आध्यात्मिक गुरु की वन्दना	10
6.	तू ही तेरा सर्वस्व	11
7.	मेरी भावना-साधना-उपलब्धि	11
8.	सबसे परम है आध्यात्मिक	12
9.	सबसे श्रेष्ठ-ज्येष्ठ ग्रहणीय	13
10.	सर्वोदयी चार भावनाएँ	14
11.	निज में जिनेन्द्र प्रगट हेतु जिनेन्द्र दर्शनादि	14
12.	दुर्लभ से दुर्लभतर व दुर्लभतम उपलब्धियाँ	15
13.	परम सर्वोच्च है : आध्यात्मिक	16
14.	अर्थ-पुरुषार्थ (अर्थशास्त्र)	17
15.	उपलब्धियों का दुरुपयोग न करो!	18
16.	पूर्ण विराम.... पूर्ण प्राप्ति	18
17.	सबसे श्रेष्ठ-ज्येष्ठ-क्लिष्ट	19
18.	महान् बनने के सूत्र	20
19.	पुण्यात्मा एवं पापात्मा	21
20.	समता सुखामृत पायो/(पीयो)	22
21.	समता महाशक्ति पायो	23
22.	अनुभव ज्ञानामृत पायो	23
23.	मेरी भावना एवं लक्ष्य के अनुसार	24
24.	अभी मैं स्वयं को मानूँगा व मनाऊँगा	25
25.	अन्य लोग मुझे क्यों नहीं समझ पाते	26
26.	मेरी भय एवं निर्भय की साधना	28
27.	वैज्ञानिक ज्ञान से मुझे प्राप्त लाभ/(शिक्षाएँ)	29
28.	सत्य की आत्मकथा	30
29.	भाग्य एवं पुरुषार्थ	31
30.	वैराग्य होता है दुःख मिश्रित सुख से	32
31.	सुकथा एवं विकथा	34

क्र.सं.	नाम	पृ.सं.
32.	परम स्वतंत्रता/(मोक्ष) चाहता हूँ	35
33.	पाप-ताप-रोगहर प्रायश्चित्त	36
34.	पेट नहीं है महापापी	37
35.	जीवों के उत्थान-पतन एवं मोक्ष	37
36.	पंचपरिवर्तन से मुझे प्राप्त शिक्षाएँ	38
37.	भारत में विकास!?	39
38.	प्रतीक स्वरूप शरीर के अंगोपांग से प्राप्त शिक्षाएँ	40
39.	चरण से प्राप्त शिक्षाएँ	41
40.	दोनों चक्षु से प्राप्त मुझे शिक्षाएँ	41
41.	दोनों कानों एवं मन से मुझे प्राप्त शिक्षाएँ	42
42.	तीर्थंकरों सिद्धों से प्राप्त आत्मोपलब्धि की शिक्षाएँ	42
43.	मेरी कहानी जो सर्वज्ञों ने जाना	43
44.	सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि बुद्धियुक्त न्यायदाता भी- परम ज्ञान सुख हेतु बनते हैं साधु	44
45.	प्रतिक्रमण (कृत दोष परिहार) से मुझे प्राप्त शिक्षाएँ	45
46.	ग्रामीण संस्कृति एवं प्रवृत्ति	46
47.	स्वाभिमान का स्वरूप एवं फल	47
48.	स्व अनन्त गुण-गण स्मरण ध्यान	48
49.	मेरा परम स्वरूप/सोऽहं भाव	48
50.	शरीर रहित होने पर लाभ	49
51.	शक्ति के अनुसार तप-त्याग मैं करूँ	50
52.	मेरी प्रवृत्ति से मेरी उपलब्धियाँ	50
53.	मेरे लिये पावन काल-क्षेत्र व धर्म	51
54.	मेरे सकारात्मक सोच कथन एवं चारित्र व्यवहार	52
55.	मेरी पावन चार वैश्विक अभिलाषा	53
56.	अनन्त बिन कहाँ सुख पावे ?!	54
57.	धन्य है मेरा भाग्य	55
58.	विवश मानव मैं पायो	55
59.	स्वार्थ व प्रसिद्धि के सभी दास हैं	56
60.	आधुनिक साधन भी बन रहे है अभिशाप	57
61.	मम ज्ञानामृत रस	57
62.	स्वभाव स्वरूप स्वधर्म ही स्थिर विभाव स्वरूप अधर्म अस्थिर	58

क्र.सं.	नाम	पृ.सं.
63.	मोही-अज्ञानी एवं निर्मोही के भाव-व्यवहार	59
64.	शक्ति आराधना का वास्तविक स्वरूप	60
65.	वैश्विक सिद्धान्तों की विशेषताएँ	61
66.	समता एवं मौन से मुझे प्राप्त लाभ	62
67.	पढ़ाई < अध्ययन < स्वाध्याय	62
68.	आध्यात्मिक एक लाभ अनेक	63
69.	सुख प्राप्ति के उपाय	64
70.	आत्मशक्ति से होता है सर्वोच्च विकास	64
71.	आत्मविश्वास है सर्वोदय का मूल	65
72.	आत्मविश्वास से मिलती है सफलता	67
73.	अद्वितीय	68
74.	कुज्ञान-सुज्ञान-बहुज्ञान-अनन्त ज्ञान	70
75.	जीवन प्रबन्धन के मूल-सूत्र	71
76.	भारत की संतान महान् बने तो कैसे ?!	72
77.	क्यों है भारतीय प्रतिभा कुन्द/(अविकसित)?	73
78.	भाव से भाग्य एवं भावी निर्माण	74
79.	हर क्षेत्र में भाव की मुख्यता क्यों ?!	75
80.	सुख प्राप्ति के उपाय	76
81.	अशुभ त्यागो शुभ से शुद्ध बनो	77
82.	सिद्ध (शुद्धात्मा) गुणों का करूँ यथा योग्य अनुकरण	78
83.	महान् बनने के सूत्र	79
84.	महामानव व क्षुद्रजनों के भाव व कार्य	79
85.	भौतिक समृद्ध सभ्यताओं के विनाश के कारण	80
86.	अभी भी है भारत में अनेक परतंत्रता	81
87.	गृहस्थाश्रमी एवं गृहस्थों की दशा-दिशा/(समस्या)	82
88.	मेरी भावना-परम ज्ञान हेतु मुझे चाहिये स्व ज्ञान	83
89.	संकीर्ण भौतिकता परे भी जानो मानो!	84
90.	परम रहस्य एवं चमत्कार	85
91.	महान् लक्ष्यादि बिना सत्तादि से होता विनाश	86
92.	उत्तम भाव बिना शिक्षादि से भी न होते श्रेष्ठ काम	87
93.	भोग-भूमिजों से प्राप्त शिक्षाएँ	87
94.	समता-सत्य धर्म महान्	88

क्र.सं.	नाम	पृ.सं.
95.	सफलता एवं असफलता के कारक	89
96.	अहिंसा-अपरिग्रह का सार्वभौम नियम	90
97.	संकीर्ण-क्रूर-धार्मिक से श्रेष्ठ अधार्मिक सरल जीव	91
98.	सत्य-साम्य-सादगी से मिलती शान्ति	92
99.	कट्टर धार्मिक से श्रेष्ठ उदार वैज्ञानिक	92
100.	अनन्त शक्ति सम्पन्न आत्मविश्वास तो-विकृत व क्षीण शक्ति युक्त अन्धविश्वास	93
101.	कार्य करने की पद्धति	94
102.	मैं ही मेरे परम द्रव्य-सत्य-धर्म-तीर्थ हूँ	94
103.	महान् नेतृत्व कर्त्ताओं के महान् गुण	95
104.	सत् < चित् < आनन्द या आनन्द > चित् > सत्	96
105.	सत्य-समता सुख का वैश्विक रूप	97
106.	सम्यग्दृष्टि की श्रद्धा-प्रज्ञा-परिणति	98
107.	आत्मविश्वास युक्त ज्ञान सुज्ञान अन्यथा मिथ्या ज्ञान	99
108.	लौकिक-व्यवहार सम्यग्दृष्टि तथा निश्चय सम्यग्दृष्टि	100

परिशिष्ट

1.	प्रवीण मुनि का पत्र	102
2.	आचार्यश्री कनकनन्दीजी के नाम प्रवीण मुनि की पाती	102
3.	कनक गुरु के नाम धर्म व शिक्षा (सृजनकार प्रवीण मुनि)	103
4.	गुरुवर कनक का नाम लेना	104
5.	कनक गुरु के चरणों से दूर जाना नहीं	104
6.	प्रवीण मुनि के लिये आचार्यश्री कनकनन्दी का पत्र	105
7.	शुभ खर्च शुभ लाभ	105
8.	भ्रष्टाचार की जीवन रेखा न बने अदालत	106
9.	शिक्षा संस्थानों में ही मिल रहे भ्रष्ट संस्कार	107
10.	आत्मविश्वास रखे	107
11.	मेरी वैराग्य कहानी, मेरी जुबानी	108
12.	मेरी वैराग्य कहानी, मेरी जुबानी (कवितामय)	110
13.	बन्ध एवं मोक्ष डगर	111
14.	वैरागी पुत्र के लिये पिता का अनुमोदनात्मक पत्र	112
15.	वैरागी पुत्र के लिये पिता का अनुमोदनात्मक पत्र (कवितामय)	115
16.	वैरागी भ्राता के लिये बहिन का अनुमोदनात्मक पत्र	116

17. वैराग्य भाव से ओत-प्रोत बड़े भ्राता के लिये छोटी बहन की अनुमोदक 'पाती' 117
18. विरागी पुत्र का अनुमोदक पिता के लिये पत्रोत्तर 118
19. शुभाशीर्वाद 122
20. अतिशय क्षेत्र सीपुर में आगामी 20 चातुर्मास हेतु महान् गुरुभक्त श्री नितिन जैन द्वारा अचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव ससंघ को साग्रह निवेदन..... 123
21. आचार्यश्री कनकनन्दीजी गुरुदेव तथा उनके प्रो.डॉ. शिष्यों के द्वारा रचित शोधपूर्ण ग्रन्थ 125
22. प्रायोगिक जीवन्त धर्म सेवाधर्म (सेवाभावी वैद्य व सज्जनों का सम्मान) 134
23. ज्ञान प्रभावना-ज्ञानदान की उपलब्धि सह पर्यूषण पर्व सानन्द सम्पन्न 134
24. आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के संक्षिप्त व्यक्तित्व-कृतित्व 135

कानून का उद्देश्य पाबन्दी लगाना नहीं बल्कि आजादी को संरक्षित करना व उसे बढ़ाना है।

-जॉन लॉक, ब्रिटिश दार्शनिक

परमविकास के कारणभूत सत्य-समता-शान्ति-अहिंसा-अचौर्य-अपरिग्रह-ब्रह्मचर्य-उदारता-सहयोग-सेवा-परोपकार-सुरक्षादि ही यथार्थ से कानून है।

-आचार्य कनकनन्दी

स्वाध्याय तपस्वी आचार्य कनकनन्दी गुरुवर ससंघ का कृतित्व

रचनाकार - श्रमणी सुवत्सलमती

चाल : (चौपाई) जय हनुमान ज्ञान गुणसागर.....

दोहा : शीश नवा अरिहंत को, सिद्धन करूँ प्रणाम।
कनकनन्दी गुरुश्रेष्ठ का, लो सुखकारी नाम।।

सर्वधर्म मैत्री के आप सूत्रधार, दिगम्बर श्वेताम्बर संघ परिवार।
'जैना' अमेरिका, गायत्री परिवार, सत्य समता शान्ति के पक्षधर।।

'पीस नेकस्ट' के अनुपम सदस्य, विश्वविद्यालय में मान्य है ग्रंथ।
Ph.D., M.Fill, Di.Lit. होता, शोधपूर्ण साहित्य पर।।

गद्यमय द्विशत (200) रचे है ग्रंथ, शोधपूर्ण व विज्ञान युक्त।
विद्वत् जन पाते विज्ञान, रहस्य ग्रंथों को अध्ययन कर।।

सीपुर अतिशय क्षेत्र महान्, वहाँ से निकली पद्य/(काव्य) की गंगा।
महाकवि है गुरुवर श्रेष्ठ, गीतांजली धारा सृजित तीस (30)।।

विश्वधर्म संसद तक, बजा है 'कनक' के ज्ञान का डंका।
सत्तावन (57) विश्वविद्यालय में, साहित्य कक्ष हुआ है स्थापन।।

देश के चतुर्दश प्रदेशों में, हुई त्रिंशत कक्षों की स्थापना।
शोधार्थी के शोध निर्देशक, गुरुवर के ही विद्वान् शिष्य।।

(12) बारह अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, तैतीस (33) धर्म प्रशिक्षण शिविर।
प्राय: त्रिंशत (300) श्रमण-श्रमणी के, गुरु भगवंत है अध्यापक।।

'जैन एकता' व 'जन एकता' का, हल्दीघाटी में हुआ शंखनाद।
'कछाराजी' सुशिष्य द्वारा, ऑनलाईन पाठ्यक्रम शुरू।।

अमेरिका में साहित्य शोध केन्द्र, जिनालय निर्माण व अनुवाद कार्य।
जैन विश्व भारती लाडनूँ में, जैन धर्म का शोध केन्द्र।।

'सोहन तातेड़जी' प्रबुद्ध शिष्य, U.G.C. के बने सलाहकार।
'विमलाबेन चंपकलाल खेतानी', गुरु सेवक है श्वेताम्बर।।

दिगम्बर श्रमणों की वैयावृत्ति हेतु, वैद्यों की है समायोजना।
स्वर्ण (मय) प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर, सम्मानित वैद्यों को(है) कीना।।

जैन-जैनेत्तर भक्त-शिष्य, स्व-प्रेरित हो करते दान।
आहार दान व औषध दान, साहित्य प्रकाशन हेतु ज्ञान दान।।

प्रभात-सुशील-पारसमलजी, छोटूलाल-दीपेश-गोदावतजी।
मणिभद्र खुशपाल आशादेवी, मयंक, अजय, गुरुचरणजी।।

नरेन्द्र-प्रद्युम्न अमेरिका वासी, मुकेश संजय दर्शना देवी।
कृष्णावतजी की भविष्यवाणी, मरणोपरान्त होगी कीर्ति।।

अनुपम चिंतक अनुभव ज्ञानी, ज्ञान की महिमा सबने मानी।
मादरेचा 'सेठी' अशोक आदि, सादर नमन करते विज्ञानी।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 21.08.2014, पूर्वाह्न 7.00

आचार्यश्री कनकनन्दीजी गुरुदेव का व्यक्तित्व-कृतित्व एवं उपलब्धि

प्रस्तुतिकार - श्रमण मुनि सुविज्ञसागर

चाल : 1. सुनो-सुनो ऐ दुनिया..... 2. क्या मिलिये ऐसे.....

सुनो-सुनो ऐ! दुनिया वालों, विश्व गुरु का वृहत् कृतित्व।
जिसे सुनकर तुम जान पाओगे, 'कनक' गुरु का महान् व्यक्तित्व।।.....(स्थायी).....

तीन वर्ष की आयु में जिनने, प्रबल स्मरण शक्ति को पाया.....
दश वर्ष की आयु में देखो, महान् लक्ष्य निर्धारित किया.....
उसी ध्येय को ध्यान में रखकर, योग्य दिशा में प्रयाण किया.....(1)

वह लक्ष्य था मैं बनूँगा, महावैज्ञानिक संत या नेता.....
आपने पायी सब उपलब्धि, वर्तमान में यह सब देखा.....
आधुनिक इस भूमण्डल में, आपको सबसे आगे देखा.....(2)

साहित्य सृजन में आप अग्रणी, द्वय शताधिक ग्रंथ(है) रचे.....
धर्म-दर्शन-आगम-विज्ञान के, युगीन समन्वय से पिरोये.....
आधुनिक विज्ञान से परे, भारतीय/(जैन) तथ्य उसमें भरे.....(3)

देश-विदेश के विश्वविद्यालय, जिनमें साहित्य कक्ष आपके.....
जिस पर विद्यार्थी शोधार्थी, पीएच.डी., एम.फिल./(डी.लिट्.) करते.....
आपके शिष्य शोध निर्देशक, विश्व धर्म संसद में जाते.....(4)

प्राय: त्रय शत साधु-साध्वी, आपसे शिक्षा प्राप्त किये.....
दिक्-श्वेताम्बर हिन्दू आदि, समन्वय सह आगे बढ़े.....
देश-विदेश के कई संगठन, शिक्षा प्रेरणा पाने आते.....(5)

यह सब कार्य स्व-इच्छा से, शिष्य भक्तजन सतत करते.....
तन मन धन श्रम समय देकर, श्री गुरु संघ की सेवा करते.....
'सुविज्ञ' जन अनुमोदना पाकर, जन-गण-मन को पावन करते.....(6)

आयड़, दिनांक - 05.04.2014, रात्रि प्राय: 10.00

उपलब्धि-गीतांजली

"स्व-शुद्धात्म वन्दन"

चाल : शत-शत वन्दन.....

नित्य निरंजन सत्य सनातन, स्वात्म रूपाय नमो नम: ।
सच्चिदानन्दाय ज्ञानामृताय, सत्य शिव सुन्दराय नमो नम: ।।(1)

वीतरागाय साम्यरूपाय, अक्षय अनन्ताय नमो नम: ।
रत्नत्रयाय विभूरूपाय, अजर अमराय नमो नम: ।।(2)

अनन्त गुणाय अनन्त रूपाय, अव्याबाध रूपाय नमो नम: ।
अनन्त ज्ञानाय अनन्त दर्शनाय, अनन्त सुखाय तुभ्यं नम: ।।(3)

मोहारि नाशाय सम्यक्त्व प्राप्ताय, सर्व कर्म रहिताय मोक्ष रूपाय ।
विघ्नकर्म रहिताय अनन्तवीर्याय, अमूर्त रूपाय नमो नम: ।।(4)

संसार अतीताय लोकाग्रस्थिताय, स्वात्मस्थिताय सर्वगताय ।
शक्तिरूपेण अद्यऽविसंस्थिताय, भावी सिद्धाय नमो नम: ।।(5)

स्वरूपध्यानेन स्वरूपप्राप्ताय, तवगुणवन्दने तव प्राप्ताय ।
स्वात्मोपलब्धि रूपी मोक्ष प्राप्ताय, 'कनक' वन्दे शुद्धात्म रूपाय ।।(6)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 11.07.2014, मध्याह्न 2.42
(चातुर्मास स्थापना दिवसे)

अन्तरात्मा से प्रार्थना

चाल : 1. रवीन्द्र संगीत..... 2. हमको मन की शक्ति देना.....

अन्तर मम विकसित करो.....अन्तरतम् हे! ऽऽऽ

निर्मल करो, निर्भय करो.....निःशंक करो हे! ऽऽऽ
आत्म-विश्वास ज्ञान चारित्र.....सम्यक् करो हे! ऽऽऽ
क्रोध मान माया लोभ.....विनाश करो हे! ऽऽऽ
संयम धैर्य क्षमा नम्रता.....विकास करो हे! ऽऽऽ
उदार भाव व्यापक दृष्टि.....विस्तार करो हे! ऽऽऽ
स्वावलम्बी अनुशासी.....सहिष्णु बनूँ ऽऽऽ
सत्य-तथ्य-परमार्थ.....ज्ञेय को जानूँ ऽऽऽ
अप्रभावी आत्मनिष्ठ.....मुमुक्षु बनूँ ऽऽऽ
ज्ञानी-ध्यानी-स्वाध्यायी.....पावन बनूँ ऽऽऽ
कर्मक्षय करने में.....सक्षम (मैं) बनूँ ऽऽऽ
सच्चिदानन्दमय.....'कनक' मैं बनूँ ऽऽऽ

आध्यात्मिक गुरु की वन्दना

(लौकिक जनों के समान कार्य आध्यात्मिक संत क्यों नहीं करते ?)

चाल : ऊँचे-ऊँचे लक्ष्य धारे है.....

आध्यात्मिक लक्ष्य धारी है.....ये मुनिवर हमारे
गुरुवर हमारे ये है.....लोगों से न्यारे.....(ध्रुवपद).....

लौकिक जनों से परे ये सोचते, भौतिक परे आत्मा को चाहते.....
इसी हेतु ये परिग्रह त्यागते, असि मसि कृषि व्यापार न करते.....
ध्यान-अध्ययन में समय लगाते, ये गुरुवर हमारे.....(1)

आत्मा का परम विकास चाहते, संकीर्णता को अतः ये त्यागते.....
वैश्विक कुटुम्ब भाव ये धरते, परिवार बन्धन अतः ये त्यागते.....
स्व-पर उद्धारकारी है, ये यतिवर हमारे.....(2)

शान्ति समता व मौन/(एकान्त) ये चाहते, ख्याति पूजा लाभ अतः ये त्यागते.....
आत्मिक शोध-बोध ये चाहते, सनम्र सत्यग्राही मुमुक्षु/(जिज्ञासु) बनते.....
वाद-विवाद परे रहते है, वीतरागी हमारे.....(3)

परमात्म स्वरूप बनना ये चाहते, आकिञ्जन्य भिक्षु अतः ये बनते.....
परम निर्वाण धाम ये चाहते, भौतिक निर्माण अतः न करते.....
परम वैभव लक्ष्यधारी ये, ऋषिवर हमारे.....(4)

संकीर्ण स्वार्थी न आपको जानते, अज्ञानी मोही न आपको मानते.....

कूप मण्डुक यथा विश्व न जानता, जन्मान्ध यथा सूर्य न देखता.....
अमूर्तिक आकाश को यथा, अक्ष/(नयन) न देखता है.....(5)

सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि न चाहते, अनन्त आत्म वैभव(ये) चाहते.....
आत्मा में रमण करना(ये) चाहते, ईर्ष्या द्वेष घृणा तृष्णा(ये) त्यागते.....
'कनकनन्दी' के आराध्य तुम्हीं, लक्ष्य साधन प्राप्य.....(6)

तू ही तेरा सर्वस्व

चाल : 1. इक परदेसी (युमना किनारे).... 2. भातुकली (जोगीरासा).... 3 . सायोनारा....

(तू) जन्म-मरण से परे हो चैतन्य, क्यों जन्म-मरण से मोह करता....
जन्म-मरण तो देह जनित (है), विदेह शाश्वत-अमृत होता (है).....(1)....

देह तो माता-पिता जनित होता (है), माता-पिता भी देहधारी होते है....
(तू तो) विदेह चैतन्मय होता (है), (तेरा) कर्त्ता-धर्त्ता तू ही होता (है).....(2)....

(तुम) शाश्वत सम्पूर्ण/(परिपूर्ण) अविनाशी हो,
कालातीत स्वयम्भू स्वस्थित हो....
देश-काल-अतीत-अमूर्तिक हो, नाम-रूप-लिंग रहित हो....(3)....

मोही रागी द्वेषी से (तू) अज्ञात हो, इन्द्रिय यन्त्रों से अविज्ञात हो....
कानून राजनीति से (तुम) परे हो, भौतिक विज्ञान से (तुम) परे हो....(4)....

नाम-ग्राम-ठिकाना (तेरा तू) स्वयं ही हो, (तेरा) उद्धारक भी तुम स्वयं हो....
ज्ञान-ध्यान को (तुम ही) प्राप्त करो, 'कनकनन्दी' सर्व त्याग करो....(5)....

मेरी भावना-साधना-उपलब्धि

राग : 1. प्रयाण गीत (कदमताल)..... 2. बड़ा हुआ तो क्या हुआ..... (कबीर) 3. मधुबन के मन्दिरों में.....

क्षमा करता हूँ सर्व जीव को सर्व विश्व के,
मुझे भी क्षमा करो हो सर्व जीव सर्व विश्व के।
सर्व जीव प्रति मेरा मैत्री भाव सदा ही रहे,
गुणी जीव प्रति प्रमोद भाव सदा ही रहे।।(1)

दु:खी जीव प्रति करूणा भाव सदा ही रहे,
पापी जीव प्रति माध्यस्थ भाव सदा ही रहे।
सत्य-समता-शान्ति की प्राप्ति करूँ मैं सदा,
ज्ञान-ज्ञेय-ध्यान-ध्येय को पाऊँ मैं सदा।।(2)

सच्चिदानन्दमय परम सत्य को पाऊँ मैं सदा,
राग-द्वेष-मोह-काम विभावों को नाशूँ मैं सदा।
दूसरों के कुभावों को चाहूँ न कदा,
उनसे भी शिक्षा ले पावन बनूँ मैं सदा।।(3)

अन्धविश्वास-कुज्ञानाचार त्यागूँ मैं सदा,
आत्मविश्वास-सुज्ञानाचार पाऊँ मैं सदा।
दूसरों से भी अप्रभावी रहूँ मैं सदा सर्वदा,
आदर्श का करूँ अनुकरण मैं सदा सर्वदा।।(4)

गुण-दोष परिज्ञान करूँ मैं सदा सर्वदा,
गुण ग्रहण दोष दूर करूँ मैं सदा सर्वदा।
कार्य-कारण हेय उपादेय जानूँ मैं सदा,
सूक्ष्म-व्यापक अनुभव करूँ सदा सर्वदा।।(5)

विश्व कल्याण की भावना भाऊँ मैं सदा सर्वदा,
दूसरों का कर्त्ता-धर्त्ता न बनूँ मैं सदा।
आडम्बर पूर्ण बाह्य प्रभावना करूँ न कदा,
स्व-पर प्रकाशी सहज बनूँ मैं सदा सर्वदा।।(6)

स्वावलम्बी स्वानुशासी स्वतन्त्र बनूँ मैं सदा,
स्वयं को शुद्ध-बुद्ध सम्पूर्ण बनाऊँ (मैं) सदा।
अपेक्षा उपेक्षा प्रतीक्षा से रिक्त रहूँ (मैं) सदा,
'कनक' परम चैतन्यमय बनूँ मैं सदा सर्वदा।।(7)

सबसे परम है आध्यात्मिक

चाल : 1. देहाची तिजोरी.....(मराठी)..... 2. तुम दिल की धड़कन.....
3. सायोनारा..... 4. आत्म शक्ति से ओत-प्रोत.....

परम शिक्षा है परम विज्ञान है.....परम संविधान है आध्यात्मिक.....
परम न्याय है परम ज्ञान है.....परम सुनीति है आध्यात्मिक.....
परम लक्ष्य है परम साधन है.....परम साध्य है आध्यात्मिक.....

परम ध्यान है परम ध्येय है.....परम उपलब्धि है आध्यात्मिक.....
परम सत्य है परम साम्य है..... परम शान्ति है आध्यात्मिक.....
परम विचार है परम क्रान्ति है.....परम जागृति है आध्यात्मिक.....
परम विकास है परम सम्पन्न है.....परम उदारता है आध्यात्मिक.....
परम समता है परम संस्कृति है.....परम अहिंसा है आध्यात्मिक.....
परम तप है परम त्याग है.....परम वैभव है आध्यात्मिक.....
परम संयम है परम अनुशासन.....परम ब्रह्मचर्य आध्यात्मिक.....
परम कला/(दर्शन) है परम संगीत है.....परम गणित है आध्यात्मिक.....
परम मंगल है परम उत्तम है.....परम सर्वोदय है आध्यात्मिक.....
परम कर्म है परम धर्म है.....परम पुरुषार्थ है आध्यात्मिक.....
परम शरण परम रक्षक/(कल्याण) है.....परम पावन है आध्यात्मिक.....
परम गुरु है परम अनुभव है.....सत्य शिव सुन्दर है आध्यात्मिक.....
सच्चिदानन्दमय परम सिद्ध है.....'कनक' का शुद्ध रूप आध्यात्मिक.....

सबसे श्रेष्ठ–ज्येष्ठ ग्रहणीय

राग : 1. मेवाड़ संस्कृति सबसे प्यारी..... 2. चंदा मामा दूर के.....

समता शान्ति है सबसे प्यारी, श्रद्धा प्रज्ञा है सबसे न्यारी।
क्षमा शुचिता गुण निराली, सहज सरलता है भोली-भाली।।

अहिंसा है विश्व प्रेम वाली, दया-करूणा व सेवा वाली।
संवेदनशीलता की आप जननी, जीवों की रक्षा करने वाली।।

अपरिग्रह है शान्ति प्रदाता, शोषण-मिलावट से रक्षणकर्त्ता।
प्रदूषणों से त्राण दाता, सामाजिक-समता के आप हो दाता।।

ब्रहह्मचर्य है ब्रह्म प्रदाता, शील मर्यादा के आप हो दाता।
जनसंख्या नियंत्रण के आप जनक, बलात्कार एड्स के आप रक्षक।।

ध्यान अध्ययन है ज्ञान के दाता, शोध-बोध के आप प्रदाता।
स्व-पर-विश्व के ज्ञान दाता, आत्मा-परमात्मा विश्लेषण कर्त्ता।।

अनेकान्त है वैश्विक गुरु, श्रद्धा-प्रज्ञा भी तुम से शुरू।
सापेक्ष सिद्धान्त भी आप का नाम, आप बिना न होता कोई काम।।

विश्व में होता आत्मा ही श्रेष्ठ, द्रव्य, तत्त्व में आप वरिष्ट।
आप बिना सभी होता निःसार, ''कनक'' चाहे शुद्धात्मसार।।

सर्वोदयी चार भावनाएँ

चाल : 1. शत-शत वन्दन..... 2. सायोनारा..... 3. रघुपति राघव.....

सभी जीवों में मैत्री भावना, गुणी जीवों में हो प्रमोद।
दु:खी जीवों में हो करूणा भाव, विपरीत में (हो) माध्यस्थ भाव।।धृ.।।

ऐसा ही सर्वज्ञों ने भी कहा, आचरण भी उन्होंने किया।
स्व-पर विश्व के हित के लिए, आचरण योग्य सभी को कहा।।

अनेक रहस्य इनमें भरे है, इह परलोक हितकारी भी है।
अहिंसा उदारता गुण ग्राहकता, समता, शान्ति, सेवा सहित है।।

मन-वच-काय-कृत-कारित से, अनुमत रूप से सभी जीव में।
अदु:ख जननी वृत्ति मैत्री भावना, अहिंसा उदारता सभी जीव में।।

गुणी जीवों में प्रमोद भावना से, गुण ग्रहण नम्र भाव होता।
जिससे सुगुण भी विकास होते, आदर-पूजनीय स्व-पर होते।।

दु:खी जीव प्रति करूणा होने से, सेवा सहयोग सहज होते।
दयादत्ति व परोपकार से, दु:खी जीवों के दु:ख हरते।।

दुष्ट दुर्जन व पापी जो होते, उनसे माध्यस्थ भाव से।
रोग-द्वेष घृणा-मोह न होते, वैर विरोध क्लेश न होते।।

इसी से पाप न बन्ध होते, स्वयं न पापी इससे बनते।
पूर्व पाप भी विनष्ट होते, समय शान्ति न विनष्ट होते।।

इन सब भावों से विकास होता, तन-मन व आध्यात्मिक का।
इह पर व मोक्ष सुख मिलता, ''कनक'' चारों ही भावना भाता।।

निज में जिनेन्द्र प्रगट हेतु जिनेन्द्र दर्शनादि
(देवदर्शन-प्रार्थना-पूजादि के रहस्य-फल)

राग : नगरी-नगरी.....

बड़ा सुख पाया पाप नशाया, जब जिनवर गुणगान किया।
गुणगान से गुण चिन्तन हुआ, निज गुणों का भान हुआ।।

निज ज्ञान/(भान) करने से सम्यक्त्व हुआ, भेद ज्ञान जिससे हुआ।
भेद ज्ञान होने से निज गुण, आचरण प्रारम्भ हुआ।।

जिसे कहते है सम्यक्त्वानुचरण, अष्टगुण-अंग प्राप्त हुए।
मिथ्या-माया-निदान नशे, अष्टमद भी विनष्ट हुए।।

आत्म शक्ति भी प्रकट हुए, (स्व) द्रव्य गुण पर्याय ज्ञान हुए।
स्वयं को जाना जीव द्रव्यमय, (स्व) अनन्त गुण भी ज्ञात हुए।।

जिनवर सम ही मम द्रव्य है, शक्ति रूप में जिनेन्द्र गुण।
पर्याय दृष्टि में दोनों में अन्तर, बीज में वृक्ष समान स्थित।।

शक्ति की अभिव्यक्ति करने हेतु, पर्याय अन्तर दूर हेतु।
पुरुषार्थ करने का प्रारम्भ किया, कषाय पापों को त्याग किया।।

ज्ञान ध्यान तप त्याग के द्वारा, जिनेन्द्र स्वरूप प्राप्त करूँ।
अतः 'कनक' करे जिनेन्द्र दर्शन, निज में जिनेन्द्र को प्रगट करे।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, मध्याह्न 2.17

दुर्लभ से दुर्लभतर व दुर्लभतम उपलब्धियाँ

चाल : 1. छोटी-छोटी गैया..... 2. सायोनारा..... 3. तुम दिल की धड़कन में.....

सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि बुद्धि/(डिग्री), नहीं है सबसे दुर्लभतर।
कर्म जनित यह है फल, मिले है अभी तक अनन्त बार।।

आत्मविश्वास ज्ञान आचरण, बिना सत्तादि से होते हैं अनेक पाप।
फैशन-व्यसन-अन्याय-अत्याचार से, स्व-पर को भी मिले संताप।।
पापानुबन्धी पुण्य से जीवों को, जब मिलती हैं ये सत्तादि।
उससे उन्हें होते (है) अनेक मद, जिससे करते हैं फैशन आदि।।

जिससे होता है पाप बंध, जिससे जाते वे नरकादि।
संसार में विविध दुःख भोगते, नहीं प्राप्त करते आत्म सुखादि।।
आध्यात्म दृष्टि सम्पन्न जीव को, बंधता है पुण्यानुबंधी पुण्य।
उससे सत्तादि प्राप्त करके वे, न करते हैं मद उत्पन्न।।

सत्ता आदि को (सत्तादि) प्राप्त कर वे दान दया,
(सेवादि) करते नहीं बनते हैं वे आसक्त।
आत्म चिन्तन ज्ञान ध्यान वे, करते रहते वे सदा विरक्त।।
अनासक्त हो गृह त्यागकर करते है वे, आत्मा की साधना/(विशुद्धि)।
दुष्ट अष्ट कर्मों को नष्ट करके, पाते है (वे) परम-सिद्धि।।

परम-सिद्धि ही परम-उपलब्धि, जो है सच्चिदानन्द स्वरूप।
अजर-अमर यह शाश्वतिक पद, जो है सत्यशिवसुंदर स्वरूप।।
ऐसी परम-उपलब्धि निमित्त सुयोग्य, मानव तन मिलना अति दुर्लभ।
सुयोग्य क्षेत्र व काल भी मिलना, उत्तरोत्तर है अति दुर्लभ।।

सम्यक्त्व प्राप्ति हेतु सुभाव, मिलना दुर्लभ में भी है दुर्लभतम।
आत्मा की जिज्ञासा सुगुरु उपलब्धि, दुर्लभ में भी है दुर्लभतम।।
दुर्लभ है तत्त्वों को सुनना, उससे भी दुर्लभ है उसे जानना।
दुर्लभ है उसकी धारणा तथाहि, चिन्तन व सतत अभ्यास करना।।

दुर्लभ है वैराग्य (धारणा), संसार-शरीर व भोगों का त्यागना।
इन्द्रिय कषाय व मन को जीतना, ध्यान-अध्ययन व पवित्र भावना।।
दुर्लभ है ख्यातिपूजा (को) त्यजना, समता शान्तियुक्त हो एकाग्रमना।
शत्रु-मित्र-भेद-भाव न होना, हानि-लाभ व सुख-दुःख में समत्व होना।।

दुर्लभ है त्रिगुप्ति पालना, क्षपकश्रेणी आरोहणकर कर्मनाशना।
ऐसे उत्तरोत्तर दुर्लभों को पाकर, 'कनकनन्दी' निज स्वरूप पाना।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 22.08.2014, रात्रि 2.53

परम सर्वोच्च है : आध्यात्मिक

चाल : 1. आत्म शक्ति से ओतप्रोत..... 2. कसमे-वादे प्यार-वफा.....

आध्यात्मिक ही परम सत्य है, परम सिद्धान्त व परम विज्ञान।
परम संविधान नीति नियम व, कानून गणित मनोविज्ञान।।(1)
शुद्ध चैतन्य ही आध्यात्मिक है, जो राग द्वेष मोह रहित है।
ईर्ष्या तृष्णा घृणा भेद-भाव रिक्त, समता शान्ति सहित है।।(2)
ऊँच-नीच भेद-भाव नहीं जहाँ, नहीं है अपना-पराया कोई।
तन-मन इन्द्रिय सत्ता सम्पत्ति परे, नहीं है संकल्प-विकल्प कोई।।(3)
जाति पंथ मत क्षेत्र भाषा रिक्त, नहीं है आकर्षण-विकर्षण भी।
हिंसा झूठ चोरी कुशील रहित, नहीं परिग्रह युद्ध सन्धि भी।।(4)
केवल ज्ञान दर्शन सुख वीर्यमय (है), अव्याबाध अमूर्तिक चिन्मय है।
सच्चिदानन्द है सत्य शिव सुन्दर, शुद्ध-बुद्ध निरंजनमय है।।(5)
हर जीव के यह ही परम अवस्था, अन्य सब विकारमय है।
इसे प्राप्त करना ही परम पुरुषार्थ, 'कनक' स्व-शुद्ध स्वरूप है।।(6)

अर्थ–पुरुषार्थ (अर्थशास्त्र)
जीवन निर्वाह के उपाय (जीविका उपार्जन)

चाल : सुनो-सुनो ऐ दुनिया वालों.....

सुनो है! विश्व अर्थशास्त्र का, मैं कर रहा हूँ यहाँ वर्णन।
तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित व, आचार्यों द्वारा हुआ है वर्णन।।(1)

धर्म अर्थ काम मोक्ष पुरुषार्थ में, धर्म सहित 'अर्थ काम' पुरुषार्थ।
परम पुरुषार्थ मोक्ष को लक्ष्य कर, सेवन योग्य तीनों पुरुषार्थ।।(2)

गृहस्थ धार्मिक सेवन करते, धर्म अर्थ काम पुरुषार्थ तीनों।
गृह त्यागी साधु न सेवन करते, अर्थ काम रूपी पुरुषार्थ दोनों।।(3)

इसीलिए तो साधु श्रेष्ठ होते, गृहस्थ उनकी सेवा करते।
मोक्ष पुरुषार्थ को मुख्य करके, देते विश्व को धर्म देशना।।(4)

अर्थ पुरुषार्थे आदिनाथ ने कहा, युग के प्रारम्भ में षट् कर्त्तव्य।
असि[1] मसि[2] कृषि[3] वाणिज्य[4] सेवा[5], शिल्प[6]-कला रूपी जीविका अर्जन।।(5)

नीति[1] सह अहिंसा[2] सत्य[3] युत, अचौर्य[4] व ब्रह्मचर्य[5] सहित।
शोषण[6] मिलावट[7] परिग्रह[8] रिक्त, जमाखोर[9] शून्य हो अर्थार्जन।।(6)

चोरी[10] का उपाय न बताना, चोरी[11] को भी न अच्छा मानना।
चोरी[12] का माल न ग्रहण करना, चोर[13]-चोरी की न प्रशंसा करना।।(7)

हीनाधिक[14] माप-तोल न करना, न्यायोचित[15] मूल्य से व्यापार करना।
न्यायोचित[16] राज्य नियम पालना, सेल टैक्स[17] इनकम टैक्स[18] भी देना।।(8)

दासी[19]-दास क्रय-विक्रय न करना, पशु[20]-पक्षी आदि का व्यापार न करना।
हिंसोपकरण[21] का व्यापार न करना, मद्य[22]-मांस का वाणिज्य न करना।।(9)

प्राणी[23] पीड़ाकर व्यापार न करना, वन[24] जीविका अग्नि[25] जीविका न करना।
स्फोट[26] जीविका व भाटक[27] जीविका, त्यजनीय[28] सर्व यंत्र पीड़न जीविका।।(10)

प्राणियों[29] के छेदन-भेदन करना, हिंसक[30] प्राणियों का पालन करना।
जलाशय[31] शोषण व वनों के दहन[32], नहीं करणीय विष[33] लाक्षादि[34] कर्म।।(11)

दन्त[35] वाणिज्य व केश[36] वाणिज्य, नहीं करणीय है रस[37]/(मक्खन) वाणिज्य।
नहीं खोदना है गहरे[38] खानों को, नहीं बेचना चर्म[39] हड्डी[40] रेशम[41] को।।(12)

बहु आरम्भ जो परिग्रह करते, विविध हिंसा व प्रदूषण भी करते।
जिससे ग्लोबल वार्मिंग बढ़ता, अतिवृष्टि अनावृष्टि भूकम्प भी।।(13)

ग्लेशियर गलन व दुर्भिक्ष होता, कुपोषण रोग अकाल मरण भी होता।
धनी-गरीब शोषक-शोषित बढ़ते, सामाजिक विप्लव व युद्ध भी होते।।(14)

इसी से अतिघोर पाप वे कमाते, संक्लेशित होकर मरण वे करते।
भयंकर नरक में जन्म वे लेते, भूख प्यास रोग की पीड़ा भोगते।।(15)

न्याय से उपार्जित धन को पाकर, दान दया सेवा से उपयोग करते।
इह-परलोक में (वे) सुखी भी होते, क्रमशः स्वर्ग-मोक्ष भी पाते।।(16)

अर्थ अनर्थ का कारण भी होता, अर्थ से पुण्यार्जन भी होता।
धर्म अर्थ काम मोक्ष हो पुरुषार्थ, 'कनक' का लक्ष्य मोक्ष पुरुषार्थ।।(17)

उपलब्धियों का दुरुपयोग न करो!

चाल : छोटी-छोटी गैया.....

सत्ता-सम्पत्ति व शक्ति को पाकर, करता है मानव दुरुपयोग।
यदि वह करता है सदुपयोग भी, स्व-पर हित वह करता भी।।

रावण कंस हिटलर सम जब, करता सत्ता का दुरुपयोग।
स्व-पर का बहु अपकार करता, अधिक शक्ति से अधिक नाश।।

उपलब्धियों से बनता अहंकारी, जिसे कहते है अष्टमद।
द्रव्यमद्य नशा तो कुछ क्षण रहता, मद का नशा रहे दीर्घकाल।।

मद नशा से आक्रान्त हो मानव, नहीं जानता है हित व अहित।
अयोग्य कहता अयोग्य भी बोलता, तन-मन-आत्मा से होता बेसुध।।

इससे भी अधिक अहंकारी होता, करता महा अनर्थ भी काम।
आक्रमण युद्ध हत्या भी करता, इतिहास पुराण से भी यह प्रसिद्ध।।

अष्टमद सहित जो जीव होते, वे नहीं होते है सम्यग्दृष्टि।
ज्ञान चारित्र भी न होते सम्यक्, धार्मिक कार्य नहीं होते सम्यक्।।

उपलब्धियों का उपयोग करो हे! मानव, अशुभ से करो शुभ व शुद्ध।
जिससे तेरा सर्वोदय ही होगा, ''कनक'' अतएव रचा ये काव्य।।

पूर्ण विराम.....पूर्ण प्राप्ति
नेति-नेति.....अस्ति-अस्ति

चाल : 1. शत-शत वन्दन..... 2. छोटी-छोटी गैया....

इति अलं इति अलं इति अलं.....राग द्वेष मोह भाव/(काम) इति अलम्.....
(बस हुआ बस हुआ बस हुआ.....राग द्वेष मोह भाव/(काम) बस हुआ.....)

इति अलं इति अलं इति अलं.....ईर्ष्या तृष्णा घृणा भाव/(काम) इति अलम्.....
(बस हुआ बस हुआ बस हुआ.....ईर्ष्या तृष्णा घृणा भाव/(काम) बस हुआ.....)

इति अलं इति अलं इति अलं.....पर निन्दा अपमान इति अलम्.....
(बस हुआ बस हुआ बस हुआ.....पर निन्दा अपमान बस हुआ.....)

इति अलं इति अलं इति अलं.....ख्याति पूजा लाभ भाव/(काम) इति अलम्.....
(बस हुआ बस हुआ बस हुआ.....ख्याति पूजा लाभ भाव/(काम) बस हुआ.....)

प्राप्त हुए प्राप्त हुए प्राप्त हुए.....श्रद्धा प्रज्ञा आचरण प्राप्त हुए.....
(अभी मिले अभी मिले अभी मिले.....श्रद्धा प्रज्ञा आचरण अभी मिले.....)

प्राप्त हुए प्राप्त हुए प्राप्त हुए.....सत्य समता शान्ति प्राप्त हुए.....
(अभी मिले अभी मिले अभी मिले.....सत्य समता शान्ति अभी मिले.....)

प्राप्त हुए प्राप्त हुए प्राप्त हुए.....ज्ञान ध्यान तप त्याग प्राप्त हुए.....
(अभी मिले अभी मिले अभी मिले.....ज्ञान ध्यान तप त्याग अभी मिले.....)

प्राप्त हुए प्राप्त हुए प्राप्त हुए.....धैर्य क्षमा सहिष्णुता प्राप्त हुए.....
(अभी मिले अभी मिले अभी मिले.....धैर्य क्षमा सहिष्णुता अभी मिले.....)

प्राप्त हुए प्राप्त हुए प्राप्त हुए.....सत्य शिव सुन्दर भी प्राप्त हुए.....
(अभी मिले अभी मिले अभी मिले.....सत्य शिव सुन्दर भी अभी मिले.....)

प्राप्त हुए प्राप्त हुए प्राप्त हुए.....'कनक' शुद्ध रूप ही प्राप्त हुए.....
(अभी मिले अभी मिले अभी मिले.....'कनक' शुद्ध रूप ही अभी मिले.....)

सबसे श्रेष्ठ–ज्येष्ठ–क्लिष्ट
(आत्मविश्वास–आत्मज्ञान/(आत्मानुभव)–आत्मानुचरण)
(आध्यात्मिक जीवन प्रबन्धन के सूत्र)

चाल : शत-शत वन्दन.....

तीन लोक व तीन काल में, सबसे श्रेष्ठ/(ज्येष्ठ, क्लिष्ट) है सत्य दर्शन।
जिसे कहते है आत्मदर्शन या, आत्मप्रतीती या सम्यग्दर्शन।।

अनादि कालीन कर्म संस्कार से, जीवों में होता है मिथ्या दर्शन।
जिसे कहते है मोहभाव, मिथ्याश्रद्धान या अन्धश्रद्धान।।

वज्र से भी अधिक कठिन, मोहकर्म का है बन्धन।
जिससे जीवों के अनन्तगुण/(शक्ति), हो जाते हैं शक्ति क्षीण।।

जिससे जीव मोहकर्म पर, नहीं कर पाते हैं विजय।
जिससे कारण अनन्त भव तक, करते रहते (हैं) भव भ्रमण।।

सुद्रव्य-क्षेत्र-काल व भाव को, प्राप्त कर बनते हैं शक्ति सम्पन्न।
तब ही जीव मोहकर्म सह, अनन्तानुबन्धी को करते हैं क्षीण।।

इससे जीवों की आत्मशक्ति का, होता है प्रगटीकरण।
जिसे कहते है सत्यदर्शन, जिससे होता है सम्यग्ज्ञान/(आत्मज्ञान)।।

जिससे जीवों को होता है, आत्म-अनात्म/(सत्य-असत्य) का यथार्थ ज्ञान।
जिससे जीवों को होता है, हेय-उपादेय की सही पहचान।।

आत्म ग्रहण व अनात्म त्याग ही, यथार्थ से है आत्मानुचरण।
इसे ही कहते हैं हेय त्याग व, उपादेय का सही ग्रहण।।

इसे ही कहते है धर्माचरण या, सदाचरण या रत्नत्रय।
जिसमें होता है पंच पाप त्याग, दश धर्म धारण स्वाध्याय-ध्यान।।

इसी से होता है कर्मों का नाश, जिससे मिलता है परिनिर्वाण।
जिसे कहते हैं शुद्धात्मा लब्धि, सच्चिदानन्दमय परम धाम।।

इसे ही कहते हैं मोक्ष पुरुषार्थ, जो सबसे हैं कठिन महान्।
इसे प्राप्त हेतु ही 'कनकनन्दी', सतत करता है स्वाध्याय-ध्यान।।

महान् बनने के सूत्र

चाल : 1. आत्मशक्ति से ओतप्रोत..... 2. शत-शत वन्दन.....

दृढ़ता से जो आगे बढ़ते, सदा ही सत्य के पथ में।
वे ही महान् बनते हैं, संसार के मध्य में।।ध्रुव।।

आवे यदि विघ्न बाधा, हुए भी यदि है अपमान।
तथापि जो आगे बढ़ते, बनते वे ही महान्।।
तीर्थंकर बुद्ध ऋषि मुनि व, पाण्डव तथा श्रीराम 2
दार्शनिक तथा वैज्ञानिक, अब्राहिम लिंकन 2।।(1)

महात्मा गाँधी सुभाषचन्द्र बोस तथा मदर टेरेसा।
नाइटेंगल आदि से भी मिलती है यह शिक्षा।।

क्रोध मान माया लोभ काम से, भी जो न होते हैं विचलित 2
वे ही दृढ़ता से सत पथ चलते, जो न होते हैं मोहासक्त 2।।(2)

उपेक्षा-अपेक्षा-प्रतीक्षा रहित जो, न होते हैं अप्रभावी।
वे ही महान् बनते हैं जो, है निर्भय व साम्यभावी।।
आत्मविश्वास सह (जो) विवेकवान, तथाहि जो होते (हैं) सदाचारी 2
पक्षपात से भी जो रहित होते, बनते महान् वे धैर्यधारी 2।।

सतत जो करते पुरुषार्थ, विफलताओं से भी जो शिक्षा लेते।
वे ही बनते हैं महान् पुरुष, ''कनक'' उनसे भी शिक्षा लेते।।

पुण्यात्मा एवं पापात्मा
(पावन परिणाम (भाव) वाले पुण्यात्मा तथा पतित परिणाम (भाव) वाले पापात्मा)

राग : यमुना किनारे.....

सत्ता सम्पत्ति वाले (ही) न होते पुण्यात्मा, इससे रहित ही न होते पापात्मा।
शान्त व सम्यग्दृष्टि होते हैं पुण्यात्मा, इससे जो विपरीत होते हैं पापात्मा।।(1)

क्रोध मान माया लोभ व मोह से, आवेशित जीव होते हैं पापात्मा।
भले वे देव या राजा भी क्यों न होते, तीव्र कषाय युक्त होते (हैं) पापात्मा।।(2)

पापानुबन्धी पुण्य से हो देव या राजा, कषाय तीव्र होने से न होते पुण्यात्मा।
ऐसे जीव होते हैं भोगों में आसक्त, मनुष्य यदि होते हैं करते फैशन-व्यसन।।(3)

अन्याय अत्याचार व दुराचार करते, युद्ध आक्रमण व विध्वंस करते।
शोषण मिलावट व जमाखोरी करते, हिंसा बलात्कार व भ्रष्टाचार भी करते।।(4)

इससे विपरीत जो पुण्यशाली होते, विनम्र शान्त व परोपकारी होते।
दान दया सेवा व गुणग्राही होते, देवशास्त्र गुरुओं के उपासक होते।।(5)

सम्यग्दृष्टि देव व तिर्यंच मानव, नारकी भी होते हैं पुण्यात्मा जीव।
तीर्थंकर प्रकृति युक्त कोई होता नारकी, क्षायिक सम्यदृष्टि भी होते है नारकी।।(6)

तिर्यंचों में भी होता है सम्यक्त्व, क्षायिक सम्यक्त्वी भी होते भोगभूमि तिर्यंच।
देशसंयमी रूपी होते है श्रावक, देवों से अतएव होते हैं वे श्रेष्ठ।।(7)

भद्रपरिणामी जो मिथ्यादृष्टि भी होते, आहार दानादि से वे भोगभूमिज बनते।

वहाँ से स्वर्ग जाते पुनः देव भी बनते, वहाँ से च्युत होकर श्रेष्ठ मानव बनते।।(8)

पापानुबन्धी पुण्यात्मा जो जीव होते, कषाय तीव्रता से वे नरक जाते।
कुदृष्टि देव जो संक्लेश से मरते, एकेन्द्रिय में भी वे उत्पन्न होते।।(9)

अतः जो धनी-मानी कषायी होते, पुण्यात्मा जो माने उन्हें वे गलत होते।
सम्यक्त्वी मानव या पशु भी होते, पापात्मा माने जो उन्हें वे गलत होते।।(10)

ये सब वर्णन मैंने सिद्धान्त ग्रन्थों में पाया, मेरे साहित्य में मैंने वर्णन किया।
पुण्यात्मा बनो व मोक्ष को पाओ, 'कनक' का ऐसा आशीष पाओ।।(11)

समतासुखामृत पायो / (पीयो)

चाल : पायोजी मैंने राम रतन.....

पायोजी मैंने समतासुखामृत पायो।
पीयोजी मैंने समतासुखामृत पीयो।।
जिस में समाहित है परम साधना, परम साध्य मैं पायो।।ध्रुव पद।।

समता में नहीं है राग द्वेष मोह, असत्य दुराग्रह कोय।
आकर्षण-विकर्षण द्वन्द्व न होते, विकार (भी) न होय कोय।।पायोजी।।(1)

उपेक्षा-अपेक्षा-प्रतीक्षा न होती, न होती चिन्ता भी कोय।
अहंकार ममकार-दीनता नशाये, न रहे कल्मष कोय।।पायोजी।।(2)

अपना-पराया भेदभाव मिटे (है), शुत्र-मित्र न रहे कोय।
हानि-लाभ का विकल्प न होय, संकल्प सभी नश जाये।।पायोजी।।(3)

स्व-पर-अनादर-अपमान विरहित, वीतराग-विज्ञान होय।
ख्याति-पूजा-लाभ-आसक्ति रहित, यथार्थ मुमुक्षु ये होय।।पायोजी।।(4)

स्वयं में पूर्णता बाह्य से शून्यता, चिदानन्द रूप होय।
द्रव्य भाव व नोकर्म रहित, निजशुद्धात्मा रूप होय।।पायोजी।।(5)

आत्मविश्वास ज्ञान चारित्रमय यह, व्रत समिति गुप्ति होय।
उत्तम क्षमादि दश धर्म समाहित, धैर्य सहिष्णु भी समाय।।पायोजी।।(6)

यही मोक्षमार्ग तन-मन स्वास्थ्य हेतु, आत्मिक स्वस्थ्यता होय।
तीर्थंकर उपदिष्ट रहस्य यह है, 'कनक' का सर्वस्व होय।।पायोजी।।(7)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 13.08.2014, प्रातः 9.37

समतामहाशक्ति पायो

पायोजी! मैंने समतामहाशक्ति पायो।
जिस शक्ति से कर्मशक्ति नशे, जो शक्ति अनन्त दु:ख दिये।।ध्रुव पद।।

समता से नशे राग द्वेष मोह, जो होते कर्म जनक।
रागादि नाश से कर्म भी नशते, जो कर्म दु:खजनक।।

समता शक्ति से मोह नाश होता, मिलती सम्यक्त्व-शक्ति।
सम्यक्त्व लाभ से सुज्ञान मिले, जिससे बढ़े आत्मशक्ति।।

सुज्ञान से चरित्रशक्ति मिले, जिससे बने रत्नत्रय।
रत्नत्रय से कषाय नशते, आत्मविशुद्धि अत: होय।।

आत्मविशुद्धि से क्रोधनाश होता, जिससे क्षमा जन्म लहे।
आत्मविशुद्धि से माननाश होता, जिससे आर्जव जन्म लहे।।

तथाहि मार्दव शौच सत्य जन्मे, संयम तप त्याग जन्म लहे।
आकिंचन्य व ब्रह्मचर्य जन्मे, जिससे कर्म नाश होय।।

ऐसी महाशक्ति समताशक्ति से, चिन्ता द्वन्द्व नाश होय।
शत्रु-मित्र भेद-भाव नाश होते, संकल्प-विकल्प नाश होय।।

ख्याति पूजा लाभ आसक्ति नशते, नशते संक्लेश भाव।
अशान्ति चंचलता नाश(भी) होती, 'कनक' पाये आत्मभाव।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 13.08.2014, रात्रि 11.35

अनुभवज्ञानामृत पायो

पायो/(पीयो) जी! मैंने अनुभवज्ञानामृत पायो/(पीयो)।
जिसमें समाहित (है) आत्मविश्वासज्ञान, चारित्ररूपी रत्नत्रय।।ध्रुवपद।।

द्रव्यश्रुतयुक्त भावश्रुतमय जो (है), अनुभवमय होय।
इन्द्रिय मन परे आत्मशक्ति युक्त, विशेष क्षयोपशम होय।।(1)

भावश्रुत है परोक्ष केवलज्ञान, प्रत्यक्ष का अनन्तवाँ भाग होय।
भावश्रुत से परोक्ष/(आंशिक) ज्ञान होता, मूर्तिक-अमूर्तिक (द्रव्य) जो होय।।(2)

इसी से ही आत्मज्ञान होता परोक्ष से, मति आदि (अवधि मन:पर्यय) न होय।

भावश्रुतज्ञानी संयमी/(अभेदरत्नत्रयधारी) आत्मानुभवी,
श्रुतकेवली सम जो होय।।(3)

मतिज्ञान जब अनुभव (ज्ञान) होता, वही भाव श्रुतज्ञान होय।
अनुभव बिन द्रव्य श्रुतज्ञान केवल, मतिज्ञान ही होय।।(4)

अल्पज्ञ भी अनुभवी ज्ञानी, द्वादशांग ज्ञानी सम होय।
द्वादशांग का सार आत्मज्ञान, अनुभवी ज्ञानी को जो होय।।(5)

अनुभवज्ञान में वैराग्य समता, आत्मविशुद्धि प्रज्ञा समाय।
हिताहित विवेक धैर्य सहिष्णुता, कार्य-कारण समन्वय समाय।।(6)

आंशिक त्रिकाल का ज्ञान भी होता है, दूरदृष्टि समाहित होय।
जोड़रूप ज्ञान होने के कारण, अल्पज्ञान भी विशाल होय।।(7)

अनुभव हेतु ध्यान-अध्ययन-मनन, चिन्तन-अनुप्रेक्षा योग्य।
इसके माध्यम से स्वयं पर प्रयोग से, अनुभव होता है तीव्र।।(8)

अनुभव एक जन्म देता अनेक, अनुभवपूर्ण ज्ञान को।
अनुभव शून्य विशाल ज्ञान भी, हितकर नहीं है जो जीवों को।।(9)

अनुभव शून्य ज्ञान से होते है, अहंकार व ममकार।
स्वार्थ संकीर्णता तुच्छता दिखावा, उद्दण्डता व आडम्बर।।(10)

अनुभव है ज्ञान का सार, आचरण का दिव्य स्रोत।
धैर्य सहिष्णुता वैराग्य समता का, 'कनक' का अन्तः स्रोत।।(11)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 14.08.2014, मध्याह्न 2.49

मेरी भावना एवं लक्ष्य के अनुसार पूर्ण साधना न होने के कारण

चाल : 1. छोटी-छोटी गैया..... 2. आत्मशक्ति से.....

मेरी भावना तो सतत होती है, समता शान्ति को पाने की।
मेरा परम तो लक्ष्य होता है, परम सत्य/(मोक्ष) को पाने का।।1।।

किन्तु द्रव्य क्षेत्र काल व भाव, नहीं मिले है अभी सर्व-उत्तम।
इसलिए मेरी भावना व लक्ष्य, पाने की साधना न होती उत्तम।।2।।

नहीं है मेरा उत्तम संहनन, वज्रवृषभनाराच के संहनन।

वज्र के समान अस्थि वेष्ठनादि, यथा हनुमान का संहनन।।3।।

पूर्ण स्वस्थ भी नहीं है शरीर, पित्त प्रकृति व शरीर गर्म।
दाह उत्पन्न होता है शरीर में, उल्टी चक्कर पसीना रोग विभिन्न।।4।।

उपवास आदि बाह्य तप न होते, गर्मी में तकलीफ होती विशेष।
गरम भोजन-पानी-वातावरण व, विहार निवास से होते रोग विशेष।।5।।

क्षेत्र भी अभी प्रदूषण सहित, मृदा जलवायु प्रदूषण युक्त।
मच्छर गन्दगी बदबू सहित, धूल धुआँ विषाक्त गैस सहित।।6।।

इसी से मेरा स्वास्थ्य सही न रहता, उत्तम न होता ध्यान-अध्ययन।
आहार विहार निहार विश्राम, नहीं होता उत्तम व्यायाम-प्राणायाम।।7।।

काल भी अति विपरीत काल, हुण्डाअवसर्पिणी का पंचमकाल।
जिस काल में न होते केवली गणधर, ऋद्धिधारी मुनि श्रेष्ठ नारी-नर।।8।।

साधु की सेवा वैयावृत्ति व्यवस्था, सदा न होती है अति उत्तम।
आदर सत्कार भक्ति-शक्ति युक्त, नहीं करते सभी गृहस्थजन।।9।।

अनेक जन भी निन्दा विरोध करते, विघ्न उपन्न भी करते नाना।
रूढ़ि संकीर्ण स्वार्थ कषाय सहित, गुण-गुणी से भी करते द्वेष।।10।।

निस्पृह सन्त व समता धारी की, अंतरंग साधना कौन जानते/(मानते) लोग।
आडम्बर ढोंग व भीड़ रुपया को, महत्व देते हैं अधिक लोग।।11।।

आगम आध्यात्म समता शान्ति को, नहीं जानते व न मानते लोग।
संकीर्ण कट्टर व पंथ परम्परा (को), अधिक महत्व देते अधिक लोग।।12।।

आहार जल भी न उत्तम मिलते, नहीं मिलती उत्तम औषधि।
प्राकृतिक ताजा पौष्टिक रसयुक्त, औषधीय गुणयुक्त नहीं सामग्री।।13।।

इन सब कारणों से न होता शुक्लध्यान, नहीं होता है श्रेणी आरोहण।
केवलज्ञान भी न प्राप्त होता, नहीं मिलता है अभी परिनिर्वाण।।14।।

तथापि मेरा यह ही लक्ष्य है, अन्य सभी है मेरा साधन मात्र।
स्वात्मोपलब्धि ही मेरा परम लक्ष्य, 'कनक' की साधना है आत्मप्रत्यक्ष।।15।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 26.07.2014, मध्याह्न 2.30

अभी मैं स्वयं को मानूँगा व मनाऊँगा

चाल : छोटी-छोटी गैया.....

दूसरों को माना मनाया अन्य को, परन्तु स्वयं से मैंने यह न किया।
इसलिये रहा मैं बहिरात्मा, जिससे संसार में भ्रमण किया।।

अन्य के कारण भी (मैंने) राग-द्वेषादि किया, तदनुकूल भी मैंने कार्य किया।
जिससे कर्मबन्ध हुआ अनन्त, अनादि से अनन्त दुःखों को सहा।।

शरीर इन्द्रिय मन घर परिवार, सत्ता-सम्पत्ति शत्रु-मित्र को।
अपना मानकर राग-द्वेष किया, जिससे आत्म-पतन मेरा ही किया।।

धोबी गधा नाई नट-नटी सम, नहीं करूँगा मैं कभी/(अभी) व्यवहार।
स्वयं/(आत्मा) के द्वारा स्वयं/(आत्मा) के हित हेतु, नव कोटि से मैं करूँ व्यवहार।।

इन सबका कर रहा हूँ बहिष्कार, अभी मेरा काम है आत्म परिष्कार।
राग द्वेष मोह ममत्व त्यागकर, ज्ञान-ध्यान-तप में रहूँ (मैं) निरन्तर।।

महापुरुष न जन्मा है अभी तक, और न जन्मेगा (है) इस पृथ्वी में।
जिसने सभी को किया है संतुष्ट, भले वे होवे श्रेष्ठ व ज्येष्ठ।।

तीर्थंकर बुद्ध ईसा व सुकरात, मीराबाई व अब्राहिम लिंकन।
साधु-साध्वी या समाज सुधारक, सभी के होते हैं वैरी-विरोधक।।

कौन क्या करे व क्या कहता है ? रहूँगा अप्रभावित इसी से सदा।
शिक्षा लेने योग्य शिक्षा को लेकर, सत्य व समता से बढ़ूँगा सदा।।

इन सभी से मैं शिक्षा लेकर, आत्म विशुद्धि में हुआ हूँ तत्पर।
सत्य समता व शान्ति के मार्ग पर, ''कनक'' गतिशील होता अविरल।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 09.08.2014, रात्रि 1.15

अन्य लोग मुझे क्यों नहीं समझ पाते
(विद्यार्थी तथा विकास चाहने वाले के लिए त्यजनीय दुर्गुण)

चाल : 1. छोटी-छोटी गैया..... 2. सायोनारा.....

राग द्वेष मोह (व) स्वार्थ काम से, ईर्ष्या घृणा तृष्णा (व) अनुदार से।
अनुभवहीन (व) अज्ञान भाव से, समझ न पाते मुझे क्षुद्र भाव से।।1।।

मेरे भाव इनसे भिन्न होते, उदार व्यापक/(अनुभव) सहित होते।

स्व-पर उपकार सह ही होते, विश्व कल्याण युक्त पावन होते।।2।।

आगम का सूक्ष्म ज्ञान न होता, अनेकान्त का भान न होता।
अलौकिक गणित से शून्य होते, कर्म सिद्धान्त को (भी) नहीं जानते।।3।।

गुणस्थान मार्गणा व वस्तु-व्यवस्था, संस्कृत प्राकृत व श्रेष्ठ-भाषा।
विज्ञान व आयुर्वेद भी नहीं जानते, ब्रह्माण्डीय ज्ञान से रहित होते।।4।।

नहीं जानते है मनोविज्ञान, सामुद्रिक शास्त्ररूपी अंग-विज्ञान।
अष्टांग-निमित्त को नहीं जानते, न्याय राजनीति को नहीं जानते।।5।।

कार्य-कारण को (भी) नहीं जानते, निमित्त-उपादान को नहीं जानते।
हेय-उपादेय को नहीं जानते, करणीय-अकरणीय नहीं जानते।।6।।

स्मरण-ज्ञान भी सही न होता, जोड़रूपी ज्ञान भी श्रेष्ठ न होता।
गुण-ग्रहण का भाव न होता, विनम्र सत्यग्राही भाव न होता।।7।।

जिज्ञासा-प्रवृत्ति व रूचि/(श्रद्धा) न होती, एकाग्रता की न प्रवृत्ति होती।
क्रमबद्धता की न पद्धति होती, उत्तमतम न पात्रता होती।।8।।

प्रमाद आलस्य सहित होते, पूर्व-नियोजना से रहित होते।
सभी चलता है का भाव रखते, देखा जायेगा का भाव पालते।।9।।

कर्त्तव्य-निष्ठा से रहित होते, अनधिकार पूर्ण काम करते।
मनमानी पूर्ण काम वे करते, कट्टर हठग्राही संकीर्ण होते।।10।।

दिखावा आडम्बर सहित होते, सरल-सहज-मृदु न होते।
आग लगने पर कुआँ खोदते, हानि होने पर ही कभी मानते।।11।।

इससे विपरीत है मेरी प्रवृत्ति, अनुभवपूर्ण उदार वृत्ति।
इससे अन्य मुझे न समझ पाते, देरी से कोई-कोई समझ पाते।।12।।

सनम्र सत्यग्राही उदार जन, सरल-सहज व निस्वार्थी जन।
श्रद्धा प्रधानी या प्रज्ञा प्रधानी, समझ पाते मुझे जो होते विज्ञानी।।13।।

जो मुझे समझते (वे) बनते शिष्य, समर्पण से लाभ लेते विशेष।
स्वेच्छा से करते (वे) विशेष सेवा, तन-मन-धन से करते सेवा।।14।।

अज्ञजन से मैं न करता द्वेष, समता-शान्ति से रहूँ विशेष।
स्वपर-विश्व का हित मैं चाहूँ, 'कनक' सदा मैं शुचिता चाहूँ।।15।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 24.07.2014, प्रातः 5.33

मेरी भय एवं निर्भय की साधना

चाल : 1. जननी जन्म भूमि स्वर्ग से महान्.....(बंगला) 2. रघुपति राघव.....
3. इक परदेसी मेरा..... 4. छोटी-छोटी गैया.....

सतत हो भय मुझे तुच्छ/(मिथ्या, खोटे) भाव से।
निर्भय बनूँ मैं सदा उच्च/(उदार, सत्य, अच्छे) भाव से।।

कोई न माने बोले कुछ नहीं भय हो।
सत्य समता से (में) सदा निर्भय हो।।
पर निन्दा पर पीड़ा से मुझे भय हो।
भय न लगे कभी स्व-पर हित से/(में)।।

भय लगे मुझे सदा तुच्छा स्वार्थ से।
निर्भय बनूँ सदा आत्म स्वार्थ/(आत्मसिद्धि) से/(में)।।
ईर्ष्या द्वेष घृणा से मुझे भय हो।
क्षमा (व) मृदुता से/(में) नहीं डर हो।।

आडम्बर ढोंग पाखण्ड से मुझे डर हो।
सादा सीधा भोला-भाव से नहीं भय हो।।
भेड़-भेड़िया चाल से मुझे भय हो।
सनम्र सत्यग्राही से नहीं भय हो।।

प्रकाश न डरे कभी अन्धकार से।
आध्यात्मिक ज्योति से भय नहीं हो।।
सत्य मानूँ भले मैं बोलूँ न बोलूँ।
वाद-विवाद व लिखूँ न लिखूँ।।

सत्य-समता-शान्ति सर्वोपरि हो।
संकीर्ण कट्टर रूढ़ि भाव नहीं हो।।
निर्भय निराकुल निर्द्वन्द्व मैं रहूँ।
''कनकनन्दी'' सदा आत्मा में रहूँ/(रमूँ)।।

बुद्धिमान व्यक्ति समय पर सीखते हैं, मूर्ख उस समय सीखते हैं जब ऐसा करना बहुत जरूरी हो जाता है!

-आर्थर बेले

वैज्ञानिक ज्ञान से मुझे प्राप्त लाभ / (शिक्षाएँ)
(वैज्ञानिक साहित्य, विदेशी वैज्ञानिक, T.V. चैनलों से मुझे प्राप्त लाभ)

चाल : 1. क्या मिलिये ऐसे लोगों से..... 2. छोटी-छोटी गैया.....

विज्ञान से मिल रही (है) मुझे अनेक शिक्षा, शोध-बोध-प्रयोग की विविध शिक्षा।
सत्यग्राही विनम्र व दृढ़ साहसी, धैर्यशील पुरुषार्थी व आत्मविश्वासी।।(1)

उदार प्रगतिशील व वैश्विक दृष्टि, विश्लेषण सहित समन्वय की दृष्टि।
संकीर्ण रूढ़ि परम्परा परे प्रवृत्ति, सत्य-तथ्य जानने की जिज्ञासु वृत्ति।।(2)

एकला चलने की दृढ़ भावना शक्ति, प्रसिद्धि व भीड़ से परे साधना-वृत्ति।
शक्ति-संरक्षण व नियोजन की वृत्ति, तन-मन-भावना की प्रबल शक्ति।।(3)

सापेक्ष सिद्धान्त व अणु सिद्धान्त, जिनोम सिद्धान्त तथा मनोविज्ञान।
पर्यावरण रक्षा व अन्तरिक्ष ज्ञान से, जैन धर्म का मुझे मिले प्रयोगज्ञान।।(4)

अहिंसा शाकाहार व पर्यावरण सुरक्षा, परस्पर उपग्रहों जीवों/(द्रव्यों) की शिक्षा।
भौतिक शक्ति का होता प्रायोगिक विज्ञान, जिससे ज्ञात होता अन्य द्रव्य विज्ञान।।(5)

इसी से होता है कर्मशक्ति का ज्ञान, जिससे ज्ञात होता जीव विज्ञान।
क्रम व्यवस्थित शोध-पूर्ण होता ज्ञान, आगम ज्ञान का होता (है) समीक्षा ज्ञान।।(6)

जैन धर्म की श्रेष्ठता का होता सुज्ञान, भारतीय संस्कृति का होता विशद ज्ञान।
जिससे गौरव बोध विशेष होता, आत्मविश्वास मेरा दृढ़तर (भी) होता।।(7)

दीन-हीन-अहंकार भाव न होते, आधुनिक दिखावा व ढोंग न होते।
भारतीयों के दोषों का होता सुज्ञान, दोष परिहार हेतु होता भी है ज्ञान।।(8)

शोध ग्रन्थ लिख रहा हूँ अनेक विध, जिनका सदुपयोग हो रहा है बहुविध।
अध्ययन-अध्यापन (व) हो रहा है शोध/(Ph.D.),
विभिन्न देशों में हो रहा प्रचार विविध।।(9)

पूर्व आचार्य श्री करते थे ज्ञान, स्व-पर मत विभावना पटु मतिभ्यः।
स्व-पर मत व तात्कालीन ज्ञान युत, होते थे अकलंक वीरसेन समन्तभद्रः।।(10)

भारत में विज्ञान का ज्ञान नहीं विशेष, जिससे समस्याएँ होती यहाँ विशेष।
मिलावट भ्रष्टाचार व गन्दगी रोग, फैशन-व्यसन-ढोंग-दिखावा के रोग।।(11)

संकीर्ण रूढ़िवादिता भेद-भाव-विद्वेष, ईर्ष्या द्वेष घृणा बलात्कार संक्लेश।

पाश्चात्य अन्धानुकरण स्व-संस्कृति त्याग,
वेशभूषा भाषा शिक्षा भोगोपभोग।।(12)

संस्कृति हमारी पाश्चात्य अपना रहे, वैज्ञानिक शोध से वे स्वीकार रहे।
भारतीयों में नहीं है स्व-संस्कृति ज्ञान, जिससे समझ न पाते वैज्ञानिक ज्ञान।।(13)

रटन्त स्वार्थपूर्ण तो पढ़ाई करते, अयोग्य अश्लील हिंसक टी.वी. देखते।
रूढ़िवादी स्वार्थनिष्ठ धर्म पालते, अस्त-व्यस्त-संत्रस्त जीवन जीते।।(14)

भो! भारतीय तुम अभी तो जागो, राग द्वेष मोह रूढ़ि स्वार्थ को त्यागो।
स्व-पर-उपकारी व पावन बनो, 'कनक' का आशीष आदर्श बनो।।(15)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 09.08.2014, मध्याह्न 12.10

सत्य की आत्मकथा
(वैश्विक परम सत्य का स्वरूप)

सत्य मेरा नाम है, अस्तित्व मेरा काम है।
द्रव्य तत्त्व व पदार्थ रूप में, शाश्वत मेरा काम है।।ध्रुव पद।।

मेरा अस्तित्व विश्व भर में, लोकालोक में व्याप्त हूँ।
जीव पुद्गल व धर्म-अधर्म, आकाश काल (स्व) रूप हूँ।।
गुण पर्याय मेरा ही रूप, उत्पाद व्यय ध्रौव्य हूँ।
अस्तित्व वस्तुत्व प्रमेयत्व, अगुरु लघु स्वरूप हूँ।।1।।

धर्म-अधर्म व आकाश काल, शाश्वत मेरा है शुद्ध रूप।
जीव पुद्गल ही अशुद्ध होते, होते भी दोनों के शुद्ध रूप।।
राग द्वेष मोह काम क्रोधादि से, आवेशित जो होते है जीव।
कर्म पुद्गलों से आबद्ध होकर, अशुद्ध होते है वे सब जीव।।2।।

राग द्वेष मोह काम क्रोधादि से, विमुक्त होते है जो जीव।
कर्म पुद्गलों से विमुक्त होकर, बनते सच्चिदानन्द वे जीव।।
एकाधिक अणु बन्ध होकर, बनते अशुद्ध पुद्गल द्रव्य।
स्कन्ध से भेद होकर अणु, बनता है शुद्ध पुद्गल द्रव्य।।3।।

मेरा स्वरूप जीव द्रव्य तो, होता है चेतन्यमय (स्व) रूप।
अनन्ता अनन्त जीव होते हैं, शुद्ध व अशुद्धमय स्वरूप।।
पुद्गल रूप में भी अनन्तानन्त, शुद्ध व अशुद्ध स्वरूप में हूँ।
अणु से लेकर सूर्य चन्द्र ग्रह, निहारिका ब्रह्माण्ड तक में हूँ।।4।।

जल वायु मृदा सोना चाँदी हीरा, धातु पाषाण स्वरूप में हूँ।
टी.वी. कम्प्यूटर मोबाईल गाड़ी, घर व वस्त्र आदि में हूँ।।
रागी द्वेषी मोही कामी क्रोधी जीव, मुझे स्वरूप मानता है।
मेरे निमित्त से नाना पाप करे, अन्याय-अत्याचार करता है।।5।।

मेरे ये दो स्वरूप ही होते हैं, ब्रह्माण्ड में दो प्रमुख तत्त्व हैं।
आस्रव बन्ध संवर निर्जरा व, पुण्य-पाप मोक्ष रूप भी है।।
जीव पुद्गल जब गमन करते, धर्म द्रव्य निमित्त बनता है।
जीव पुद्गल जब स्थिर होते, अधर्म द्रव्य निमित्त बनता है।।6।।

आकाश द्रव्य अवकाश देता है, स्वको तथा अन्य द्रव्यों को भी।
काल द्रव्य परिणमन में निमित्त होता, स्व-पर द्रव्यों के हेतु भी।।
मेरा ही रूप है शुद्ध-अशुद्ध व, चेतन-अचेतन रूप भी है।
मूर्तिक-अमूर्तिक व सूक्ष्म-व्यापक, आत्मा-परमात्मा स्वरूप भी है।।7।।

मैं सत्य परमेश्वरमय ही हूँ, सत्य शिव सुंदर भी मैं ही हूँ।
सच्चिदानन्द व स्वयंभू मैं हूँ, सर्वशक्तिमान वैश्विक हूँ।।
मेरा ही विकृत होता है अशुद्ध, असत्य सर्वथा होता न सिद्ध।
शुद्ध-बुद्ध आनन्द उत्कृष्ट रूप, 'कनक' का शुद्धात्मा रूप।।8।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 25.07.2014, रात्रि 12.21

भाग्य एवं पुरुषार्थ

राग : 1. छोटी-छोटी गैया..... 2. रघुपति राघव.....

भाग्य से प्रभावित पुरुषार्थ होता, पुरुषार्थ से ही भाग्य बनता।
परस्पर दोनों ही प्रभावित होते, जन्य-जनक भाव से होते।।(1)

भाग्य विधाता कर्म व दैव, विधि सृष्टा विधाता पुराकृत।
ईश्वर प्रारब्ध इत्यादि नामधेय, कर्म प्रकृति नाम से प्रसिद्ध दैव।।(2)

अशुभ-शुभ व शुद्ध पुरुषार्थ, असंख्यात लोक प्रमाण (है) पुरुषार्थ।
मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय से, होता है अशुभमय पुरुषार्थ।।(3)

इसी से भिन्न सम्यकत्व व्रतों से, शील सदाचार दया सेवा से।
सरल सहज नम्रता दान से, शुभ पुरुषार्थ ध्यान अध्ययन से।।(4)

शुद्ध पुरुषार्थ होता (है) निर्मल भाव से, समतापूर्ण स्थिर शुक्ल ध्यान से।
परम पुरुषार्थ है यह पुरुषार्थ, मोक्ष प्राप्ति हेतु साक्षात् पुरुषार्थ।।(5)

अशुभ पुरुषार्थ होता अनादि से, मिथ्यात्व प्रमाद अविरति भाव से।
क्रोध-मान-माया-लोभ-काम से, पंच पाप व सप्त व्यसनों से।।(6)

इसी से पाप बन्ध होता है अनन्त, संसार भ्रमण भी बढ़ता अनन्त।
चौरासी लाख योनि में मिलते दुःख, इसी से न मिलते है कभी भी सुख।।(7)

शुभ पुरुषार्थ से पुण्य बन्धता, आध्यात्मिक विकास अधिक होता।
पूर्वबद्ध पाप की निर्जरा होती, आध्यात्मिक शक्ति अधिक बढ़ती।।(8)

इसी से श्रेष्ठ स्वर्ग सुख मिलता, उत्तम मानव वैभव मिलता।
'पुण्य फलाअरिहंता' भी होता, क्रमशः मोक्ष सुख भी मिलता।।(9)

शुद्ध पुरुषार्थ से आत्म विशुद्धि होती, स्वात्मोपलब्धि इसी से होती।
कर्मक्षय पूर्ण इसी से ही होता, सच्चिदानन्दमय जीव बनता।।(10)

अतएव पुरुषार्थ होता है श्रेष्ठ, इसी से होते पुण्य-पाप व मोक्ष।
अशुभ से शुभ शुद्ध करणीय, शुद्ध पुरुषार्थ (है) 'कनक' का ध्येय।।(11)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 30.07.2014, अपराह्न 5.33

वैराग्य होता है दुःखमिश्रित सुख से (अतिसुख या अतिदुःख से या सुघटनाओं से कम वैराग्य होता है)

चाल : 1. छोटी-छोटी गैया..... 2. शत-शत वन्दन.....

स्वर्ग नर्क में वैराग्य होता, न होता है भोगभूमि में।
अतिदुःखमा/(षष्टम काल) में न वैराग्य होता, वैराग्य है दुःखमा-सुखमा के।।1।।

स्वर्ग में इन्द्रियज भोग भोगते, नरक में भोगते है दुःख।
भोगभूमि में भी भोगते भोग, अतिदुःखमा में भोगते दुःख।।2।।

वैराग्य होता है दुःखमा-सुखमा में, दुःखमा/(पंचम) काल में होता वैर।
सुघटनाओं से होता कम वैराग्य, दुर्घटनाओं से होता बहु वैराग्य।।3।।

नीलांजना की मृत्यु को देखकर, आदिनाथ को हुआ था वैराग्य।
पशुओं के घात को सुनकर, नेमीनाथ को हुआ था वैराग्य।।4।।

विरक्त हुए थे महात्मा बुद्ध, नदी जल हेतु देखकर युद्ध।
वृद्ध रोगी शव देख संन्यासी, राज्य त्यागकर बन गये सन्यासी।।5।।

किसी को होता विद्युत विलय से, किसी को होता मेघ विलय से।

किसी को पका बाल को देखकर, किसी को विविध पाप/(दुःख) देखकर ।।6 ।।

पाप कर्म के फल को देखकर, विशेष चिन्तन होता मन में।
ज्ञान-वैराग्य भी होते उत्पन्न, जो जीव होते है भव्य-आसन्न ।।7 ।।

नरक में भी होता (है) सम्यक्त्व उत्पन्न, वेदना जन्य व जाति स्मरण से।
'आर्तनरा धर्मपरा भवन्ति' उक्ति, बहुशः यथार्थ होती लोक में ।।8 ।।

शास्त्रों में वर्णन (भी) पाप-पापिओं का, होता है प्रचुर मात्रा में भी।
पापों से निवृत्त करने के हेतु, वर्णन अधिक दुःखों का भी ।।9 ।।

पाप-पापिओं से अतः लो शिक्षा, नहीं करने की पाप प्रवृत्ति।
ज्ञान व वैराग्य बढ़ाने हेतु भी, 'कनक' की होती ऐसी ही प्रवृत्ति ।।10 ।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 06.08.2014, रात्रि 1.19 व प्रातः 5.10
(यह कविता मुकेश जैन (गारियावास) की जिज्ञासा से भी प्रेरित)

पूर्व आचार्य ने कहा भी है–

जातिजरोरूरोग मरणातुर, शोक सहस्त्रदीपिताः,
दुःसहनरक पतन सन्त्रस्तधियः प्रतिबुद्धचेतसः।
जीवितमंबु बिंदुचपलं, तडिदभ्रसमा विभूतयः,
सकलमिदं विचिन्त्यमुनयः, प्रशमायवनान्तमाश्रिताः ।।1 ।।

(श्री योगी भक्ति)

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन्। पाद द्वयं ते प्रजाः,
हेतु स्तत्र विचित्र दुःख निचयः संसार घोरार्णवः।
अत्यन्त स्फुरदुग्र रश्मि निकर व्याकीर्ण भूमण्डलो,
ग्रैष्मः कारयतीन्दु पाद सलिल च्छायानुरागं रविः ।।2 ।।

(श्री शांति भक्ति)

सन्तप्तोत्तम काञ्चन क्षितिधर श्री स्पर्द्धि गौरद्युते,
पुंसां त्वच्चरण प्रणाम करणात्पीड़ाः प्रयान्तिक्षयं।
उद्यद्भास्कर विस्फुरत्कर शतव्याघात निष्कासिता,
नाना देहि विलोचन-द्युतिहरा शीघ्रं यथा शर्वरी ।।3 ।।

(श्री शांति भक्ति)

''दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय,
जो सुख में सुमिरन करे, दुःख काहे को होय ।।''

(कबीर)

सुकथा एवं विकथा
(जिससे ज्ञान वैराग्य व सुशिक्षा मिले वे सुकथा अन्यथा कुकथा)

अकथा सुकथा व विकथा को जानो, उद्देश्य स्वरूप व शिक्षा पहचानो।
सुउद्देश्य आदि युक्त होती है सुकथा, कुउद्देश्य आदि युक्त होती है कुकथा।।(1)

मिथ्यात्व सहित व राग-द्वेष से युक्त, जो कथा होती है वह कुकथा कथित।
संसार वर्धक व शिक्षा से रहित, ईर्ष्या घृणा निन्दा झूठ से सहित।।(2)

पर अपमानकर व अनर्गल कथन, हिताहित रहित अविवेकी कथन।
कलह विसंवाद व परपीड़क वचन, समयशक्ति नाशक अकथा कथन।।(3)

राष्ट्रकथा व स्त्रीकथा है विकथा, भोजन-कथा चोर-कथा है विकथा।
विषय कषाय व संज्ञा से सहित, होती है ये कथा पाप से सहित।।(4)

स्वरूप-कथन कर्मफल कथन हेतु, राष्ट्रादि कथन न होता पाप के हेतु।
प्रथम-चरण करणअनुयोग मध्ये, चारों कथाओं के वर्णन प्रचुर रूप में।।(5)

मिथ्यात्व-कषाय-पाप व्यसनों का, तथाहि इनसे युक्त पापिओं का।
विस्तार से वर्णन है जैनागम में, तथापि विकथा नहीं है पाप।।
सुकथा/(धर्मकथा) की (है) चार प्रभेद कथा, आक्षेपिणी व विक्षेपणी की कथा।
संवेगिनी निर्वेदनी की कथा, पात्रानुसार वर्णन चारों ही कथा।।(6)

आचार का कथन होता आक्षेपिणी में, खण्डन-मण्डन (तर्क) का होता विक्षेपणी में।
वैराग्यवर्धक कथाएँ संवेगिनी में, संसार त्याग की कथाएँ निर्वेदनी में।।(7)

एकान्तवाद राग द्वेष मोह से युक्त, होती धर्मकथा यदि तो भी अयुक्त।
स्वार्थ पूर्वाग्रह भेद-भाव सहित, कलह विसंवाद युक्त धर्मकथा अयुक्त।।(8)

इसी से मिथ्यामत भी उत्पन्न होते, विवाद कलह युद्ध तक भी होते।
विश्व इतिहास इसके लिए भी साक्ष्य, वर्तमान में भी यह सर्वत्र प्रत्यक्ष।।(9)

ज्ञान-वैराग्य-शिक्षाप्रद सो सुकथा, महान् उद्देश्य व सुभावना संयुक्त।
इसी से विपरीत है सभी कुकथा, 'कनक' सब चाहे आत्म विकास कथा।।(10)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 12.08.2014, रात्रि 12.45

परम स्वतंत्रता/ (मोक्ष) चाहता हूँ

चाल : तेरे प्यार का आसरा.....

इस ही भव में मैं मोक्ष चाहता हूँ।
पूर्ण नहीं तो यथा-योग्य चाहता हूँ।।(ध्रुवपद)

होता है पूर्ण मोक्ष, सर्वकर्म क्षय से।
पुण्य-पाप सहित, शरीर के क्षय से।।
इसका विश्वास मैं, करता हूँ अभी से।
पूर्ण क्षय हेतु मैं, यत्नशील अभी से।।
अन्त में भिन्न होता, शरीर भी आत्मा से।
अभी से मानूँ (मैं) भिन्न स्वयं को शरीर से।।इस ही भव में.....(1)

साधना की सिद्धि हेतु, शरीर की सुरक्षा।
करता हूँ भोजन औषधि, आदि से सुरक्षा।।
पुण्य-पाप दोनों के, क्षय से होता है मोक्ष।
पाप से निवृत्ति व पुण्य में अभी प्रवृत्त।।
पुण्य फल स्वरूप, ख्याति पूजा नहीं चाहता हूँ।
भोगोपभोग अहंकार, को नहीं चाहता हूँ।।इसी भव में.....(2)

पुण्य से आत्मा को, मैं करता हूँ पावन।
मोक्ष प्राप्ति हेतु मैं, पुण्य करूँ विसर्जन/(नियोजन)।।
द्रव्यभाव कर्म व नौ कर्म के क्षय से।
मोक्ष होता है सभी, बन्धन के क्षय से।।
संकीर्ण पंथ मत जाति भाषा राष्ट्र से।
मुक्त मैं होना चाहता हूँ, संकीर्ण भावों/(स्वार्थों) से।।इसी ही भव में.....(3)

तेरा-मेरा भेदभाव शत्रु-मित्रभाव से।
मुक्त मैं होता छोटा-मोटा भेदभाव से।।
अहंकार-ममकार व दीन-हीन भाव से।
मुक्त मैं होता हूँ ईर्ष्या तृष्णा घृणा से।।
संकल्प-विकल्प/(संक्लेश) अपेक्षा-उपेक्षा से।
मुक्त मैं होता निन्दा, चुगली अपमान/(अपकार) से।।इस ही भव.....(4)

निर्द्वन्द्व निरापेक्ष साम्यभावी बनूँ मैं।
परम-स्वाधीन हेतु यत्नशील 'कनक' मैं।।

स्वयं में ही सम्पूर्ण व स्वावलंबी बनूँ मैं।
शुद्ध-बुद्ध नित्यानन्द आत्मनिर्भर बनूँ मैं।।इस ही भव में.....(5)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 15.08.2014, मध्याह्न 2.44

पाप-ताप-रोगहर प्रायश्चित्त

चाल : छोटी-छोटी गैया.....

जो जन प्रायश्चित्त सदा करे, दोष दूर हेतु पश्चाताप करे।
निन्दा गर्हा सहित जो करे, पाप-ताप की निवृत्ति सो करे।।(1)

प्रतिक्रमण व प्रत्याख्यान सहित, आत्मसाक्षी व गुरुसाक्षी युक्त।
सरल सहज व शुचिता सहित, अन्तो-अन्तो डज्झामि पच्छत्तावेण।।(2)

दोष दूर हेतु प्रायश्चित्त कर्त्ता, स्वयं को मानता पापिष्ठ दुरात्मा।
रागी-द्वेषी व मन्द बुद्धि मानता, मायावी लोभी मलीमस मानता।।(3)

सभी जीवों को क्षमादान देता, सभी जीवों से क्षमा भी माँगता।
जिससे दुष्कृत स्वयं से होता, क्षमा प्रार्थना उनसे भी करता।।(4)

निर्मल भाव से गुरु को बताता, प्रायश्चित्त हेतु प्रार्थना करता।
प्रायश्चित्त नवकोटि से करता, पुनः-पुनः उन दोषों को न करता।।(5)

आगामी दोषों का प्रत्याख्यान भी करता, वह जन पावन हल्का हो जाता।
तन-मन-आत्मा स्वस्थ्य हो जाते, अन्य जन उसे निष्पापी मानते।।(6)

निर्मल यश उसका भी फैलता, विश्वासपात्र सबका बनता।
दंभी मायावी न उसे मानते, गुरुजन उसे आशीर्वाद देते।।(7)

सम्यक्त्व प्राप्ति की यह (है) प्रक्रिया, आत्म विशुद्धि की यह (है) प्रक्रिया।
दोष दूर हेतु यह है प्रक्रिया, गुणस्थान वृद्धि की यह है प्रक्रिया।।(8)

तीर्थंकर गणधर सूरी पाठक, साधु-साध्वी व श्रावक-श्राविका।
सम्यग्दृष्टि व सज्जन गुणीजन, इसी प्रक्रिया से होते है पावन।।(9)

मनोवैज्ञानिक यह चिकित्सा प्रक्रिया, उत्तमतम यह दण्ड की प्रक्रिया।
मोक्ष प्राप्ति हेतु आध्यात्मिक प्रक्रिया, 'कनकनन्दी' करे सतत यह क्रिया।।(10)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 25.07.2014, रात्रि

(मुनि आध्यात्मनन्दी की स्वेच्छा से स्व-दोषों की आलोचना निन्दा, गर्हा सहित करने से प्रभावित होकर बनी यह रचना)

पेट नहीं है महापापी

चाल : 1. छोटी-छोटी गैया..... 2. तुम दिल की धड़कन..... 3. सायोनारा.....

पेट पोषण हेतु न होता अधिक पाप, इन्द्रिय मन/(कषाय) से होता है अधिक पाप।
आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी, आहार करते तो भी न अधिक पापी।।(1)

शरीर माध्यम से होती धर्म/(आत्मा) की साधना,
धर्म/(आत्म) साधना से होती पाप/(कर्म) विराधना।
इन्द्रिय मन की लालसा के हेतु, अधिक पाप न होता पेट के हेतु।।(2)

महामत्स जाता है सप्तम नरक, अरबों जीवों को खाकर करता जो पाप।
तन्दुलमत्स भी जाता (है) सप्तम नरक, बिना जीव को खाकर मन के कारण।।(3)

राजा-महाराजा व चक्रवर्ती सम्राट, पेट के कारण न करते संग्राम।
इन्द्रिय मन के वश में होकर, करते है आक्रमण युद्ध व संहार।।(4)

शोषण मिलावट व भ्रष्टाचार ठगी, सत्ता सम्पत्ति वाले (भी) करते ये कृत्ति।
प्रामाणिक श्रमशील सज्जन (व) साधु, पेट निमित्त न करते पाप काम।।(5)

इन्द्रिय भोग व दूषित मन से, पाप होता है बिना भोजन करके।
केवल शरीर/(पेट) से न होता है पाप, सकल परमात्मा से न होता है पाप।।(6)

माँसभक्षी सिंह (भी) जाता पंचम नरक, चक्रवर्ती भी जाता है सप्तम नरक।
महिला जा सकती है पंचम नरक, भावानुसार मिले पाप या नरक।।(7)

पापी पेट के बाहाना से न कर पाप, बाहाना से और भी बंधता है पाप।
इन्द्रिय मन को सदा करो संयम, 'पाप पेट' नीति नहीं 'कनक' मान्य।।(8)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 15.08.2014, रात्रि 12.55

(इस कविता से प्रभावित होकर श्री भूपेन्द्र जी जैन उदयपुर वालों ने इस गीतांजली के लिए ज्ञान दान किया।)

जीवों के उत्थान-पतन एवं मोक्ष

चाल : छोटी-छोटी गैया.....

जीवों के उत्थान-पतन होते रहते, मोक्ष के पहले ये होते रहते।
ये है कर्मों के फल, नहीं स्वभाव, सत्य शिव सुन्दर है शुद्ध स्वभाव।।

पंच परिवर्तन को तो करते रहते, चारों गतियों में जीव जाते रहते।

चौरासीलक्ष योनियों में जन्म (भी) लेते, निगोद से देव तक भ्रमण करते।।

कभी राजा कभी रंक देव-मानव, कीट-पतंग नारकी व वन-मानव।
सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि युक्त मानव, दीन-हीन अहंकारी क्रूर मानव।।

अनन्त बार जन्म-मरण(को) करते जीव, अनन्त सुख-दुःखों को भी भोगते जीव।
शत्रु-मित्र-भाई-बन्धु बने अनन्त, पाप-ताप-संताप से होते संत्रस्त।।

किन्तु आत्महित हेतु न करते काम, जिससे मिलता है मोक्ष का धाम।
जितने ये संसार में दुःख सहते, सर्वज्ञ बिना न कोई कह सकते।।

आत्महित हेतु यदि वे काम करते, संसार भ्रमण कार्य के अनन्तवाँ करते।
अनन्त सुख सम्पन्न वे मोक्ष को पाते, कृत-कृत्य होकर शुद्ध-बुद्ध बनते।।

रागी द्वेषी मोही जीव ये न कर पाते, संसारिक कार्य में ही वे व्यस्त रहते।
आत्म-उत्थान हेतु भव्य करो हे! कार्य, 'कनकनन्दी' का लक्ष्य आध्यात्म कार्य।।

पंच परिवर्तन से मुझे प्राप्त शिक्षाएँ

चाल : छोटी-छोटी गैया.....

पंच परिवर्तन से मुझे मिलती शिक्षा, आत्मोपलब्धि की महान् शिक्षा।
हर कार्य मैंने किया अनन्त बार, आत्मोपलब्धि न की मैंने एक भी बार।।

द्रव्य क्षेत्र काल भाव रूप में, अनन्त परिवर्तन हुए इस लोक में।
आत्मोपलब्धि न की मैंने एक भी बार, संसार भ्रमण हुए अनन्त बार।।

सर्व पुद्गलों को खाया अनन्त बार, त्याग करके पुनः भी बारम्बार।
लोक के सभी पुद्गल मेरा उच्छिष्ठ, अतएव ग्रहण योग्य नहीं है श्रेष्ठ।।

हर क्षेत्र में जन्मा मैं अनन्त बार, हर क्षेत्र में मरा मैं अनन्त बार।
हर क्षेत्र न मेरे लिए अपरिचित, अतएव हर क्षेत्र से मैं बनूँ विरक्त।।

हर काल में मेरे हुए जन्म-मरण, उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी में हुआ भ्रमण।
अतएव हर काल में होता विरक्त, स्व-द्रव्य क्षेत्र काल में होता निरत।।

चारों भवों में मैंने किया भ्रमण, चौरासी लक्ष्य योनी में किया भ्रमण।
चारों गति परे पंचम गति मैं चाहूँ, भव सम्बन्धी सुख-दुःख परे मैं चाहूँ।।

राग द्वेष मोह भाव किया अनन्त, अतएव दुःख भोगा मैंने अनन्त।
शुद्धात्मा स्वभाव को सदा मैं चाहूँ, विभाव भावों को कभी न चाहूँ।।

मेरे ही स्व-द्रव्य क्षेत्र काल मैं चाहूँ, शुद्धात्म भाव में मैं रमना चाहूँ।
पर से निवृत्ति स्व में करूँ प्रवृत्ति, 'कनक' का लक्ष्य है स्वात्मोपलब्धि।।

भारत में विकास.....!?

चाल : छोटी-छोटी गैया.....

भारत में विकास खूब हो रहा (है), दीपक के नीचे भी अंधेरा हो रहा (है)।
बाहर का तो विकास दिखाई देता, अंदर का विनाश तो बढ़ता जाता।।(1)

कुकुरमुत्ते के समान विद्यालय खुल रहे, पढ़ाई रूपी बाढ़ भी खूब आ रही।
संस्कार संस्कृति सदाचार नाश हो रहे, भ्रष्टाचार बलात्कार रोगादि बढ़ रहे।।(2)

शोध-बोध-प्रयोग भी नहीं शिक्षा में, फैशन-व्यसन-प्रमाद बढ़ा देश में।
शिक्षा में भ्रष्टाचार व शोषण हो रहे, स्वार्थपरता व आलस्यपना बढ़ रहे।।(3)

धार्मिक आडम्बर खूब (ही) कर रहे हैं, सत्य समता शांति से दूर हो रहे है।
ईर्ष्या द्वेष घृणा तृष्णा कर रहे हैं, आत्मा का शोध-बोध (भी) भूल रहे हैं।।(4)

आर्थिक विकास थोड़ा तो हो रहा, निर्माण कार्य विभिन्न भी हो रहा।
अनेक अनर्थ भी विकास कर रहे, प्रकृति का विनाश भी खूब हो रहा।।(5)

लाखों टन अनाज तो नष्ट हो रहे, अन्नदाता किसान भूखे मर रहे।
खरबों रुपये विदेशों/(बैंकों) में जमा हो रहे है,
ऋण से किसान आत्महत्या कर रहा।।(6)

मद्य जूते एसी रूम में बेच रहे, सब्जी व फल खुले में बेच रहे।
खिलाड़ी व नट-नटी धनी हो रहे, किसान व मजदूर शोषित हो रहे।।(7)

कन्या व गाय को तो पूज रहे हैं, इनकी भी निर्मम हत्या कर रहे है।
बालश्रम का तो विरोध कर रहे, स्वयं ही बाल-नौकर रख रहे।।(8)

अंग्रेज तो देश से चले गये है, अंग्रेजीयत के गुलाम हो गये है।
आधुनिकता की महामारी फैल रही है, संकीर्ण व स्वार्थपर हो रहे।।(9)

दया सेवा परोपकार त्याग रहे है, अस्त-व्यस्त-संत्रस्त हो रहे।
प्रगतिशीलता का दिखावा कर रहे, आलस्य प्रमाद व त्याग रहे।।(10)

तनाव व रोग से अतः ग्रस्त हो रहे, कुशील कदाचार से त्रस्त हो रहे।
दोष त्याग से सर्वांगीण होगा विकास,
आत्म विकास हेतु 'कनक' का आशीष।।(11)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 20.08.2014, प्रातः 6.07

प्रतीक स्वरूप शरीर के अंगोपांग से प्राप्त शिक्षाएँ

चाल : 1. आओ बच्चों तुम्हें दिखाये..... 2. छोटी-छोटी गैया..... 3. सायोनारा.....

यह शरीर प्रतीक स्वरूप है, ज्ञान-विज्ञान व आत्मा का।
चरण प्रतीक है आचरण का, प्रगतिशील सत् कर्म का।।

देख-भालकर चले (जो) सत् पथ में, वह ही लक्ष्य को पाता है।
आत्मविश्वास ज्ञान चरित्र पथ में, ही मोक्ष महल को पाता है।।

इसलिए ही चरण पूज्यनीय, जो सदाचरण से युक्त है।
चरणरज अतः पूजनीय होता, आचरण से पावन होता है।।

जंघाबल स्थिरता का प्रतीक है, स्वावलम्बन व स्वतंत्रता का।
कटीबल दृढ़ता का प्रतीक है, कर्त्तव्यनिष्ठा व आस्था का।।

उदर प्रतीक ग्रहण शीलता का, जो ज्ञानार्जन होता है।
हित ग्रहण व अहित त्याग का, संतुलन शक्ति समायोजन का।।

हृदय प्रतीक श्रद्धा व दया का, किडनी है भेद विज्ञान/(विश्लेषण) का।
हाथ प्रतीक कर्त्तव्य पालन का, दया दान सेवा परोपकार का।।

गर्दन/(ग्रीवा) प्रतीक है उन्नत होने का, नीचता से नहीं झुकने का।
शिर प्रतीक श्रेष्ठ बनने का, जेष्ठ व उदार विचारों का।।

सम्यग्दृष्टि का चक्षु प्रतीक है, दूरदृष्टि से सम्पन्नता का।
कर्ण प्रतीक हितकर सुनने का, अधिक सुनना कम बोलने का।।

नासिका प्रतीक है श्वास/(गंध) ग्रहण का, उपाय है प्राण धारण का।
ज्ञान व सुशिक्षा ग्रहण द्वारा, जीवन उन्नत बनाने का।।

मुख है प्रतीक/(भोजन) हित ग्रहण का, हित कथन या मौन का।
जिह्वा है प्रतीक कोमल/(विनम्र) होने का, ज्ञानामृत रस पान करने का।।

शरीर में स्थित आत्मा के कारण, यह सब सम्भव होता है।
इसलिये आत्मा सभी से महान्, सर्वश्रेष्ठ आत्महित है।।

राग द्वेष काम क्रोध मोह त्याग, यह ही आत्म कल्याण है।
सच्चिदानन्द बनने हेतु, 'कनक' का तन साधन है।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 19.08.2014, रात्रि 2.24

चरण से प्राप्त शिक्षाएँ

चाल : आत्मशक्ति से ओतप्रोत.....

चरण-आचरण की शिक्षा देता है, देखभाल चलने की शिक्षा देता है।
चलने से ही लक्ष्य प्राप्त होता है, प्रगति करने की शिक्षा देता है।।
चरण पूजनीय होता सदाचारी का, चरणरज भी पूज्य सदाचारी का।
केवल सत्ता-सम्पत्ति बुद्धि बल से, कोई न पूजनीय होता कदाचार से।।
सदाचार से समाहित श्रद्धा व ज्ञान, कर्त्तव्यनिष्ठ युक्त स्वावलम्बन।
हितग्रहण सहित अहित परिहरण, संयम धैर्य एकाग्रता अनुशासन।।
आत्मविश्वास होता है सम्यक् ज्ञान, दोनों से युक्त होता सदाचरण।
तीनों से होता सही कार्य सम्पादन, इसलिए सदाचार होता महान्।।
इसलिए सदाचारी होता है महान्, सदाचारी के चरणों का होता पूजन।
चरणों से सदाचार की शिक्षा लेता हूँ, 'कनक' सभी से सदा शिक्षा लेता हूँ।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 21.08.2014, मध्याह्न 2.35

दोनों चक्षु से प्राप्त मुझे शिक्षाएँ

चाल : रघुपति राघव.....

दोनों चक्षु से मुझे शिक्षा मिलती, दूरदृष्टि व समन्वय शिक्षा की।
अहित-परिहार व हित-प्राप्ति की, ज्ञान ज्ञेय व उपादेय की।।(1)
अन्तर्दृष्टि सहित व्यवहार की, निश्चय-व्यवहार दोनों नयों की।
संतुलन सहित सम्यग्दृष्टि की, सहित साम्यभाव की।।(2)
दोनों चक्षु से दिखे समान वस्तु, दूर से ही दिखाई देती है वस्तु।
अग्नि विष सर्पादि को देखती चक्षु,
तथापि न प्रभावित (क्षत-विक्षत) होती है चक्षु।।(3)
वस्तु स्वरूप को मैं देखूँगा सम, अप्रभावित रहकर जानूँग सम।
अस्पर्श-अनासक्त रहूँ वितरागी, ज्ञाता दृष्टा रहूँ मैं साम्यभावी।।(4)
पलकों से यथा चक्षु होती रक्षित, तथाहि रहूँगा मैं दोषों से रक्षित।।
अन्तर्दृष्टि होकर रहूँगा स्वयं में लीन, 'कनक' का स्वरूप है सच्चिदानन्द।।(5)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 22.08.2014, रात्रि 11.05

दोनों कानों एवं मन से मुझे प्राप्त शिक्षाएँ

चाल : छोटी-छोटी गैया.....

दोनों कान मुझे शिक्षा देते हैं, हित सुनने की शिक्षा देते हैं।
अहित मिथ्या व निन्दा चुगली, नहीं सुनने की शिक्षा देते हैं।।(1)

श्रवण ही अंतिम इन्द्रिय होती, हित श्रवण से अधिक शिक्षा मिलती।
गुरु-शिष्य परम्परा अतः चलती, देशनालब्धि भी यह ही होती।।(2)

कान के बाद होता है मन, हिताहित चिन्तनकर है मन।
सम्यक्त्व प्राप्ति में हेतु है मन, कर्मबन्ध व नाश में हेतु प्रधान।।(3)

सम्यक्त्व प्राप्ति हेतु पाँचों ही लब्धि, गुरु उपदेश होती देशनालब्धि।
बिना देशना से न होता सम्यक्त्व, जिससे ज्ञान-चारित्र होते यथार्थ।।(4)

तीर्थंकर गणधर आचार्य आदि, देशना से प्राप्त करते सम्यक्त्व आदि।
इसे कहते है प्रथमोपशम सम्यक्त्व, पीछे बनते क्षायोपशमक्षायिक।।(5)

सम्यग्दर्शन होने के अनन्तर, सम्यग्ज्ञान भी पाते देशना सुनकर।
तीर्थंकर आचार्य आदि के उपदेश, सुनकर बनते हैं ज्ञानी विशेष।।(6)

सुनकर मनन करते है मन से, हिताहित चिन्तन करते भाव से।
जिससे सम्यक्त्व व होता है ज्ञान, अतएव महत्वपूर्ण होते कान व मन।।(7)

मनातीत जब होता है ज्ञान, तब हो जाता है केवलज्ञान।
दुरुपयोग जब होता कान व मन का, कारण बनते है पाप बंधनों का।।(8)

इसी से मुझे मिलती है शिक्षा, सदुपयोग की विविध शिक्षा।
हित श्रवण मनन अनुप्रेक्षा की शिक्षा, 'कनक' ग्रहण करे उत्तम शिक्षा।।(9)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 23.08.2014, मध्याह्न 2.27

तीर्थंकर-सिद्ध से प्राप्त आत्मोपलब्धि की शिक्षाएँ

तर्ज : आत्मशक्ति से ओतप्रोत.....

अनन्त ज्ञान दर्शन सुख वीर्य के होते है स्वामी तीर्थंकर देव।
समवशरण की विभूति सहित, शतइन्द्र से सेवीत देव।।

तथापि किसी से भी राग-द्वेष न करते, न चाहते ख्याति पूजा लाभ।
निन्दा प्रशंसा अपमान से अप्रभावित, नहीं करते कभी मोह व क्षोभ।।

समवशरण की विभूति से भी नहीं करते वे स्पर्श व मोह।
भक्तों के प्रति भी न राग करते, शत्रु के प्रति न करते क्षोभ।।

दिव्य ध्वनि भी निस्पृहता से खिरे नहीं रखते कर्तृत्व भाव।
सिद्ध भगवान् अष्टकर्म रहित सहित होते है अष्टगुणों से।
रहित होते है भौतिक शरीर से, समवशरण व दिव्य ध्वनि से।।

मुझे तो दोनों देवों से शिक्षा मिलती है निम्न प्रकार।
शक्ति-प्रसिद्धि-भक्त-विरोधियों से भी, नहीं करना राग-द्वेष-मोह।।

प्रवचन-अध्यापन-धर्म-प्रचार से भी, नहीं चाहूँ ख्याति पूजा लाभ।
इसी हेतु न राग-द्वेष करूँगा, रहूँगा इसी से भी निस्पृह निर्लोभ।।

भौतिक-निर्माण व धन-जन-संग्रह भी, नहीं करना है मुझे मोहभाव से।
सरल-सहज व निस्पृह रहकर, करना ये सब साम्यभाव से।।

सत्य-समता-शांति की प्राप्ति हेतु करना है मुझे आत्म विशुद्धि।
अनन्तज्ञान दर्शन सुख वीर्य प्राप्ति हेतु, 'कनक' करे सदा आत्मा की सिद्धि।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 23.08.2014, रात्रि 1.52

मेरी कहानी जो सर्वज्ञों ने जाना

चाल : 1. आत्मशक्ति से ओतप्रोत..... 2. तुम दिल की धड़कन.....

किसे मैं बताऊँ मेरी कहानी, अनन्त भवों की दुःख कहानी।
सामान्य लोगों से वैज्ञानिक तक, नहीं जानते है मेरी कहानी।।

सर्वज्ञ जानते मेरी कहानी, आचार्यों द्वारा लिखी कहानी।
सिद्धान्त ग्रंथों में पढ़ा इसे मैं, वर्णन करूँ यहाँ कहानी।।

अनादि अनन्त अक्षय काल से, पंच-परिवर्तन किया विश्व में।
द्रव्य क्षेत्रकाल भव व भावों में, अनन्त दुःखों को सहा भूत में।।

निगोद में जन्मा अनन्त बार, मरण किया भी अनन्त बार।
अत्यन्त मलीन भावों के कारण, अत्यन्त दुःखों को सहा अनन्त।।

प्रत्येक वनस्पति वृक्षादि बना, कीट-पतंग पशु-पक्षी भी बना।
देव-मानव नारकी भी बना, इन अवस्थाओं को स्वरूप माना।।

इन पर्यायों में अनन्त जन्मा, अवस्थानुसार मैंने जीवन जीया।
शाकाहारी व मांसाहारी/(मलाहारी) भी बना, अन्याय अत्याचार दुराचार भी किया।।

तथापि इसे कभी नहीं गलत माना, गलत करते हुए सही ही माना।
मोह अज्ञान व स्वार्थ के कारण, कषाय-संज्ञावश सत्य न जाना।।

सुसंस्कारवश पूर्व भवों के, गुरु उपदेश रूपी जिनवाणी से।
सत्य-समता व शांति साधना से, आत्मज्ञान हुआ है पुरुषार्थ से।।

अभी न अनात्म काम करूँगा, राग-द्वेष-मोह दूर करूँगा।
ख्याति-पूजा लाभ सभी त्यागूँगा, निस्पृह समता से आत्म ध्याऊँगा।।

अनन्त कर्मों को नष्ट मैं करूँगा, अनन्त दुःखों से निवृत्त होऊँगा।
अनन्त ज्ञान सुख व वीर्य पाऊँगा, 'कनक' सच्चिदानन्द बनूँगा।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11 (उदयपुर), दिनांक - 24.08.2014, मध्याह्न 2.57

सत्ता-सम्पत्ति प्रसिद्धि बुद्धियुक्त न्यायदाता भी परमज्ञान-सुख हेतु बनते हैं साधु!

भगवान् शान्ति-कुन्थु-अरहनाथ से प्राप्त शिक्षाएँ

चाल : 1. शत-शत वन्दन..... 2. यमुना किनारे.....

शान्ति कुन्थु अरहनाथ थे, तीर्थंकर चक्रवर्ती व कामदेव।
तीन ज्ञान व दो कल्याणक युक्त, तथापि वे साधु बने विरक्त।।टेक।।

इसी से मुझे यह शिक्षा मिलती, सत्ता-सम्पत्ति से न मिले सुख।
ख्याति पूजा लाभ भोग विलास, न मिलता है अनन्त सुख।।
राज्य विस्तार या प्रजा पालन से, नहीं मिलता है परम-सुख।
परिवार स्त्री देव-मानवों से, नहीं मिलता है आत्मिक-सुख।।(1)

शासन-प्रशासन आज्ञा आदेश से, नहीं मिलती है आत्मिक-शान्ति।
न्याय-निर्णय दण्ड-विधान से, नहीं मिलती है परम-शान्ति।।
परिवार पालन विवाह बन्धन, जन्म-मरण से न मिले शान्ति।
युद्ध विजय शत्रु दमन, प्रशस्ति लेख से न मिले शान्ति।।(2)

तीन ज्ञान भी न परम ज्ञान, शरीर-सुन्दर न आत्म-वैभव/(सौन्दर्य)।
इसीलिए वे दीक्षा लेकर, आत्म-उपलब्धि हेतु वन-गमन।।
दीक्षा लेते ही चार ज्ञान व, चौसठ ऋद्धि से होते सम्पन्न।

तथापि मौन साधना से, अनन्त चतुष्ट्य हेतु करते ध्यान।।(3)

आत्मविशुद्धि द्वारा घाति क्षय से, जब वे बनते सर्वज्ञ देव।
तब ही विश्व कल्याण हेतु, उपदेश देते सर्वज्ञ देव।।
अनन्त ज्ञान दर्शन सुख वीर्यमय, अनन्त चतुष्ट्य से होते सम्पन्न।
दोष अठारह रहित होने से, उनके उपदेश सत्य सम्पन्न।।(4)

उनके उपदेश ही परम मान्य, स्व-पर-विश्व कल्याण हेतु।
राग-द्वेष व काम मोह युक्त, अन्य के वचन नहीं कल्याण हेतु।।
तथाहि अन्य तीर्थंकर केवली, गणधर साधु बुद्ध सन्तादि।
स्व-स्व सत्ता सम्पत्ति त्यागकर, सुख प्राप्ति हेतु बने संन्यासी।।(5)

अतएव ज्ञान-विज्ञान-कानून, जो सत्य-तथ्य सहित होते।
वे ही मान्य अन्यथा नहीं, 'कनकनन्दी' यह शिक्षा लेते।।(6)

प्रतिक्रमण (कृतदोष परिहार) से मुझे प्राप्त शिक्षाएँ

चाल : 1. छोटी-छोटी गैया..... 2. सायोनारा.....

प्रतिक्रमण से मुझे मिलती शिक्षा, दोष दूर करने की महान् शिक्षा।
दोष जानने मानने की शिक्षा, गुरु से दोष प्रगटने की शिक्षा।।(1)

भाव में निर्मलता आती (है) इससे, पापों की निर्जरा होती (है) इसी से।
कषाय क्षीणता होती (है) इसी से, सरल-सहजता आती (है) इसी से।।(2)

संक्लेश-द्वन्द्व भी मिटे (है) इसी से, कलह-विसंवाद मिटे इसी से।
मन की एकाग्रता (भी) बढ़े इससे, गहरी निद्रा भी आती (है) इससे।।(3)

समता-शान्ति भी प्रगट होती, व्रतों में निर्मलता इससे आती।
दोष-दूर से भी शिक्षा मिलती, सतर्कता व दक्षता (भी) आती।।(4)

दोष स्वीकार बार-बार होता, दोषारोपण अन्य पर नहीं होता।
विनम्र-स्वेच्छा से दोष स्वीकार होता, आत्मसाक्षी पूर्वक स्वीकार होता।।(5)

इसी प्रक्रिया से मुझे शिक्षा मिलती, बार-बार दोष स्वीकार की शिक्षा मिलती।
विनम्रता व स्वेच्छा से यह प्रवृत्ति, अनादि दोष दूर हेतु प्रवृत्ति।।(6)

हर जीव को क्षमा (दान) करना होता, क्षमा याचना भी हर जीव से होता।
पंच-परिवर्तन में दोष सभी से, अतएव क्षमा भाव हर जीवों से।।(7)

मैत्रीभाव भी होता सभी जीवों से, बैरभाव त्याग होता सभी जीवों से।
हर पाप के दोष दूर होते, आत्म विशुद्धि हेतु 'कनक' करता।।(8)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 25.08.2014, चतुर्दशी रात्रि 1.36

ग्राम-गीत

ग्रामीण संस्कृति एवं प्रवृत्ति

चाल : 1. आत्मशक्ति..... 2. जय हनुमान..... 3. सायोनारा..... 4. चंदा-मामा.....

ग्रामीण संस्कृति भोली-भाली/(प्यारी वाली), सेवा-सहयोग करने वाली।
प्रकृति संरक्षण करने वाली, सबके भरण-पोषण वाली।।स्थायी।।

खेती खलिहान वृक्ष वाली, पशु-पक्षी गाय-भैंस वाली।
हरियाली (चादर) ओढ़नी ओढ़ने वाली, प्राकृतिक गीत गाने/
(सुनाने) वाला।।(1)

भारतीय-संस्कृति रक्षण-वाली, सादा-सहज जीवन वाली।
प्रायोगिक-संस्कार शिक्षा वाली, प्रदूषणों से रहित वाली।।(2)

जिसकी गोद में बच्चे पलते, उछल-कूद व खेल-खेलते।
भेद-भाव से रहित होते, जाति-धर्म का भेद न करते।।(3)

पशु-पक्षी से प्यार है करते, प्रकृति से नेह धरते।
नदी-नाल में स्नान करते, वन-उपवन में भ्रमण करते।।(4)

अनेक जाति के लोग है रहते, बढ़ई कुम्भार धोबी रहते।
अन्नदाता कृषक रहते, दूध प्रदाता ग्वाले रहते।।(5)

आत्मनिर्भर ग्रामीण होते, परिश्रमी व साहसी होते।
धर्मप्रेमी विनम्र होते, त्याग दया से सहित होते।।(6)

कागजी डिग्री रहित होते, अनुभव ज्ञान से सहित होते।
भाषणबाजी से रहित होते, आत्मिक संवाद सहित होते।।(7)

शुद्ध ताजा भोजन करते, दूध घी व छाछ पीते।
ताजे फल-सब्जी खाते, शुद्ध पानी व श्वास लेते।।(8)

बाजारवाद से रहित होते, खाते-खिलाते व नेह/(प्रेम) देते।
उदार हृदयी निश्छल होते, 'कनकनन्दी' को अच्छे लगते।।(9)

प्यारे ग्रामीण तुम सभी सुनो, ग्रामीण संस्कृति को हेय न/(महान्) मानो।

स्व-संस्कृति को त्याग न करो, अप-संस्कृति को हिये न धरो।।(10)

सगरून, दिनांक - 05.12.2013, रात्रि 7.18 (रात्रि विश्राम में)

(मगरा प्रान्त की ग्रामीण संस्कृति से प्रभावित यह कविता)

स्वाभिमान का स्वरुप एवं फल
(अभिमान, स्वाभिमान, सोऽहंभाव)

चाल : 1. देहाची तिजोरी.....(मराठी)..... 2. भातुकली.....
3. तुम दिल की धड़कन..... 4. क्या मिलिए ऐसे लोगों से.....
5. सायोनारा..... 6. छोटी-छोटी गैया..... 7. आत्मशक्ति से ओतप्रोत.....

अभिमान स्वाभिमान सोऽहं भाव को.....एक न मानो परस्पर तीनों को.....
अभिमान मिथ्या है, स्वाभिमान शुभ.....सोऽहं भाव दोनों परे होता है शुद्ध/
(स्वभाव).....(स्थायी).....

मिथ्यात्व अनन्तानुबन्धी कषाय युक्त.....होता है अभिमान सो ही घमण्ड.....
इसके ही प्रभेद है अष्टमद विशेष.....भौतिक उपलब्धि में होता मोह/
(दम्भ) विशेष.....(1)

इससे परे होता स्वाभिमान प्रशस्त.....स्व-सुगुण/(आत्मिक गुण) प्रति होता गौरव
प्रशस्त/(भाव).....
सोऽहं भाव दोनों परे आत्म स्वभाव.....सच्चिदानन्दमय शुद्ध/
(निज) स्वभाव.....(2)

स्वाभिमान से होता है आत्म सम्मान.....आत्मविश्वास व आत्म विज्ञान.....
आत्म महत्व तथा आत्म स्वीकृति.....आत्म अनुशासन आत्म प्रेम वृत्ति.....(3)

होती चारित्र व हित की चिन्ता.....विनम्रता व परहित की चिन्ता.....
संवेदनशीलता व आशावादिता.....दूसरों के सम्मान व कर्त्तव्यनिष्ठा.....(4)

मर्यादा दृढ़ता उदारवादिता.....दया दान सेवा क्षमा ज्ञान जिज्ञासा.....
इससे विपरीत होते हैं दुर्गुण.....जिस जीव में होता है अभिमान.....(5)

दोनों से परे है सोऽहं स्वभाव.....शुद्ध-बुद्ध व चैतन्य स्वभाव.....
अनन्त ज्ञान दर्शन सुख वीर्यमय.....'कनकनन्दी' का अन्तिम लक्ष्य.....(6)

स्व अनन्त गुण–गण–स्मरण–ध्यान

राग : 1. भावे वन्दू तो अरिहंत..... 2. रघुपति राघव.....
3. सायोनारा..... 4. तुम दिल की धड़कन.....

सच्चिदानन्द स्वरूप मैं हूँ.....अनन्त गुण–गण सहित मैं हूँ।
अक्षय अव्यय अविनाशी हूँ.....शुद्ध–बुद्धमय ध्रुवरूप हूँ।।ध्रु.।।

समस्त विकार भाव रहित हूँ.....द्रव्य–भाव–नोकर्म रहित हूँ।
तन–मन–इन्द्रिय रहित रूप हूँ.....सत्य–समता–शान्ति स्वरूप हूँ।।
अनन्तज्ञान दर्शनमय हूँ.....अनन्तसुख वीर्य स्वरूप हूँ।
अनन्तसूक्ष्मत्व अवगाही हूँ.....अनन्त अव्याबाध स्वरूप हूँ।।(1)

अनन्त अगुरु लघु स्वरूप हूँ.....अनन्त अस्तित्व वस्तुत्व रूप हूँ।
अनन्त प्रमेयत्व अवगाही हूँ.....अनन्त गुण–पर्याय रूप हूँ।।
अनन्त अहिंसा सत्यरूप हूँ.....अनन्त अचौर्य अपरिग्रह हूँ।
अनन्त ब्रह्मचर्य स्वरूप हूँ.....अनन्त धैर्य संतोष रूप हूँ।।(2)

अनन्त क्षमा मार्दव रूप हूँ.....अनन्त आर्जव शौच स्वरूप हूँ।
अनन्त संयम तप त्याग हूँ.....अनन्त आकिंचन्यमय हूँ।।
विश्व में सर्वश्रेष्ठ ज्येष्ठ हूँ.....अमृत सनातन विश्वनाथ हूँ।
दीन–हीन अहंकार रिक्त हूँ.....शत्रु–मित्र भेद–भाव रहित हूँ।।(3)

स्पर्श–रस गन्ध–वर्ण रहित हूँ.....छोटा–बड़ा भार रहित हूँ।
आदि–अनन्त–मध्य रिक्त हूँ.....स्वयंभू अकृत्रिम दिव्य रूप हूँ।।
गुणस्थानातीत चिन्मय रूप हूँ.....उत्पाद–व्यय–ध्रौव्यरूप हूँ।
अल्पज्ञ/(छद्मस्थ) अगम्य यंत्रातीत हूँ.....'कनक' संवेदन स्वरूप
/(स्वसंवेदनरूप/उपयोगमय) हूँ।।(4)

आध्यात्मिक कविता

मेरा परम–स्वरूप / सोऽहं भाव

चाल: 1. सायोनारा..... 2. शत–शत वन्दन..... 3. इक परदेशी तेरा.....
4. ऊँकार स्वरूपा.....

आकाश से भी अधिक विशाल, अनन्त ज्ञान/(शक्ति) युक्त हूँ मैं।
अणु से भी अधिक सूक्ष्म, अमूर्तिक स्वभावी हूँ मैं।

प्रकाश से भी है अधिक गति, राजू चौदह गति मेरी।
सुमेरू से भी अधिक स्थिर, टंकोत्कीर्ण ध्रुवरूप/(ज्ञायक) हूँ मैं।
सूर्य से भी अधिक प्रकाशी, ज्ञानज्योति स्वरूप हूँ मैं।
मधुर से भी अधिक मधुर, ज्ञानामृत स्वरूप हूँ मैं।
कमल से भी अधिक निर्लिप्त, वीतरागी स्वरूप हूँ मैं।
अग्नि से भी अधिक दाहक, कर्मदहन स्वरूप हूँ मैं।
वज्र से भी अधिक कठोर, ध्रुव स्वभावी हूँ मैं।
वायु से भी अधिक लचीला, उत्पाद व्यय/(अगुरुलघु गुण) स्वरूप हूँ मैं।
रत्न से भी अधिक मूल्यवान हूँ, रत्नत्रय स्वरूप हूँ मैं।
चक्रवर्ती से भी वैभवशाली मैं, आत्मवैभव सम्पन्न हूँ मैं।
इन्द्र से भी शक्तिशाली हूँ मैं, अनन्तवीर्य सम्पन्न हूँ मैं।
काल से भी अपराजयी हूँ मैं, अजर-अमर-अविनाशी हूँ मैं।
मैं हूँ सच्चिदानन्द स्वरूप, अक्षय अनन्त गुणमय हूँ मैं।
मौलिक स्वतंत्र परम सत्य हूँ, 'कनक' चैतन्य द्रव्य रूप हूँ मैं।

शरीर रहित होने पर लाभ
(मेरा शुद्ध-स्वरूप)

चाल : 1. शत-शत वन्दन..... 2. सायोनारा..... 3. छोटी-छोटी गैया.....

शरीर रहित यदि मैं होता.....समस्याओं से रहित होता.....
जन्म जरा मृत्यु रहित होता.....सत् चित् आनन्द अमूर्त होता.....ध्रुवपद.....

क्षुधा तृषा रूजा रहित होता.....असि मसि कृषि रहित होता.....
वाणिज्य शिल्प सेवा नहीं करता.....आनन्द धन कृतकृत्य मैं होता.....
स्वामी-भृत्य भेद-भाव नहीं होता.....छोटा-बड़ा भेद-भाव नहीं होता.....
शोषक-शोषित का भाव न होता.....सत्य समता सुखमय मैं होता.....(1).....

सर्दी-गर्मी की न होती समस्या.....संयोग-वियोग की न होती समस्या.....
शंका-चिन्ता न अशान्ति होती.....शान्ति तृप्ति व पूर्णता होती.....
शत्रु-मित्र भेद-भाव नहीं होता.....विकल्प न हानि-लाभ का होता.....
विकल्प न जय-पराजय का होता.....निर्विकल्प चिन्मय होता.....(2).....

राग-द्वेष-मोह से रहित होता.....रत्नत्रयमय स्वरूप होता.....
आकर्षण-विकर्षण रहित होता.....संक्लेश-संकल्प से रहित होता.....

द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित होता.....उत्पाद व्यय ध्रौव्यमय मैं होता.....
अन्त रहित मैं अनन्त होता.....'कनक' स्वयं पूर्ण अमृत होता.....(3).....

शक्ति के अनुसार तप-त्याग मैं करूँ
(दंभ-ढोंग-रोगकारक तप आत्मा साधना में बाधक)

राग : छोटी-छोटी गैया.....

शक्ति अनुसार बाह्य तप मैं करूँ, सत्य समता शान्ति का भाव मैं धरूँ।
तन-मन स्वस्थ्यकर तप मैं करूँ, आत्मविशुद्धि मैं सतत करूँ।।(1)

शरीर आसक्तिमय काम न करूँ, शरीर माध्यम से साधना करूँ।
साधना योग्य शरीर-स्वस्थ्य मैं करूँ, साधना बाधक देह दण्ड न करूँ।।(2)

आत्म विशुद्धि ही है सही साधना, केवल देह दण्ड नहीं साधना।
अंतरंग तप हेतु बाह्य तप (मैं) करूँ, दिखावा व देह दण्ड हेतु न करूँ।।(3)

दिखावा देह दण्ड से होते दोष अनेक, अहंकार ढोंग व रोग अनेक।
अहंकार से पापकर्म बन्धन होता, ढोंग से मायाचारी का दोष लगता।।(4)

अभी नहीं उत्तम संहनन व काल, उत्तम नहीं आहार व वातावरण।
जिससे अनेक रोग होते देह में, उत्तम साधना न होती रोगी देह में।।(5)

शरीर पीड़ा से होता चंचल मन, जिससे न होता अध्ययन व ध्यान।
ध्यान अध्ययन बिन न होती आत्म विशुद्धि,
आत्म विशुद्धि बिन न मिलती शुद्धि/(सिद्धि)।।(6)

मन चंचल से होता पाप का बन्ध, पाप से होता संसार-प्रबंधन।
समता की साधना से कर्म विनाश, 'कनक' का लक्ष्य है आत्म विकास।।(7)

मेरी प्रवृत्ति से मेरी उपलब्धियाँ
'मेरी सनम्र सत्य ग्रहिता समता निस्पृहता से प्राप्त लाभ'

राग : 1. कहा गये चक्री..... 2. मंगतराय जी कृत 12 भावना.....

सद् प्रवृत्ति से जो मेरी, हो रही है उपलब्धियाँ।
आत्म-विश्लेषण व शिक्षा हेतु कर रहा हूँ वर्णन।।

सनम्र सत्यग्राही रहा हूँ, सदा हर क्षेत्र काल में।
जिससे ज्ञान बढ़ रहा है अनुभव सह हर क्षेत्र में।।

पूर्वाग्रह हठग्राह व भेद-भाव को छोड़कर।
सत्य-तथ्य को ग्रहण करता हूँ संकीर्णता त्यागकर।।

गुण-गुणी व ज्ञान-ज्ञानी प्रति, रहता हूँ सदा विनम्र।
मद-मत्सर ईर्ष्या छोड़कर रहता हूँ सदा विनम्र।।
जिससे मुझे मिलते हैं ज्ञान गुण व सम्मान।
उद्दण्ड उत्श्रृंखल रहित बनता हूँ शालीन।।

साम्यभाव रखता हूँ सदा, हर जीव हर क्षेत्र में।
धनी-गरीब भक्त शिष्य, सधर्मी-विधर्मी में।।
कोई आये या न आये, सेवा करे या नहीं।
दान करे या न करे, प्रशंसा करे या नहीं।।

बाह्य प्रभावना हो या रहूँ एकान्त मौन में।
बाह्य प्रभावना भीड़ बिन भी रहूँ साम्य भाव में।।
इसी से मुझे शान्ति मिलती, तथाहि तृप्ति।
संकल्प-विकल्प-संक्लेश से मिलती है मुक्ति।।

अनुभव व ज्ञान बढ़ते निर्मल होता परिणाम।
वैर विरोध वाद-विवाद, नहीं होते दुश्मन।।
वात्सल्य सहयोग एकता बढ़े, बढ़ते धार्मिक काम।
ध्यान-अध्ययन मनन-चिन्तन, बढ़ते लेखन काम।।

आकर्षण-विकर्षण घटते न होता है भेद-भाव।
निस्पृहता से समता आती होता पावन भाव।।
अपेक्षा-उपेक्षा-प्रतीक्षा नशे, नहीं होते राग-द्वेष।
ख्याति पूजा लाभ नाश होते, होती तृप्ति विशेष।।

धन मान सम्मान व भीड़ का न होता मोह।
निर्मल प्रभावना होती, न होता प्रतिस्पर्द्धा-मोह।।
अतएव मैं इन्हीं गुणों को बढ़ा रहा हूँ विशेष।
''कनकनन्दी'' का परम लक्ष्य ''सत्य समता व सुख''।।

आध्यात्मिक कविता

मेरे लिए पावन काल-क्षेत्र व धर्म

चाल : 1. शत-शत वन्दन..... 2. जहाँ डाल-डाल पर.....

वह काल/(क्षण/मुहूर्त/दिन) मेरे लिए पावन है, जिस क्षण मैं स्वयं को पाऊँगा.....

वह क्षेत्र मेरे लिए तीरथ है, जिस क्षेत्र में स्वयं को (मैं) पाऊँगा.....
जय स्वात्मन.....शुद्धात्मन.....निजात्मन.....(स्थायी).....

वह भाव ही मेरे लिए धर्म है, जिस भाव से स्वयं को (मैं) पाऊँगा.....
वह साधन ही मुझे ग्राह्य है, जिस साधन से स्वयं को पाऊँगा.....

यह है मेरे लिए श्रेष्ठ-ज्येष्ठ, अनुकरणीय-आदरणीय.....
आदर्श आराधनीय पूजनीय, ध्यान अध्ययन व ग्रहणीय.....

इसी के अनुकूल जो द्रव्य क्षेत्र, काल भाव-साधन ग्रहणीय.....
इसी के प्रतिकूल जो द्रव्य आदि, सभी ही हेय व त्यजनीय.....

अन्य सभी है (मेरे लिए) मिथ्या मोह, ज्ञेय होने पर भी है परभव.....
नहीं मानूँ उसे मैं उपादेय, आत्म स्वभावमय निज भाव.....

रीति-रिवाज या मत जाति पंथ, भाषा परम्परा (या) राष्ट्र ग्रन्थ.....
पूर्वाग्रह संकीर्णता लोकमत, राजनीति कानून (व) नीति ग्रन्थ.....

स्व-उपलब्धि हेतु जो बाधक हो, न आत्मशान्ति में साधक हो.....
स्व-पर-विश्व हेतु नाशक हो, नहीं ग्राह्य सभी जो अनात्म हो.....

वीतरागी सर्वज्ञ ने (भी) ऐसा किया, उपदेश द्वारा भी यह कहा.....
आचार्य गुरु ने भी ऐसा लिखा, मेरे अनुभव ने भी ऐसा लखा/(पाया)....

अज्ञानी मोही जो रागी-द्वेषी, जो संकीर्ण क्रूर व पक्षपाती.....
अनुकरण उन्हीं का मैं नहीं करूँ, आत्म-उपलब्धि 'कनक' मैं करूँ.....

मेरे सकारात्मक सोच-कथन एवं चारित्र-व्यवहार

चाल : 1. यमुना किनारे..... 2. छोटी-छोटी गैया..... 3. सायोनारा.....

सकारात्मक सोच मैं किया ही करूँ.....
सकारात्मक काम मैं किया ही करूँ।
सकारात्मक हित-मित-सत्य मैं कहूँ.....
सकारात्मक-समीक्षा किया मैं करूँ।।स्थायी।।

मेरे लिए आध्यात्मिक सकारात्मक, भाव विशुद्धि व अनेकान्त युक्त।
स्व-पर व विश्व हित से युक्त, संकीर्ण स्वार्थ व कषाय रिक्त।।

सत्य समता व शान्ति मैं चाहूँ, वाद-विवाद-कुतर्क नहीं चाहूँ।

पर-अहित बिन मैं स्व-हित करूँ, स्व-अनुभव से आगे ही बढ़ूँ।।

कमल के सम मैं निर्लिप्त रहूँ, अज्ञानी-मोही से मैं अलिप्त रहूँ।
प्रतिस्पर्द्धा बिन मैं आगे ही बढ़ूँ, दूसरों से संघर्ष बिन मैं बढ़ूँ।।

सबसे शिक्षा लूँ कुछ न बोलूँ, निन्दा-अपमान रूप नहीं बोलूँ।
सुयोग्य को ही स्पष्ट अनुभव बताऊँ, हित-मित-प्रिय से अन्य को कहूँ।।

समय-शक्ति का सदुपयोग मैं करूँ, अन्य हेतु इन्हीं का अपव्यय न करूँ।
अन्य हेतु राग-द्वेष-मोह न करूँ, अन्य हेतु स्वयं को पापी न करूँ।।

स्व-शोध-बोध-परीक्षण मैं करूँ, आध्यात्मिक-आदर्श स्वयं मैं बनूँ।
आत्मदीप सह परदीप मैं बनूँ, 'कनक' सच्चिदानन्द रूप मैं बनूँ।।

मेरी पावन चार वैश्विक अभिलाषा

चाल : 1. आत्मशक्ति..... 2. कसमे-वादे..... 3. शत-शत वन्दन..... 4. सायोनारा.....
5. क्या मिलिये..... 6. छोटी-छोटी गैया..... 7. गरजत-बरसत.....

सभी जीव प्रति मैत्री भाव हो, नहीं हो मेरी द्रोह भावना।
अदुःखकारक भाव हो मेरा, नहीं हो मेरी दुष्ट भावना।।
वसुधैव कुटुम्ब भाव हो मेरा, आत्मदृष्टि से सम भावना।
ऊँच-नीच भेद-भाव मेरा न हो, अपना-पराया क्षुद्र भावना।।
शत्रु-मित्र का भाव कभी न हो, नहीं हो मेरा स्वार्थ भावना।
राग-द्वेष-मोह विरहित हो मेरा, आकर्षण-विकर्षण रिक्त भावना।।

गुणी जन प्रति हो प्रमोद भाव, आदर-सत्कार-भक्ति भावना।
गुणी से ग्रहण करूँ गुण मैं सदा, गुणी प्रति न हो ईर्ष्या भावना।।
पूजा-प्रार्थना-आराधना-आरती, वन्दन-नमन-नमस्कार भी।
सत्कार-पुरस्कार-सम्मान-आदर, प्रमोद के यह सब पर्यायवाची।।
पंच परमेष्ठी (है) परम गुणी सदा, जो आध्यात्मिक गुण सम्पन्न।
वे तो परम वन्दनीय मेरे, अन्य गुणी यथायोग्य आदर।।

क्लिष्ट जीव प्रति कृपा भाव हो, करूणा भाव से हूँ ओतप्रोत।
उनके हित हेतु प्रवचन करूँ, लेखन-प्रेरणा करूँ सतत।।
रोगी प्रति तो भाऊँ हो निरोगी, दुःखी-गरीब हो सदा सुखी।
पीड़ित पतित संत्रस्त भयभीत, सभी जीव हो जाये सुखी।।
शोषित हो तो शोषण मुक्त हो, दास हो तो दासत्व से मुक्त।

दीन-हीन बाल/(गृह) मजदूर हो तो, पाये सम्मान हो जाये मुक्त।।

विपरीत वृत्ति प्रति माध्यस्थ भाव हो, नहीं करूँ ईर्ष्या-द्वेष-घृणा।
उनके लिए भी शुभ भाव करूँ, बने वे भी सभी अच्छा-सच्चा।।
अग्नि न बुझती ईंधन से कभी, तम से न नशता तम कभी।
अज्ञान मिथ्या पाप भी न नशता, अज्ञान मिथ्या पाप से कभी।।
अज्ञान-मिथ्या-पाप सहित जीव, होते है विपरीत वृत्ति वाले।
अज्ञान आदि नाश होने पर वे, हो जायेंगे वे सुशील वाले।।

अन्य के कारण मैं क्यों बनूँ, दुष्ट दुर्जन व दुराचारी।
क्रोधी मानी लोभी व मायावी, संक्लेशित दुःखी पापाचारी।।
निर्लिप्त रहूँ मैं कमल के समान, सर्वज्ञ सम रहूँ (मैं) ज्ञाता दृष्टा।
सत्य समता शान्ति को मैं पाऊँ, 'कनक' की पावन है अभिलाषा।।

अनन्त बिन कहाँ सुख पावे?!

परम स्वतन्त्रता में ही सुख

नवीन वर्ष की महत्वाकांक्षी योजना

चाल : 1. मेरो मन अनत कहाँ सुख पावे..... 2. ओमकार स्वरूपा (मराठी).....

मेरा भाव...अनन्त बिन.....कहाँ सुख...पावे रे ऽऽऽ
संख्यात...असंख्यात.....समाप्त होते (हैं), पुनः पतन...हो जावे ऽऽऽ (1)

अनन्त है...निज आत्मिक (स्व) भाव.....कर्म नष्ट से प्रगटावे ऽऽऽ
अक्षय...अविनाशी...चिदानन्दमय.....सत्य शिव सुन्दर होय ऽऽऽ (2)

कर्मजनित तो संख्यात-असंख्यात.....उपलब्धि मात्र होय ऽऽऽ
मानव विद्याधर भोगभूमिज.....स्वर्ग-वैभव तक होय ऽऽऽ (3)

क्षायोपशमिक भाव/(आदि) होने से.....(पूर्ण)/शुद्ध रूप न प्रगटाय/(होय) ऽऽऽ
जिससे न अनन्त गुण उद्भवे/(प्रगटे).....कर्म पराभूत होय ऽऽऽ (4)

कर्माधीन से...स्वतंत्र(ता) कहाँ.....परतंत्र/(दास/गुलाम) सम वृत्ति होय ऽऽऽ
स्वामी/(मालिक) जो देता, वह ही मिलता/(गुलाम भोगता).....बासी या जूठन होय ऽऽऽ (5)

इसी हेतु ही...संग्राम छेड़ा हूँ.....पूर्ण स्वतंत्र(ता)/(स्वराज्य/सुराज्य) हेतु ऽऽऽ
सत्य-समता व शान्ति (के) द्वारा.....कर्म-विनाश के हेतु ऽऽऽ (6)

इसी से कुछ भी न कम चाहिये.....स्वर्ग तक के वैभव ऽऽऽ
ख्याति पूजा लाभ...ईर्ष्या तृष्णा काम.....मोह भाव...भौतिक वैभव ऽऽऽ (7)

मुझे तो चाहिये...स्वयं का वैभव.....जो है स्वतंत्र/(सम्पूर्ण)-स्वरूप ऽऽऽ
सार्वभौम व सर्वोदयमय.....'कनक' का निज स्वरूप ऽऽऽ (8)

बेदला, दिनांक - 02.01.2014, रात्रि 10.20

धन्य है मेरा भाग्य
मेरा त्याग एवं मेरी उपलब्धि

धन्य है मेरा भाग्य जगा है, आत्मज्ञान में सतत लगा है।(हूँ)।।
त्याग के विवाह-बन्धन परिवार, ज्ञान-ध्यान में सतत लगा है।।धृ।।
जीविका निर्वाह साधनभूत, धनार्जन का नहीं है काम।
निवास हेतु गृह निर्माण की, आवश्यकता ही हुई है शून्य।।
परिवार (व) समाज राष्ट्र के द्वन्द्व, संक्लेश के काम भी शून्य।
भौतिक लाभ-हानि-नाश से, आत्म साधना होती है शून्य।।
निर्द्वन्द्व निष्कम्प निस्पृह भाव से, आत्मशुद्धि में सतत रत।
मोह-ईर्ष्या-द्वेष-घृणा पक्षपात परे, समता शान्ति से स्वाध्यायरत।।
संकल्प-विकल्प संक्लेश रहित, ज्ञानानन्द का मैं करहूँ भोग।
सहज सुलभ आहार औषधि/(निवास), शरीर का स्वतः हो रहा निर्वाह।।
देश-विदेशों के शिष्य-भक्तजन, कर रहे स्वतः धर्म के कार्य।
ख्याति पूजा लाभ संक्लेश सहित, मुझे न करना है कोई भी कार्य।।
जिसे मैं त्याग किया वह है मेरा मल, उसे मैं कभी न/(क्यों) करूँ स्वीकार।
मेरा स्वरूप ही मुझे तो चाहिए, ''कनक'' त्यागा है सर्व संसार।।

आधुनिकता की अन्धी दौड़ की त्रासदी
विवश मानव मैं पायो !

चाल : पायोजी मैंने रामरतन धन पायो.....

पायोजी मैंने विवश मानव पायो.....2
राग द्वेष मोह काम स्वार्थ से, विवश मैंने है पायो...पायोजी.....(स्थायी).....
जैसे पंक में फँसा हुआ हाथी, वैसा ही मानव को पायो.....

इसी से मानव अस्त-व्यस्त व, संत्रस्त होता (मैं) पायो...पायो.....(1)

बाल-काल में पढ़ाई ट्यूशन, परीक्षा डिग्री में पायो.....
युवा-अवस्था में नौकरी विवाह, व्यापार कृषि में पायो...पायो.....(2)

वृद्ध-अवस्था में रोग दुर्बलता, परावलम्बी आदि पायो.....
मानव जीवन व्यर्थ में जाता है, मोही/(जीव) जान न पायो...पायो.....(3)

आधुनिकता की अन्धी दौड़ में, भेड़-भेड़िया रूप पायो.....
दया दान सेवा परोपकार व, आत्म-विशुद्धि कम पायो...पायो.....(4)

सत्ता सम्पत्ति व प्रसिद्धि हेतु, संक्लेशमय पायो.....
संकीर्ण कट्टर धर्म आदि हेतु, ईर्ष्या घृणा मय पायो...पायो.....(5)

सत्य समता शान्ति उदारता, संतोष मय न पायो.....
इन सबके लिए रूचि ज्ञान(व) समय, पुरुषार्थ कम पायो...पायो.....(6)

इसी निमित्त से शिक्षा लेकर, निस्पृह साम्य बढ़ायो.....
स्व-साधना/(हित) में अधिक संलग्न हूँ, 'कनक' अनुभव से पायो...पायो.....(7)

स्वार्थ व प्रसिद्धि के सभी दास है
(वीतरागी निस्पृह संत ही स्वामी है)

चाल : 1. शत-शत वन्दन..... 2. सायोनारा..... 3. रघुपति राघव.....

मानव-मानव का दास बनता (है), स्वार्थ या प्रसिद्धि हेतु दास बनता (है)।
कानूनतः दासप्रथा समाप्त हुई, व्यवहार में यह चालू ही रही।।(1)

धन हेतु नौकर कोई बनता, अन्य को रिझाने हेतु काम करता।
व्यवसायी कलाकार-वाद्यवादक, नृत्यकार गायक सभी है भृत्य।।(2)

वोटों के लिये नेता दास बनता, दूसरों को रिझाने का काम करता।
हाव-भाव व्यवहार भाषण आदि/(देता), विदुषक के समान स्वांग रचता।।(3)

धन-जन ख्याति हेतु प्रवचन करता, अन्य को रिझाने हेतु भाषण देता।
ढोंगी पाखण्डी साधु अथवा गृहस्थ, पेशावर कलाकार समान भृत्य।।(4)

भोग विलासिता हेतु कोई दास बनता, फैशन-व्यसनों का कोई दास बनता।
वीतरागी निस्पृह संत होते हैं स्वामी, इसी हेतु ''कनकनन्दी'' बना है मुनि।।(5)

आधुनिक साधन भी बन रहे है अभिशाप

राग : शत-शत वन्दन.....

आधुनिक साधन भी अभिशाप बन गये, अनेक प्रदूषण इससे बन गये।
रोग व दुर्घटनाओं के हेतु बन गये, फैशन-व्यसनों के हेतु बन गये।।(स्थायी)

शारीरिक श्रम भी कम हो रहा (है), पैदल चलना भी कम हो रहा (है)।
गृहकार्य भी यंत्रों से हो रहा, खाना बनाना भी यंत्रों से हो रहा।।(1)

देह का संचालन कम हो रहा (है), रक्त संचालन भी मन्द हो रहा (है)।
प्राणवायु पर्याप्त भी न मिल रही, पाचन क्रिया भी सही न रही।।(2)

मांसपेशी व हड्डी दुर्बल हुई, मोटापा की बीमारी खूब बढ़ रही।
ग्रहण-स्मरण शक्ति मन्द हो रही, सामाजिकता एकता मन्द हो रही।।(3)

रक्तचाप हृदयघात रोग बढ़ गये, अस्थि रोग कैंसर खूब बढ़ गये।
मधुमेह देह-दर्द भी अधिक हुए, तनाव अनिद्रा रोग खूब बढ़ गये।।(4)

यंत्र चालित मानव गुलाम हो गया, यंत्र के बिना पंगु हो गया।
भस्मासुर सम भोक्ता को खा रहा, रक्त बीज सम फैला जा रहा।।(5)

आविष्कार से भी आवश्यकता बढ़ी, आवश्यकता से तृष्णा भी बढ़ी।
अस्त-व्यस्त-संत्रस्त हुआ मानव, सचेत हेतु 'कनक' रचा ये काव्य।।(6)

मम ज्ञानामृत रस

पीओ/(पायो) जी मैंने ज्ञानामृत रस पीओ/(पाओ)।
सच्चिदानन्द मम स्वरूप से यह रसामृत पीओ/(पाओ)।।(1)

क्रोध-मान-माया-लोभ विवर्जित, यह रसायन पाओ।
काम-मोह-ईर्ष्या-तृष्णा से रहित, यह समरस पाओ।।(2)

यह रस ही मेरा स्वरूप है, अन्य से प्राप्त न होय।
यह ही मेरा आत्म-वैभव है, यह ही मेरा ध्येय।।(3)

यह ही मेरा साध्य-साधन है, गुण-धर्म-सत्व होय।
यह ही मेरा सत्ता-सम्पत्ति है, प्रसिद्धि-विभूति होय।।(4)

यह ही मेरा भोग-उपभोग, उपयोग प्रयोजन होय।
पूजनीय आराधनीय वन्दनीय, आदरणीय प्रणम्य सेव्य होय।।(5)

तरण तारण भव निवारण, संकट हरण गुरु होय।
माता पिता बन्धु बान्धव, सहायक सरणादाता होय।।(6)

पाप-निवारक पुण्य-सम्पादक, मोक्षदायक प्रभु होय।
शुद्ध-बुद्ध व सिद्ध स्वरूप भी, 'कनक' का निज रूप होय।।(7)

स्वभाव स्वरूप स्वधर्म ही स्थिर विभाव स्वरूप अधर्म अस्थिर

चाल : 1. सायोनारा..... 2. यमुना किनारे..... 3. गजानना.....

यथा समुद्र में तरंगें चलती, तथाहि जन्म-मरण है।
शिशु किशोर युवक वृद्ध, तथाहि उत्थान-पतन है।।स्थायी।।

राग द्वेष काम मोह ईर्ष्या तृष्णा घृणा वैरत्व भोग लालसा है।
संयोग-वियोग अपना-पराया भेद-भाव द्वन्द्व संक्लेश है।।(1)

ये सर्व कर्मजनित अवस्थाएँ, नहीं शाश्वत-स्थिर है।
समुद्र के समान जीव (तेरी) अवस्था, अनादि-अनिधन रूप है।।(2)

चिदानन्दमय अक्षय अव्यय, अनन्त गुण गण स्वरूप है।
जन्म-मरण व शिशु-वृद्धादि, रिक्त सिद्ध-बुद्ध शिव रूप है।।(3)

जन्म में न हर्ष मरण में न दुःख, न हो शिशु आदि अवस्था में।
उत्थान-पतन जय-पराजय, लाभ-हानि आदि अवस्था में।।(4)

ये सब अनन्त बार हो गये, ये तो सरल व सुलभ है।
जब तक मोक्ष न प्राप्त करते (हो) तब तक सरल-सुलभ है।।(5)

इसी से भिन्न कर्म से रहित, विशुद्ध अवस्था दुर्लभ है।
अभी तक एक बार न मिली है, वह तो अपूर्व-अलभ्य है।।(6)

उसे प्राप्त करो कृतकृत्य होओगे, पाओगे आत्म-वैभव है।
अक्षय अनन्त सुखी ही बनोगे, 'कनकनन्दी' का निज वैभव है।।(7)

बुद्धिमान व्यक्ति समय पर सीखते हैं, जबकि मूर्ख उस समय सीखते हैं जब विवशता हो, या स्वयं की स्वार्थ पूर्ति हो!

-आचार्य कनकनन्दी

मोही–अज्ञानी एवं निर्मोही ज्ञानी के भाव–व्यवहार

चाल : 1. मधुवन के मन्दिरों में..... 2. आत्मशक्ति..... 3. जीना यहाँ.....

खाना-पीना सोना-जागना ही, काम जीव(न) का नहीं है,
पढ़ाई-बड़ाई-चमड़ी, दमड़ी ही शान नहीं है।
जन्म-मरण-दुःख, सुख ही जीवन नहीं है।
राग-द्वेष-काम-मोह, कोई भाव श्रेय/(उच्च) नहीं है।।स्थायी।।

स्पर्श रस गन्ध वर्ण शब्द ही सत्य नहीं है,
दृश्य श्राव्य स्पर्श रस घ्राण ही ज्ञान नहीं है।
नदी पर्वत मिट्टी पत्थर यथार्थ राष्ट्र नहीं है,
दृश्यमान वस्तु मात्र पूर्ण विश्व नहीं है।।...राग-द्वेष...(1)

रूढ़ि-परम्परा-रीति ही, चारित्र तो नहीं है,
पूजा-पाठ क्रिया-काण्ड पूर्ण धर्म तो नहीं है।
संविधान कानून ही नीति-नियम नहीं है,
भौतिक विज्ञान मात्र, सत्य-तथ्य/(ज्ञान) तो नहीं है।।...राग-द्वेष...(2)

आत्मशान्ति कार्य भी है यथार्थ से काम है,
दया दान सेवा उदारता यह ही सही शान है।
चिदानन्दमय तत्त्व शुद्ध-बुद्ध जीव है,
शान्ति समता अहिंसा धैर्य क्षमा सही भाव है।।...राग-द्वेष...(3)

रूपी-अरूपी सर्व द्रव्य ही परम सत्य है,
मन-इन्द्रिय परे भी सत्य-तथ्य ज्ञान है।
पशु-पक्षी-वृक्ष-मनुष्यादि भी सम्पूर्ण राष्ट्र है,
दृश्यातीत सर्वद्रव्य भी सम्पूर्ण विश्व/(ब्रह्माण्ड) है।।...राग-द्वेष...(4)

पावन भाव-व्यवहार सर्व होता है चारित्र,
सर्वजीव सुखकारी होता है यह धर्म।
सत्य को प्राप्त कराये वह है सच्ची नीति,
सत्य-तथ्य सभी ही होता वस्तु स्वरूप।।...राग-द्वेष...(5)

मोही स्वार्थी संकीर्ण न जानते है यह,

सत्यग्राही पावन जन सब मानते है यह।
मृगमरीचिका को जल मानते हैं मोही,
'कनकनन्दी' को मान्य, जो होता है सही।।...राग-द्वेष...(6)

शक्ति आराधना का वास्तविक स्वरूप!

दशविध शक्ति की जागृति

मूल सृजन-आचार्य कनकनन्दी
सरलीकरण-मुनि सुविज्ञसागर

चाल : ज्योति कलश छलके.....

मम आत्म शक्तिऽऽऽ...जागो महा शक्तिऽऽऽ...
जागो मेरी श्रद्धा शक्ति...जागो प्रज्ञा शक्तिऽऽऽ...मम आत्म शक्तिऽऽऽ...(स्थायी)...

जागो मेरी क्षमा शक्तिऽऽऽ...नष्ट करो है क्रोध शक्तिऽऽऽ
नम्रता शक्ति से...नष्ट मान शक्ति...मम आत्म शक्तिऽऽऽ

आर्जव शक्ति तुम भी जागोऽऽऽ...नाश करो है माया शक्तिऽऽऽ
सत्य की शक्ति...मोह-मिथ्या नाशिनी...जागो महा शक्तिऽऽऽ

जागो-जागो शुचि शक्तिऽऽऽ...नाश करो है तृष्णा शक्तिऽऽऽ
शील शुचि युत बनूँ...सनम्र सत्यग्राही...मम आत्म शक्तिऽऽऽ

संयम शक्ति भी जागो तुमऽऽऽ...असंयम का नाश करो तुमऽऽऽ
मन इन्द्रिय वश से...बनूँ आत्मानुशासी...मम आत्म शक्तिऽऽऽ

धैर्य शक्ति तुम भी जागोऽऽऽ...अधीरता दूर करोऽऽऽ
धीर-वीर बनकर...बनूँ अचल गम्भीर...जागो महा शक्तिऽऽऽ

जागो मम ध्यान शक्तिऽऽऽ...जिससे नष्ट हो कर्म शक्तिऽऽऽ
आत्म स्थिरता से...पाऊँ ज्ञायक शक्ति/(भावी)...मम आत्म शक्तिऽऽऽ

जागो मेरी ब्रह्म शक्तिऽऽऽ...अनात्म भाव विनाशीऽऽऽ
अक्षय अनन्त युत...विस्तारूँ स्वभाव...मम आत्म शक्तिऽऽऽ

सुख शक्ति शीघ्र जागोऽऽऽ...सर्व दुःख की विनाशकारीऽऽऽ
शुद्ध-बुद्ध शिव बनूँ...सच्चिदानन्द बनूँ...मम आत्म शक्तिऽऽऽ

तेरी जागृति हेतु मैंऽऽऽ...समता की साधना करूँऽऽऽ
त्याग-स्वाध्याय करूँ...निस्पृहता व तप करूँ...जागो महा शक्तिऽऽऽ

भौतिक शक्ति से परे होऽऽऽ...आप ही मेरी परम शक्तिऽऽऽ

अविनाशी अविकारी...विश्व की परा शक्ति...मम आत्म शक्तिऽऽऽ
मेरे द्वारा मुझमें हीऽऽऽ...प्रगट हो सर्व शक्तिऽऽऽ
आह्वान जागृत करूँ...मुझमें महा शक्ति...जागो आत्म शक्तिऽऽऽ

वैश्विक सिद्धान्तों की विशेषताएँ

तर्ज : कोई दीवाना कहता है.....

1. शान्ति जैसी न दुनिया में, कोई सम्पत्ति होती है।
शान्ति का साथ मिल जाये, वहीं विमुक्ति होती है।
शान्तिमय जिन्दगी जो बिताये अपने जीवन काल में।
वो पाता हरदम खुशियाँ, न मन में पीड़ा होती है।।

2. सत्य जैसे न दुनिया में, कोई तथ्य ही होता है।
सत्य जैसा न विश्व में, कोई शाश्वत होता है।
सत्यमय पूर्ण जीवन ही, न्यायवन्त/(न्यायशील) शान्त होता है।
जो पूर्ण सत्य हो गया, वह भगवान् होता है।।

3. अनेकान्त ही विश्व का, बड़ा सिद्धान्त होता है।
अनेकान्त से ही प्रत्येक, बड़ी उलझन सुलझती है।
विश्वगुरु अनेकान्त का जो आशीष पाता है।
वह अनन्त ज्ञानी बन, अन्त में मोक्ष जाता है।।

4. स्याद्वाद कथन ही, सच्चा कथन होता है।
सापेक्ष कथन से ही, सत्य का वर्णन होता है।
सत्य वर्णन से ही सही परिज्ञान होता है।
सही ज्ञान से ही सम्यक् परिणाम मिलता है/(निर्णय होता है)।।

5. समता ही वैश्विक धर्म, न्याय नीति होती है।
समता से ही सार्वभौम, समाजवाद होता है।
समता से ही सर्वोदय तीर्थ, मोक्षधाम मिलता है।
समता की पूर्णता से, मोक्ष का तत्त्व भी मिलता है।।

6. रत्नत्रय ही सम्यक् रूप, मोक्षमार्ग होता है।
रत्नत्रय से ही सुखरूप, विमुक्ति प्राप्त करता है।
रत्नत्रय की पूर्णता से मोक्ष का तत्त्व होता है।
रत्नत्रयमय जीवन से, कोई भगवान् बनता है।।

समता एवं मौन से मुझे प्राप्त लाभ

चाल : नगरी-नगरी.....

बड़ा सुख पाता आनन्द होता, जब समता-मौन में रहता।
संक्लेश न होता समय न नशता, राग-द्वेष-कलह नहीं होता।।1।।

स्वाध्याय भी होता मनन भी होता, शोध-बोध व लेखन होता।
तन-मन अक्ष भी नहीं थकते, शान्त व स्वस्थ्य तीनों ही होते।।2।।

पाप न बन्धता पुण्य बन्धता, प्राचीन पाप भी नष्ट होता।
अंतरंग तपस्या की वृद्धि होती, आत्मविशुद्धि की वृद्धि होती।।3।।

गंभीरता आती गरिमा बढ़ती, आत्मा की साधना सतत होती।
गला न सुखता मुँह न दुखता, शब्द-प्रदूषण भी नहीं होता।।4।।

मेमोरी भी बढ़ती प्रज्ञा भी बढ़ती, समीक्षा-शक्ति भी बढ़ती।
भीड़ प्रसिद्धि की चाह न होती, एकान्त शान्त शान्ति भाती।।5।।

नकल न करता डींग न हाँकता, दिखावा-आडम्बर भी नहीं होता।
दोष/(सत्य) को जानता निन्दा न करता, तटस्थ निरपेक्ष ज्ञाता बनता।।6।।

वाचनिक दोषों से मुक्त हो जाता, अप्रिय कटुक अति नहीं बोलता।
वाक्-सिद्धि होती निस्पृहता आती, 'कनक' को आत्म-सिद्धि भाती।।7।।

"पढ़ाई < अध्ययन < स्वाध्याय"

राग : 1. फूलों का तारों का..... 2. क्या मिलिये ऐसे.....

पढ़ाई अध्ययन स्वाध्याय को जानो, उत्तरोत्तर तीनों को श्रेष्ठ मानो।
पढ़ाई केवल है वाचना मात्र.....अर्थ ज्ञान बिना रीडिंग मात्र।।ध्रु.।।

तोता जैसे पढ़ता है पाठ.....ज्ञान-आचरण बिन रटता पाठ।
वैसा ही जो मानव करता.....वह भी तोता के जैसे पढ़ता।।
अपच भोजन सम यह पाठ होता.....स्वार्थ व गर्व को जन्म देता।
आचरण-अनुभव से रहित होता.....सत्य-समता-शान्ति न देता।।(1)

अध्ययन/(पाठ) इसी से भी परे होता.....ग्रन्थों का अनुशीलन होता।
ग्रन्थ निहीत सत्य-तथ्यों का.....समालोचना व व्याख्यान होता।।
तर्क-वितर्क मंथन भी होता.....घटना-विचारों को जोड़ा जाता।
भावना-अनुभव से रिक्त होता.....व्यापार के समान काम होता।।(2)

इसी से भी परे स्वाध्याय होता.....आचरण-अनुभव से सहित होता।
न्याय नीति सदाचार/(शिष्टता) युक्त होता.....भावना संवेदना सहित होता।।
पर पीड़न का काम न होता.....सादा जीवन उच्च विचार होता।
हिताहित विवेक सहित होता.....स्व-पर हितकर भाव/(काम) होता।।(3)

स्वाध्याय से स्व-पर हित होता.....महान् कार्य भी इसी से होता।
स्वाध्याय से स्व-अध्ययन होता.....स्व गुण-दोषों का अध्ययन होता।।
स्वाध्याय से वाचन-अध्ययन होते.....स्वाध्यायी मानव महान् होते।
स्वाध्याय परम तप भी होता.....'कनक' स्वाध्याय सतत करता।।(4)

आध्यात्मिक एक लाभ अनेक

चाल : 1. छोटी-छोटी गैया..... 2. शत-शत वन्दन..... 3. सायोनारा.....
4. जिन्दगी इक सफर.....

आध्यात्मिक से अनेक लाभ होते है, लौकिक जीवन से मोक्ष तक के।
स्वस्थ्य होते तन-मन-आत्मा, अभ्युदय व मोक्ष-सुख भी मिले।।टेक।।

करोड़ोंपति तो लखपति भी होते, आकाश में यथा अन्य द्रव्य समाते।
आध्यात्मिक में अनेक लाभ समाते, नीति-नियम व सदाचार समाते।।

प्रकाश से यथा अन्धकार नशता, अन्धकार का नया प्रवेश न होता।
उपकरण आदि भी दिखाई देते, अध्ययन-गमनादि कार्य भी होते।।

तथा आध्यात्मिक जब प्रारम्भ होता, सत्यासत्य का परिज्ञान भी होता।
हेय-उपादेय का ज्ञान भी होता, ग्रहणीय-त्यजनीय का ज्ञान होता।।

अनात्म-ज्ञेय का परिज्ञान भी होता, आत्मा-परमात्मा का ज्ञान भी होता।
शुभाशुभ शुद्ध का ज्ञान भी होता, पुण्य-पाप-मोक्ष का ज्ञान भी होता।।

महान् लक्ष्य उदार भाव जन्मते, धैर्य क्षमा सहिष्णुता भाव जगते।
समता शान्ति व संतुष्टी आती, शत्रु-मित्र भेद-भाव दृष्टि नशती।।

तन-मन-आत्मा स्वस्थ्य भी होते, कार्य करने में दक्ष भी होते।
कार्य सम्पादन सही भी होते, स्व-पर हित के कार्य भी होते।।

सुख-दुःख हानि-लाभ नहीं सताते, विघ्न-बाधा भी परास्त होते।
ईर्ष्या-घृणा-तृष्णा नहीं सताती, दीन-हीन-अहंवृत्ति विलीन होती।।

प्रतिस्पर्द्धा बिना विकास होता, भय चिन्ता बिना विकास होता।
शान्ति रूपी सफलता श्रेष्ठ मिलती, 'कनकनन्दी' को यह ही भाती।।

सुख प्राप्ति के उपाय

चाल : शत-शत वन्दन.....

सभी जीव चाहते हैं सुख.....सुख से वे होते हैं खुश।
इसका कारण है आध्यात्मिक.....आत्म-स्वभाव है अनन्त सुख।।ध्रुव।।

स्वभाव कभी न नष्ट होता.....भले उसमें विकार होता।
पानी का स्वभाव यथा है शीतल.....गर्म के बाद भी हो जाता शीतल।।
तथाहि हर अवस्था में जीव.....सुख के लिए करते प्रयास।
सही उपायों से मिलता है सुख.....अन्यथा न मिलता सही सुख।।(1)

सुख प्राप्ति के सही उपाय है.....पावन भावना पावन काम।
सुख देने से सुख ही मिलता.....यथा बोते तथाहि पकता।।
प्रेम/(अहिंसा) देने से प्रेम ही मिलता.....प्रेम होता है आत्मा का गुण।
आत्मिक गुणों से सुख मिलता.....अनन्त होते हैं आत्मिक गुण।।(2)

दान दया व परोपकार.....वात्सल्य सहयोग सदाचार।
क्षमा सहिष्णुता मिलनसार.....संयम धैर्य व शिष्टाचार।।
सत्य समता से मिलता है सुख.....शान्ति संतोष से मिलता है सुख।
इनसे विपरीत जो भाव-काम.....उनसे मिलता है दुःख निदान।।(3)

अन्याय अत्याचार शोषण द्वारा.....फैशन-व्यसन पापों के द्वारा।
पर अपकार व दुःख के द्वारा.....दुःख ही मिलता है संक्लेश द्वारा।।
अनुभव से यह ज्ञात भी होता.....महापुरुषों से भी ज्ञान मिलता।
विज्ञान से भी यह सिद्ध होता.....'कनक' आत्मिक-सुख चाहता।।(4)

"आत्मशक्ति से होता है सर्वोच्च विकास"
(परम-मंत्र-औषधि-उपाय है आत्मशक्ति)

राग : 1. रघुपति राघव..... 2. शायद मेरी शादी.....

सबसे श्रेष्ठ मंत्र व तंत्र.....औषधि उपाय तथाहि यंत्र।
झाड़ा-फूँका तथा कायाकल्प.....रसायन मणि व कल्पवृक्ष।।
आत्मशक्ति जागृति के उपाय.....आत्मविश्वास (व) विवेक शान्ति।
महान् लक्ष्य में एकाग्र मन.....पावन विचार (व) पावन काम।।(1)

इसी से होती शक्ति उत्पन्न.....हर कार्य को करे सम्पन्न।

अन्य तो बाह्य निमित्त होते.....द्रव्य क्षेत्र कालादि होते।।
बीज समान है आत्मिक शक्ति.....जिससे कार्य की होती उत्पत्ति।
जलवायु सम बाह्य कारक.....वृक्ष के लिये होते सहायक।।(2)

इसके अनेक उदाहरण जानो.....तीर्थंकर व गणधर मानो।
चौसठ (64) ऋद्धि से युक्त हुए.....अन्त में अनन्त वैभव पाये।।
इसी हेतु वे सत्तादि त्यागे.....यंत्र-मंत्र-तंत्रादि त्यागे।
परावलम्बन कारक त्यागे.....आत्मशक्ति को जागृति किये।।(3)

रावण कंस व हिटलर.....आत्मशक्ति बिना हुए बेकार।
स्व-पर अपकारी भी बने.....आत्मसुख से वंचित हुए।।
आत्मा में होती अनन्त शक्ति.....विश्व की होती सर्वोच्च शक्ति।
आत्मशक्ति को पाओ मानव.....'कनक' का यह आत्म स्वभाव।।(4)

"आत्मविश्वास है सर्वोदय का मूल"
(अहंकार त्याग व स्वाभिमान सोऽहं भाव से सर्वोदय)
(आत्मिक गुणों का विश्वास-ज्ञान ध्यान-आचरण नहीं है अहंकार)

राग : 1. तुम दिल की धड़कन..... 2. आत्मशक्ति से ओतप्रोत.....

आत्मविश्वास है सम्यग्दर्शन.....जो धर्म का मूल है।
'दंसण मूलो धम्मो' कहते.....मोक्षमार्ग में प्रथम/(प्रवर) है।।ध्रु.।।

आत्मविश्वास होने पर ही.....होता ज्ञान भी सम्यक् है।
जिससे होता आचरण सम्यक्.....तीनों ही मोक्ष मार्ग है।।
सम्यग्दर्शन से होता है विश्वास.....आत्मा के गुण धर्मों का।
चिदानन्दमय अक्षय अनन्त.....ज्ञान दर्शन वीर्य का।।(1)

द्रव्य दृष्टि से शक्ति रूप से.....स्वयं को मानेगा सिद्ध है।
'सव्वे सुद्धा हु सुद्धणया' से.....मानेगा स्वयं को सिद्ध है।।
जैसा मानेगा/(विश्वास) वैसा जानेगा/(ज्ञान).....स्वयं को शुद्ध स्वरूप है।
सिद्ध स्वरूप की प्राप्ति हेतु.....पालेगा सम्यक् चारित्र है।।(2)

आत्मविश्वास होने पर ही.....होगा स्वयं का भी ज्ञान है।
शुद्ध स्वरूप व अशुद्ध रूप भी.....शुद्ध हेतु होगा ध्यान है।।

आत्मविश्वास नहीं है मिथ्यात्व.....नहीं है तुच्छ घमण्ड।
आत्मविश्लेषण नहीं प्रदर्शन.....आत्मध्यान नहीं दंभ।।(3)

शुद्ध का ध्यान करता-करता.....करेगा अशुद्ध त्याग है।
अशुद्ध त्याग करने हेतु.....करेगा सत्प्रयास है।।
अशुद्ध सहित शुद्ध रूप का भी.....विश्वास त्याग न होता है।
ज्ञान सहित आचरण द्वारा.....अशुद्ध को नाश करता है।।(4)

क्रोध मान माया लोभ मो.....काम अशुद्ध भाव है होते।
इन्हीं के कारण अशुद्ध जीव का.....नहीं होता सर्वोदय है।।
रत्नत्रय द्वारा इन्हीं का नाश.....करता धैर्य सहित है।
पुरुषार्थ द्वारा इन्हें नाश कर.....करता वह सर्वोदय है।।(5)

यह है परम विकास उपाय.....अन्य तो आनुषंगिक।
इसे ही कहते मोक्ष की प्राप्ति.....जो है परम पुरुषार्थ।।
धर्म अर्थ काम मोक्ष से सहित.....होते हैं चार पुरुषार्थ
धर्म से सहित मोक्ष से लक्षित.....होते हैं काम व अर्थ।।(6)

धर्म मोक्ष रिक्त अर्थ काम.....दोनों नहीं है सुपुरुषार्थ।
जिससे जीव का होता है विनाश.....होते अनेक अनर्थ।।
अनात्म वस्तु में होता है मद.....न होता आत्मगुणों में।
आत्मिक गुणों के श्रद्धान ज्ञान तो.....होता है मोक्षमार्ग में।।(7)

इसी के बिना तो संसार भ्रमण.....होते हैं अनन्तबार।
अनन्त संसार विनाश के लिये.....कर्त्तव्य आत्मविचार।।
हाय रे मानव! अनात्म के लिये.....करता ज्ञान व ध्यान/(कर्म)।
इसे तो अपना दंभ नहीं माने.....इसे माने स्वाभिमान।।(8)

सत्ता सम्पत्ति व प्रसिद्धि डिग्री में.....करता है अभिमान।
मेरा तन मन मकान जमीन.....कहे व करे अभिमान।।
आत्मिक गुणों के स्मरण ज्ञान को.....मानता है अभिमान।
यह है मोही के मोहात्मक भाव.....अज्ञान व भ्रमज्ञान।।(9)

यथा मद्यपायी मोहित होकर.....न जानता हिताहित/(सत्यासत्य)।
उससे अधिक मोहमद्यपायी.....न जाने आत्म-अनात्म।।
मोह मद तथा अष्ट मद युक्त.....जीव करता अनर्थ।
धर्म मोक्ष दोनों पुरुषार्थ छोड़.....भोगता काम व अर्थ।।(10)

जिसके कारण करता विविध.....अन्याय व अत्याचार।

हिंसा झूठ चोरी कुशील संग्रह.....मिलावट भ्रष्टाचार ।।
स्वाभिमान तथा सोऽहं भाव बिना.....न करता पाप त्याग।
प्रकाश के बिना अन्धकार का.....यथा नहीं होता है तिरोभाव।।(11)

आत्मविश्वास ज्ञान आचरण से.....सभी काम सम्पादन होते।
लोक लोकोत्तर सभी कार्य हेतु.....तीनों आवश्यक होते।।
आत्मविश्वास युक्त आत्मज्ञान कर.....करो हे! आत्मविकास।
इसी हेतु ही 'कनकनन्दी'.....वर्णन किया विशेष।।(12)

"आत्मविश्वास से मिलती है–सफलता"

राग : 1. छोटी-छोटी गैया..... 2. सावन का महीना.....

आत्मविश्वास बिन कोई भी.....काम न हो पाता संभव है।
आत्मविश्वास से ही हो पाता है.....हर काम भी संभव है।।ध्रु.।।

आत्मविश्वास है नींव के सम.....जो हर काम का आधार है।
आधार पर ही टीका रहता है.....विशाल सफल-महल है।।
स्वयं का मूल्यांकन विधेय है.....आत्मविश्वास के आधार(से)।
स्वयं के गुण-अवगुण जानकर.....समग्र व्यक्तित्व के आधार(से)।।(1)

स्वयं के व्यक्तित्व को जानिये.....स्वयं के परीक्षण-निरीक्षण से।
दूसरों की भी सही प्रशंसा से.....तथाहि गुण-दोष समीक्षा से।।
स्वयं की प्रशंसा व समीक्षा से.....यथार्थ निर्णय कीजिये।
स्व-व्यक्तित्व के विकास हेतु.....सही प्रयत्न भी कीजिये।।(2)

कोई ईर्ष्या से स्वगुणों का.....निन्दा अपमान करता है।
अथवा अज्ञान व द्वेषवश.....कोई न स्वीकार करता है।।
उसे भी स्वीकार नहीं कीजिये.....राग-द्वेष मत कीजिये।
दीन-हीन भाव मत कीजिये.....स्व-गुणों की वृद्धि कीजिये।।(3)

निन्दक ईर्ष्यालु से दूर रहिये.....गुणी-प्रशंसक के संग रहिये।
प्रशंसनीय कार्य सदा कीजिये.....नाम-मान का त्याग कीजिये।।
दूसरों की कमी से शिक्षा लीजिये.....स्व दोष दूर सदा कीजिये।
अहं दीन भाव से दूर रहिये.....स्वाभिमान से काम कीजिये।।(4)

असफलता से भी शिक्षा लीजिये.....सफलता से नम्र बनिये।
ईर्ष्या तृष्णा को त्याग कीजिये.....संतोष-सुख न त्याग कीजिये।।

अन्याय अत्याचार मत कीजिये.....सदाचार नीति सदा पालिये।
आध्यात्मिक विकास सदा कीजिये.....'कनक' परम लक्ष्य पाईये।।(5)

अद्वितीय

राग : कोई दीवाना कहता है.....

तीर्थंकर सम न होते एक

चिन्तक होते हैं अनेक, ज्ञानी होते हैं अनेक।
विज्ञानी होते हैं अनेक, तीर्थंकर सम न होते एक।।

आगम सम न होते एक

शास्त्र होते हैं अनेक, लेखक होते हैं अनेक।
भाषण होते हैं अनेक, जिनवाणी/(आगम) सम न होते एक।।

समताधारी साधु सम न एक

संत तो होते हैं अनेक, साधक होते हैं अनेक।
धर्म प्रचारक तो अनेक, समताधारी (साधु) सम न एक।।

मोक्षमार्गी सम न एक

मार्ग होते हैं अनेक, लक्ष्य होते हैं अनेक।
यात्री होते हैं अनेक, मोक्षमार्गी सम न एक।।

आत्मदर्शक सम न एक

दर्शन होते हैं अनेक, प्रदर्शन होते हैं अनेक।
देखने वाले होते अनेक, आत्मदर्शन सम न एक।।

आत्मज्ञान सम न एक

ज्ञानी होते हैं अनेक, शास्त्रज्ञ भी होते अनेक।
विज्ञानी होते अनेक, आत्मज्ञानी सम न एक।।

समताचारी सम न एक

नीतिवान भी होते अनेक, कानूनज्ञ भी अनेक।
लोकाचारी होते हैं अनेक, समताचारी सम न एक।।

आत्मद्रव्य सम न एक

द्रव्य होते हैं अनेक, तत्त्व होते हैं अनेक।
पदार्थ होते हैं अनेक, आत्मद्रव्य सम न एक।।

स्याद्वाद सम न एक

भाषा होती है अनेक, बोली भी होती अनेक।
कथन तो होते हैं अनेक, स्याद्वाद सम न एक।।

अनेकान्त सम न एक

सिद्धान्त होते हैं अनेक, सूत्र होते हैं अनेक।
संविधान होते हैं अनेक, अनेकान्त सम न एक।।

अनुभव सम न एक

तर्क होते है अनेक, नय भी होते है अनेक।
बौद्धिक शक्ति है बहुत, अनुभव सम न एक।।
पढ़ाई होती है अनेक, जानकारी होती अनेक।
स्मरण ज्ञान है अनेक, अनुभव सम न एक।।

सर्वज्ञसम न बड़ा

सूर्य होता बहुत बड़ा, गैलेस्की सूर्य से बड़ा।
आकाश अनन्त बड़ा, सर्वज्ञ सम न कोई बड़ा।।

परमाणु सम न छोटा

वाइरस बहुत है छोटा, निगोदिया सम न है छोटा।
क्वार्क तो अधिक छोटा, परमाणु सम न है छोटा।।

आत्मसम कोई न प्रिय

सत्ता होती बहुत प्रिय, सम्पत्ति भी अधिक प्रिय।
शरीर उससे भी प्रिय, आत्म सम न कोई प्रिय।।

आत्मसुख सम न श्रेय

शरीर सुख भी होता प्रिय, इन्द्रिय सुख तो अति प्रिय।
मानसिक सुख है प्रिय, आत्मसुख सम न है श्रेय।।

समता सबसे श्रेष्ठ

बाह्य तप तो है क्लिष्ठ, अंतरंग तप है श्रेष्ठ।
ध्यान है तप में ज्येष्ठ, समता है सबसे श्रेष्ठ।।

चेतना परम प्राण

धन तो है ग्यारहवाँ प्राण, श्वास तो दशवाँ प्राण।
आयु तो हैश्रेष्ठ प्राण, चेतना है परम प्राण।।

प्राणवायु सम न मूल्य

सोना तो है बहुमूल्य, हीरा तो उससे बहुमूल्य।
उससे अधिक पानी है मूल्य, प्राणवायु सम न कोई मूल्य।।

स्वयं ही स्वयं का कर्त्ता

सत्य है परम ईश्वर, स्वात्मा है स्व-ईश्वर।
कर्म है स्व का विधाता, स्वयं ही स्वयं का कर्त्ता।।

शुद्धात्मा सम न तीर्थ

सातिशय होते हैं तीर्थ, सिद्ध क्षेत्र है अति विशेष।
दान तो है श्रेष्ठ तीर्थ, शुद्धात्मा सम न कोई तीर्थ।।

मोक्ष है आत्मोपलब्धि

दान है पुण्य कर्म, त्याग है मुनिधर्म।
ध्यान है आत्माराधना, मोक्ष है आत्मोपलब्धि।।
'कनक' धर्म को चाहे है, सत्य से होकर युक्त।
समता साधना संयुक्त, शान्ति के हेतु भूत।।

आगम निष्ठ कविता-शंका समाधान परक

कुज्ञान-सुज्ञान-बहूज्ञान-अनन्तज्ञान
(अभी के मानव में नहीं है बहुत सुज्ञान व अनन्तज्ञान)

चाल : अच्छा सिला दिया.....

ज्ञान-स्वभाव जीव अनादि से, जो चेतनमय होते है।
अनन्त ज्ञानमय हर जीव है, ज्ञान से अभाव न होते है।।(1)

अनन्त जीव होते विश्व में, अनन्त कर्म से आवृत्त है।
जिससे अनन्त ज्ञान न होता प्रगट, क्षयोपशमानुसार होता प्रगट।।(2)

घाती कर्म से आवृत्त जीव, होता है मोही व कुज्ञानी।
मोह कर्म से होते मोही जीव, जिससे होते जीव कुज्ञानी।।(3)

ज्ञानावरण से होते अल्पज्ञानी, इसके क्षयोपशम से बहुज्ञानी।
मोह कर्म का यदि होता उदय, बहुज्ञानी भी होते कुज्ञानी।।(4)

ऐसे कुज्ञानी भी करते बहु काम, करते हैं बहुत नवनिर्माण।
अस्त्र-शस्त्र, विष, यंत्र बनाते, जिससे करते जीव-हनन।।(5)

अनादि कालीन कुसंस्कार से, होता है ऐसा कुज्ञान।
यथा पशु-पक्षी कीट पतंग में, होते यथायोग्य विशेष ज्ञान।।(6)

आक्रमण युद्ध व हत्या करते, करते दूसरों को भी गुलाम।
अन्याय अत्याचार व भ्रष्टाचार, करते मिलावट व शोषण।।(7)

फैशन-व्यसन पंच पाप करते, ईर्ष्या द्वेष घृणा व करते विद्वेष।
वैर-विरोध व विप्लव करते, कुतर्क व धूर्त पाखण्ड करते।।(8)

यथा रावण कंस व हिटलर, तानाशाही आतंकवादी क्रूर।
नहीं होते है सुज्ञानी विवेकी, स्व-पर-उपकारी प्राज्ञ नर।।(9)

अभी के अधिकांश मानव भी, होते हैं स्वार्थी धूर्त व क्रूर।
नहीं होते हैं दयालु प्राज्ञ, आत्म-परमात्म के न होते तज्ञ।।(10)

पूर्व काल में अनेक मानव, होते थे सुज्ञानी व प्रचुर ज्ञानी।
मति श्रुत अवधि व मनःपर्यय, तथाहि होते थे केवलज्ञानी।।(11)

संख्यात असंख्यात व अनन्तज्ञानी, होते थे चतुर्थकाल में भी।
संख्यातज्ञानी ही अभी के होते, असंख्य अनन्त के नहीं होते।।(12)

कुछ पशु-पक्षी भी पूर्वकाल में, होते थे सुज्ञानी व तीनज्ञानी।
आत्मा-परमात्मा को भी जानते थे, होते थे मतिश्रुत अवधिज्ञानी।।(13)

अभी होते हैं अधिक कुज्ञानी, नहीं होते अवधि मनःपर्यय भी।
केवलज्ञान तो संभव नहीं, भले होवे वे आचार्य व विज्ञानी।।(14)

आत्मज्ञान बिन सभी ज्ञान भी, होते हैं कुज्ञानी व अल्पज्ञानी।
आत्मज्ञान से अनन्तज्ञान हेतु, ''कनक'' प्रयास करे मोक्ष हेतु।।(15)

जीवन-प्रबन्धन के मूल-सूत्र
(जीवन-प्रबन्धन-सदाचार युक्त एवं मिथ्याचार मुक्त)

राग : दिल की धड़कन.....

वह चारित्र ही सच्चा चारित्र है, जो श्रद्धा प्रज्ञा से सहित है।
ईर्ष्या तृष्णा घृणा से रहित है, जो समता भाव सहित है।।(1)

क्रोध मान माया लोभ काम से, हिंसा झूठ कुशील व चोरी से।
यथायोग्य निवृत्त हो परिग्रह से, तथा योग्य युक्त होता चारित्र से।।(2)

मद्य मांस तम्बाखू का हो त्याग, द्युत चोरी तथा हो वेश्या त्याग।
शिकार तथा परनारी का त्याग, सदाचरण में ये होते गर्भित।।(3)

अन्याय अत्याचार व दुराचार, नहीं होता मिलावट दुराचार।
शोषण दगाबाज व जमाखोर, धोखाधड़ी रहित होता सदाचार।।(4)

नहीं होती कठोरता व क्रूराचार, दयादान सेवा युक्त सदाचार।
निन्दा चुगली से रिक्त सदाचार, सादा जीवन जीना है सदाचार।।(5)

सरल-सहज सह नम्राचार, क्षमा सहिष्णु युक्त सदाचार।
सर्व जीव हितकारी भाव युक्त, होता सदाचार जो सर्वश्रेष्ठ।।(6)

स्व-पर हितकर यह सदाचार, तन-मन स्वास्थ्यकर सदाचार।
इह-परलोक हितकर सदाचार, स्वर्ग मोक्षदायक है सदाचार।।(7)

सदाचार से विपरीत मिथ्याचार, स्व-पर कष्टकर है मिथ्याचार।
तन-मन रोगकर मिथ्याचार, इह-परलोक कष्टकर मिथ्याचार।।(8)

सदा सेवनीय होता सदाचार, असेवनीय सदा मिथ्याचार।
सदाचार ही सर्वोच्च नीति-नियम, धर्म संविधान तथा कानून।।(9)

सदाचार ही जीवन प्रबन्धन, मिथ्याचार है जीवन प्रणाशन।
अन्य प्रबन्धन होता सहकारी, मिथ्याचार होता है नाशकारी।।(10)

सदाचार रिक्त सभी होते व्यर्थ, सदाचार ही है महान् आदर्श।
सदाचार से मानव बने महान्, सदाचारी/(सदाचार) को माने 'कनक' महान्।।(11)

भारत की संतान महान् बने तो कैसे!?
(भारतीय के पीछड़ापन के कारण)

राग : 1. तुम दिल की धड़कन..... 2. क्या मिलिये ऐसे लोगों से.....

बार-बार मुझे एक जिज्ञासा, जो बहुत उद्दीपन करती है।
विश्वगुरु भारत की संतानें, क्यों न अभी महान् बनती है!?(1)

अनेक कारक इसी में संभव, नहीं है उत्तम द्रव्य क्षेत्र काल भाव।
पूर्व उपार्जित कर्मोदय भी, दीर्घकालीन परतंत्र के स्वभाव।।(2)

इसी के साथ अयोग्य शिक्षा, जो रटन्त नम्बर आधारित है।
भ्रष्टाचार युक्त संकीर्ण स्वार्थ युक्त, जो प्रयोग रहित होती है।।(3)

धर्म भी रूढ़ीगत परम्परा आधारित, दिखावा आडम्बर सहित है।
भेदभाव युक्त श्रद्धा प्रज्ञारिक्त, शोध-बोध प्रयोग रहित है।।(4)

व्यापार अप्रामाणिक मिलावट सहित, झूठ व शोषण सहित है।
मानक रहित मर्यादा से रिक्त, हिंसा व जमाखोर सहित है।।(5)

भारतीय संस्कृति युक्त नहीं सम्पूर्ण, संविधान नहीं है अहिंसा पूर्ण।
नहीं है आध्यात्मिक धर्म से सहित, नहीं है निष्पक्ष सार्वभौम।।(6)

न्याय न सम्यक् प्रामाणिक सहित, नहीं है निष्पक्ष उदार युक्त।
शीघ्र न होता न्याय भ्रष्टाचार सहित, धन-जन समय विध्वंसक।।(7)

राजनीति में नहीं नीति व नियम, नहीं है उदारता साम्य भाव।
झूठ से सहित शोषण से युक्त, अन्याय अत्याचार व स्वार्थ भाव।।(8)

नागरिक भी न श्रेष्ठ प्रमाद सहित, कर्त्तव्यनिष्ठा से नहीं युक्त।
नहीं है राष्ट्रीय नहीं प्रमाणिकता, नहीं है एकता प्रेम युक्त।।(9)

स्व-संस्कृति प्रति नहीं समादर, नहीं है संस्कृति का शोध-बोध।
नट-नटी भक्त पाश्चात्य अंधभक्त, दीन-हीन सह अहं बोध।।(10)

मूल बिना यथा वृक्ष न बढ़ता, तथाहि फूल न फल देता।
तथाहि गुण बिना भारतीयों का, सर्वांगीण न विकास होता।।(11)

संकीर्ण पंथ मत जाति भाषा व, शिक्षा राजनीति कानून से।
भारतीय जन अविकसित होते है, संकीर्ण स्वार्थी भाव से।।(12)

स्वच्छता न रखते तम्बाकू खाते, मद्य-मांस का भी करते सेवन।
श्रम न करते फैशन करते, जिससे अस्वस्थ होते है तन-मन।।(13)

दुगुर्णों को त्यागो सुगुण अपनाओ, जिससे होगा है सर्वोदय।
इसी हेतु ही 'कनकनन्दी' भी, दया से रची यह काव्य।।(14)

क्यों है भारतीय प्रतिभा कुन्द/(अविकसित) !?

चाल : 1. शत-शत वन्दन..... 2. सायोनारा..... 3. रघुपति राघव.....

विश्वगुरु भारत की संतान, आज क्यों हो रही है दीन-हीन।
अविकसित प्रतिभा सहित, फैशन-व्यसनों में लवलीन।।धृ.।।

गमला में उगे हुए वटवृक्ष सम, कक्ष के अन्दर जो स्थित है।
नहीं बन पाता है विशाल वृक्ष, तथाहि भारतीय प्रतिभा है।।
इसके अनेक कारण होते हैं, कर्म सिद्धांत-जिनोम भी।
संकीर्ण स्वार्थ व अनुदार भाव, क्षुद्र-उद्देश्य व व्यवहार भी।।(1)

नैतिक सदाचार रहित शिक्षा, रटन्त अनुपयोगी संकीर्ण भी।

नम्बर आधारित दिखावा सहित, श्रम रिक्त नौकरी उद्देश्य भी।।
धर्म भी संकीर्ण भेदभाव सहित, दिखावा आडम्बर ढोंग भी।
रूढ़ि परम्परा शोध-बोध रहित, पावन भाव-व्यवहार रिक्त भी।।(2)

प्रवचन में न होता है सूक्ष्म व्यापक धर्म, विज्ञान सहित आध्यात्म धर्म।
कथा कहानी चुटकुला मनोरंजन, खाना-पीना आडम्बर तुच्छ के कर्म।।
व्यापार राजनीति कानून भी, संकीर्ण स्वार्थ से सहित भी।
भ्रष्टाचार व शोषण से युक्त, नैतिक राष्ट्रीयता रहित भी।।(3)

सिनेमा टी.वी. प्रोग्राम आदि भी, सदाचार शिक्षा सहित भी।
संगति परिवार समाज राष्ट्र भी, रहित नैतिक सदाचार भी।।
फैशन-व्यसन अहंकार युक्त, दिखावा नकलची जीवन भी।
उद्दण्ड-उश्रृंखल अनुशासनहीन, आलस प्रमाद सहित भी।।(4)

आत्मविश्वास व सद्ज्ञान रहित, निःस्वार्थ नम्रता रहित भी।
संस्कृति संस्कार सदाचार रहित, धैर्य शालीनता रहित भी।।
दान-दया व परोपकार रिक्त, सहयोग समन्वय रिक्त भी।
सूक्ष्म-व्यापक चिन्तन रहित, आध्यात्मिक लक्ष्य रहित भी।।(5)

दीर्घकालीन गुलाम की आदत, अभी भी व्याप्त है भारत में।
जिससे स्वतंत्र स्वावलम्बन से, प्रतिभा न विकसित होती भारत में।।
आत्म गौरव व स्वावलम्बन से, स्वतंत्र-मौलिक चिन्तन से।
शोध-बोध व प्रयोगीकरण से, प्रतिभा विकसित होगी श्रम से।।(6)

महान् उद्देश्य सदाचार सहित, नम्रता अनुशासन युक्त से।
व्यापक ज्ञान अनुभव सहित, प्रतिभा विकसित होगी ध्यान से।।
प्रतिभा विकसित करो है! स्वयं की, सहयोगी बनो अन्य के भी।
स्व-पर-विश्व उपकारी भी बनो, ऐसी भावना है ''कनक'' की।।(7)

''भाव से भाग्य एवं भावी निर्माण''
(भाव ही पाप-पुण्य एवं मोक्ष)
(कल्पवृक्ष-कामधेनु-चिन्तामणि-शाल्मली-वृक्ष-अमृत है भाव)

राग : 1. तेरे प्यार का आसरा..... 2. चौपाई..... 3. नरेन्द्र छन्द.....

भाव के विश्व स्वरूप को जानो.....अशुभ शुभ शुद्ध पहचानो।

अशुभ भाव है पाप व दुःख.....शुभ शुद्ध है पुण्य व मोक्ष।।ध्रु.।।

भाव से भावी उत्पन्न होता.....भाव से भाग्य निर्माण होता।
भाव से स्वर्ग मोक्ष मिलते.....जैसा भाव वैसा ही होता।।
अशुभ भाव है नरक तिर्यंच.....रोग-शोक व दुःख-संताप।
विष शत्रु व अस्त्र-शस्त्र.....कलह विवाद युद्ध विनाश।।(1)

क्रोध मान माया लोभ व मोह.....ईर्ष्या द्वेष घृणा कामुक भाव।
हिंसा झूठ व कुशील परिग्रह.....चोरी व्यसन-फैशन द्रोह।।
निन्दा चुगली अपमान भय.....शोषण मिलावट आतंकवाद।
तनाव क्षोभ (व) भ्रष्टाचार आदि.....अशुभ भाव है विपरीत बुद्धि।।(2)

शुभ है कामधेनु कल्पवृक्ष.....चिन्तामणि व मंत्र व तंत्र।
दिव्य औषधि व रसायन कल्प.....प्रसाद वरदान आाशीर्वाद।।
दान दया सेवा पर उपकार.....सरल सहज व मृदु व्यवहार।
उदार प्रेम व नम्र व्यवहार.....अहिंसा सत्य सुशील सदाचार।।(3)

शालीन शान्त मधुर व्यवहार.....कोमल स्वभाव संवेदनशील।
भेद-भाव रहित विश्व हितकर.....शुभभाव के है परिकर।।
शुद्ध भाव है आत्मस्वरूप.....सच्चिदानन्द अध्यात्म रूप।
सत्य शिव सुन्दर अमृतमय.....अजर अमर व विज्ञान मय।।(4)

तन-मन इन्द्रिय रूप रहित.....द्रव्य भाव नोकर्म से रहित।
संकल्प-विकल्प क्षोभ रहित.....स्वतंत्र केवल निज स्वरूप।।
अतएव जीव स्वयं का कर्त्ता.....स्व-निर्माता स्वयं का भोक्ता।
आत्मविश्वास ज्ञान चारित्र द्वारा.....स्वर्ग मोक्ष सुख पाता है सारा
/('कनकनन्दी' हेतु भाव सहारा)।।(5)

(कर्म सिद्धांत, गुणस्थान, व्यवहार मनोविज्ञान एवं मैनेजमेंट गुर से युक्त शोधपूर्ण कविता)

हर क्षेत्र में भाव की मुख्यता क्यों?!
(भाव से ही पाप–दुःख, पुण्य–सांसारिक सुख, मोक्ष–आत्मसुख)

भाव से उत्पन्न होता विचार, विचार से होता है व्यवहार।
खाना-पीना व कथन भी होता, कर्म बन्ध व मोक्ष भी होता।।(1)

वस्तु स्वभावमय होता भाव, वर्तमान पर्यायगत भाव।

भाव है अशुभ-शुभ व शुद्ध, पाप-पुण्य व सिद्ध-स्वभाव।।(2)

अशुभ है पाप जिससे पतन, शुभ है पुण्य जिससे उत्थान।
शुद्ध (है) इससे परे श्रेष्ठ-ज्येष्ठ, जिससे मिलता अनन्त सुख।।(3)

अशुभ भाव है क्रोध मान माया, लोभ मोह काम विकारमय।
इसी से उत्पन्न होते अशुभ कर्म, पंच पाप व फैशन-व्यसन।।(4)

अन्याय अत्याचार व दुराचार, शोषण मिलावट व भ्रष्टाचार।
आक्रमण युद्ध व लूट व हत्या, आतंकवाद चोरी व बलात्कार।।(5)

सनम्र सत्यग्राही विवेक सह/(युक्त), उदार सहिष्णु संवेदनशील।
मैत्री प्रमोद करूणा साम्य, गुण ग्रहण युक्त शुभ के भाव।।(6)

दान दया सेवा शुभ के काम, परोपकार व अद्रोह काम।
पंच-पाप सप्त-व्यसन त्याग, स्व-पर उपकारी वचन-काम।।(7)

शुभ भाव से नहीं/(असंभव) अशुभ काम, अन्याय अत्याचार दुष्टता काम।
शोषण मिलावट व भ्रष्टाचार, ईर्ष्या द्वेष घृणा व व्यभिचार।।(8)

मोह क्षोभ रहित है शुद्ध भाव, सत्य समतामय पावन भाव।
अनन्त ज्ञान दर्शन सुख स्वभाव, शुभाशुभ रहित विमुक्त भाव।।(9)

अतएव भाव ही होता प्रधान, इसी से ही होते कार्य उत्पन्न।
शुभ व शुद्ध भाव करणीय, 'कनकनन्दी' को यह वरणीय।।(10)

"सुख प्राप्ति के उपाय"

राग : 1. छोटी-छोटी गैया..... 2. आत्मशक्ति से.....

सुख न मिलता है सत्ता-सम्पत्ति से, सुख न मिलता है प्रसिद्धि डिग्री से।
सुख तो मिलता है समता(व) शान्ति से, सुख तो मिलता है पावन भाव से।।

सुख तो मिलता है क्रोध न करने से, सुख तो मिलता है मान न करने से।
सुख तो मिलता है माया न करने से, सुख तो मिलता है लोभ के अभाव से।।
अहिंसा सत्य व अचौर्य शील से, परिग्रह त्याग व सादा जीवन से।
संतोष धैर्य व उदार भाव से, सुख तो मिलता है दान व सेवा से।।(1)

सुख तो मिलता है परोपकार से, उच्च विचार व महान् लक्ष्य से।
ईर्ष्या घृणा त्याग अद्रोह भाव से, अपेक्षा-उपेक्षा-प्रतीक्षा रहित से।।
सुख तो मिलता है सर्वोदय से, प्रतिस्पर्द्धा रिक्त सहज भाव से।
वैश्विक कल्याण सहित भाव से, आसक्ति रहित माध्यस्थ भाव से।।(2)

दीन-हीन अहंकार से रहित, सरल-सहज सहिष्णु सहित।
ऊँच-नीच भेद-भाव से रहित, मैत्री-प्रमोद व करूणा सहित।।
निन्दा अपमान कटुता रहित, वात्सल्य मृदुता विनम्र सहित।
गुणग्राही दृष्टि व दोष विरहित, सुख तो मिलता है संयम युक्त।।(3)

स्वस्थ तन-मन इन्द्रिय सहित, आत्मानुभव मूढ़ता रहित।
ध्यान-अध्ययन अनुभव युक्त, सुख तो मिलता है प्रज्ञा सहित।।
जो धन-मान व प्रतिष्ठा सहित, जो/(वे) होते कृष्ण संवेदना रिक्त/(असाम्-)।
दया-दान-सेवा उदार सहित, अतः वे होते हैं दुःख सहित।।(4)

आहार-विहार-विचार सम्यक्, जीवन संतुलित व अनुशासित।
इसी से मिलता सुख भी सम्यक्, 'कनक' का लक्ष्य परम सुख।।
धर्म में यह सब वर्णन हुआ है, अनुभव भी मैं यह सब किया है।
विज्ञान में यह सब सिद्ध हो रहा, अन्यत्र भी मैंने वर्णन किया।।(5)

"अशुभ त्यागो शुभ से शुद्ध बनो"

राग : चलो दिलदार चलो.....

चलो दिलदार चलो दया दान सेवा करो,
स्वार्थ लोभ मोह छोड़ो उदार भाव धरो।
साधु-साध्वी वृद्धजन पशु-पक्षी रोगी जन,
आहार औषधि से यथायोग्य सेवा करो।।(1)
सदाचार नीति पालो शोषण ठगी छोड़ो,
परनिन्दा ईर्ष्या छोड़ो विनम्र भाव धरो।
तन-मन स्वस्थ्य करो प्राणायाम योगा करो,
भ्रमण नित्य करो प्रमाद दूर करो।।(2)
मद्य-मांस द्युत छोड़ो फैशन दंभ छोड़ो,
सादा जीवन जीओ उच्च विचार करो।
अध्ययन-ध्यान करो संकीर्ण भाव छोड़ो,
कृतज्ञ भाव धरो घृणा विद्वेष छोड़ो।।(3)
सत्य-तथ्य को जानो गुणग्राही नम्र बनो,
दीर्घ-दर्शी प्राज्ञ बनो सरल भाव धरो।
सौम्य शान्त गुणी बनो अनुशासी शुचि बनो,
हित-मित प्रिय बोलो सत्यग्राही सदा बनो।।(4)

आत्मा-परमात्मा जानो आत्मविशुद्धि करो,
संयम भाव धरो परिग्रह भोग छोड़ो।
गुणस्थान पार करो आत्म तत्त्व को वरो,
'कनक' नित्य चाहे शुद्ध स्वरूप वरो।।(5)

''सिद्ध (शुद्धात्मा) गुणों का करूँ यथायोग्य अनुकरण''
(मेरा परम लक्ष्य स्व-उपलब्धि)

राग : तुम दिल की धड़कन.....

सिद्ध बनना है मेरा परम लक्ष्य.....सिद्ध स्वरूप ही मेरा शुद्ध स्वरूप।
अतएव सिद्धों का मैं स्मरण करूँ.....ज्ञान-ध्यान व अनुकरण करूँ।।
संसार चक्र से जो मुक्त हो गये.....समस्त कर्मों को जो विनष्ट किये।
राग-द्वेष-मोह से जो रिक्त हो गये.....अनन्त आत्मगुणों को जो प्रगट किये।।(1)

अनन्त ज्ञान-दर्शन सुख को पाये.....अनन्त अव्याबाधत्व वीर्य को पाये।
अगुरुलघु अवगाहन सूक्ष्मत्व.....सम्यक्त्व चारित्र तथा समत्व पाये।।
शत्रु-मित्र अपना-पराया नहीं.....जन्म-जरा-मरण-रोग भी नहीं।
भूख-प्यास निद्रा आलस्य नहीं.....भय चिन्ता आकुलता निराशा नहीं।।(2)

आकर्षण-विकर्षण-संघर्ष नहीं.....अपेक्षा-उपेक्षा-प्रतीक्षा नहीं।
ख्याति-पूजा-लाभ-प्रमाद नहीं.....संकल्प-विकल्प संक्लेश नहीं।।
ईर्ष्या-घृणा-तृष्णा अश्लील नहीं.....उद्दण्ड अनाचार वैरत्व नहीं।
इष्ट वियोग तथा अनिष्ट संयोग.....पीड़ा चिन्तन तथा निदान नहीं।।(3)

हिंसा मृषा परिग्रह में आनन्द नहीं.....चौर्य निन्दा विकथा में आनन्द नहीं।
ज्ञाता-दृष्टा तथापि समताधारी.....अनन्तशक्ति सम्पन्न भी आत्मविहारी।।
द्रव्य क्षेत्र काल व भावानुसार.....तन-मन आत्म की शक्त्यनुसार।
अनुकरण करता हूँ सिद्ध गुणों का.....ध्यान-अध्ययन करता हूँ आत्म गुणों का।।(4)

'वन्दे तद्गुणलब्ध्ये' भाव पूजन.....स्वाध्याय होता है स्व का ज्ञान।
निश्चय ध्यान होता है आत्मरमण.....स्वयं की उपलब्धि है परिनिर्माण।।
अतएव शुद्धात्मा का करूँ स्मरण.....जिससे मैं स्व का करता ज्ञान।
स्व की उपलब्धि ही मम परम लक्ष्य.....'कनक' का लक्ष्य है आत्म-प्रत्यक्ष।।(5)

महान् बनने के सूत्र

चाल : 1. आत्मशक्ति से ओतप्रोत..... 2. शत-शत वन्दन.....

दृढ़ता से जो आगे बढ़ते, सदा ही सत्य के पथ में।
वे ही महान् बनते हैं, संसार के मध्य में।।धृ.।।
आवे यदि विघ्न बाधा, हुए भी यदि है अपमान।
तथापि जो आगे बढ़ते, बनते वे ही महान्।।
तीर्थंकर बुद्ध ऋषि मुनि व पाण्डव तथा श्रीराम 2।
दार्शनिक तथा वैज्ञानिक, अब्राहिम लिंकन 2।।(1)
महात्मा गाँधी सुभाषचन्द्र बोस तथा मदर टेरेसा।
नाइटेंगल आदि से भी मिलती है यह शिक्षा।।
क्रोध मान माया लोभ काम से, भी जो न होते है विचलित 2।
वे ही दृढ़ता से सत पथ चलते, जो न होते हैं मोहासक्त 2।।(2)
उपेक्षा-अपेक्षा-प्रतीक्षा रहित जो, न होते हैं अप्रभावी।
वे ही महान् बनते हैं जो, हैं निर्भय व साम्यभावी।।
आत्मविश्वास सह(जो) विवेकवान, तथाहि जो होते(हैं) सदाचारी 2।
पक्षपात से भी जो रहित होते, बनते महान् वे धैर्यधारी 2।।(3)
सतत जो करते पुरुषार्थ, विफलताओं से भी जो शिक्षा लेते।
वे ही बनते हैं महान् पुरुष, ''कनक'' उनसे भी शिक्षा लेते।।(4)

महामानव व क्षुद्रजनों के भाव व कार्य

चाल : 1. छोटी-छोटी गैया..... 2. सायोनारा..... 3. शत-शत वन्दन.....

श्रद्धा प्रज्ञा व भावना युक्त, होते हैं महामानव।
कषाय लेश्या संज्ञा से युक्त, होते हैं क्षुद्रमानव।।(1)
हर कार्य को महामानव करते (हैं), श्रद्धादि से सहित।
क्षुद्रजन तो हर कार्य करते (हैं), कषाय आदि सहित।।(2)
ऊर्ध्वगमन यथा सिद्धजीव में, होता स्वभाव से युक्त।
तथाहि महामानव कार्य करते, श्रद्धा आदि से सहित।।(3)
विद्युत से यथा चालित होकर, चलते विद्युत यंत्र।
तथा क्षुद्रजन कषाय आदि से, चालित करते हर तंत्र/(कार्य)।।(4)

श्रद्धा प्रज्ञा व भावना होती (है), स्व-आध्यात्मिक शक्ति।
महान् व्यक्ति के हर कार्य में, होती है स्व-आत्मशक्ति।।(5)

इसीलिये वे हर कार्य को, करते हैं स्वेच्छा से प्रेरित।
क्षुद्रजन तो करते कार्य, कषाय आदि से (हो) प्रेरित।।(6)

श्रद्धा आदि होते आत्मिक गुण, जो अनन्त शक्ति युक्त।
कषाय आदि है वैभाविक गुण, नहीं (है) अनन्त शक्ति युक्त।।(7)

क्रोध मान माया लोभ न करते, जब तक हैं आवेशित।
तब तक क्षुद्रजन न करते, कार्य श्रद्धादि से हो प्रेरित।।(8)

कृष्ण नील व कापोत लेश्या, अथवा पीत पद्म व शुक्ल।
इन्हीं लेश्याओं से प्रेरित होकर, करते अपना कार्य।।(9)

आहार भय मैथुन परिग्रह, ये हैं संज्ञा प्रबल।
इनसे आवेशित क्षुद्रजन, सब करते हैं कार्य प्रचुर।।(10)

इसीलिये तो ऐसे जीव के, हर कार्य होते अधर्म/(अनर्थ)।
भले वे दिखावा अथवा रूढ़ि से, करते क्यों न हो धर्म।।(11)

अन्याय अत्याचार दुराचार, लूटपाट शोषण आदि करते।
आतंकवाद आक्रमण युद्ध, हत्या बलात्कार आदि करते।।(12)

श्रद्धादि युक्त से हर कार्य भी, होते हैं महान् व पावन।
कार्य सम्पादन भी होता है, सरल-सहज-सम्पूर्ण।।(13)

महान् जन समझते वे कार्य, जो होते है महान्।
क्षुद्र कार्य को ही समझते हैं, जो होते हैं क्षुद्रजन।।(14)

कषाय आदि त्यागो है! जीव, धारो है प्रज्ञादि भाव।
जिससे होगा स्व-पर कल्याण, ऐसा है 'कनक' का भाव।।(15)

वैज्ञानिक शोधपूर्ण कविता

भौतिक समृद्ध सभ्यताओं के विनाश के कारण

राग : 1. आत्मशक्ति से ओतप्रोत..... 2. क्या मिलिये ऐसे लोगों से.....

अनेक समृद्ध सभ्यताओं का, नाश हो गया है इतिहास प्रसिद्ध।
अभी वैज्ञानिक शोध से हुआ ज्ञात, क्यों हुआ इनका विनाश।।(1)

मेसोपोटामिया मय सभ्यतादि, जो भौतिकतादि से हुई थी समृद्ध।
उनके विनाश के कारण निम्नोक्त है, जो वैज्ञानिकों ने किया है सिद्ध।।(2)

उच्च तकनीकि का हुआ था विकास, किन्तु प्रकृति संरक्षण का न था ज्ञान।
परस्पर भी लड़ते रहते थे लोग, न करते थे परस्पर सम्मान।।(3)

नरबलि भी चढ़ाते रहते थे, गरीब दुर्बलों को करते थे गुलाम।
नारियों को न मिली थी स्वतंत्रता, नहीं मिलता था उन्हें सम्मान।।(4)

सुरा-सुन्दरी, शिकार में रत होते थे, करते थे प्रकृति का अति दोहन।
जिससे प्राकृतिक प्रकोप का यथा, अकाल बाढ़ का हुआ सृजन।।(5)

आक्रमण युद्ध व्यापार हेतु, करते थे अन्य देश गमन।
जिससे रोगाणु का हुआ संचार, जिससे मरे बहुत जन।।(6)

एस्ट्रोराइड टक्कर या ज्वालामुखी, विस्फोट भी बने कारण।
सुपरनोवा विस्फोट को भी, वैज्ञानिक मानते हैं कारण।।(7)

इसी से शिक्षा लो मानव यथा संभव हो बचो हे! दोषों से।
स्व-पर-विश्व हित हेतु कविता रची है 'कनक' भाव से।।(8)

अभी भी है भारत में अनेक परतंत्रता

राग : 1. आत्मशक्ति..... 2. शत-शत वन्दन.....

दीर्घकालीन परतंत्रता से, भारत की बहुविध हुई है क्षति।
धन-जनहानि संस्कृति विकृति, वैचारिक क्रांति की हुई क्षति।।(1)

शक हुण मुगल मुसलमान, पठान अंग्रेजों ने किया आक्रमण।
हजारों वर्ष भारतवर्ष, आक्रमणों से हुआ संक्रमण/संत्रस्त।।(2)

जिससे भारत की मूल संस्कृति, विकृत हुई व वृद्धि न हुई।
ज्ञान-विज्ञान-भाषा-परम्परा, कानून राजनीति शुद्ध न रही।।(3)

आध्यात्मिकता हमारी मूल संस्कृति, जिससे होती अनन्त शक्ति/(वृद्धि)।
अक्षय अनन्त ज्ञान-दर्शन सुख, वीर्य की होती उपलब्धि।।(4)

इसी के पहले संसार सम्बन्धी, सम्पूर्ण विकास/(उपलब्धि) की होती है प्राप्ति।
ज्ञान-विज्ञान गणित-राजनीति, सत्ता-सम्पत्ति की होती है प्राप्ति।।(5)

दीर्घकालीन गुलाम के कारण, स्वतंत्रता न रही किसी में।
संस्कृति सभ्यता भाषा परम्परा, साधना-आराधना राजनीति में।।(6)

जिससे वैचारिक स्वतंत्रता न रही, नहीं रही भी अभिव्यक्ति की।
लेखन-पठन शोध-बोध व, निर्माण प्रचार अधिकार की।।(7)

हीनता-दीनता कुंठा नैराश्य, ईर्ष्या-द्वेष-घृणा भाव भी जन्मे।
क्रोध प्रतिशोध वैर विरोध, प्रतिहिंसा के भाव भी जन्मे।।(8)

सैकड़ों वर्षों के आन्दोलन से, भारत पुनः स्वतंत्र हुआ।
राजनैतिक हस्तान्तरण हुआ, पूर्ण स्वतंत्र अभी (भी) न हुआ।।(9)

केवल गोरा अंग्रेज गये, काला अंग्रेज शासक बने।
गुलाम मानसिक शासक अभी भी, देश (राष्ट्र) के शोषक बने।।(10)

संविधान या कानून प्रशासन, हमारी संस्कृति के सम न बने।
विदेशी संस्कृति परम्परा से, जोड़-तोड़ कर यह सब बने।।(11)

शिक्षा-पद्धति हमारी न बनी, मैकाले/(विदेशी) की बनी शिक्षा पद्धति।
तथाहि भाषा न्यायिक-प्रक्रिया, पुलिस-व्यवस्था विदेशी/(गुलाम) रही।।(12)

अहिंसा धर्म का होता हनन, बुचड़खाना में पशुवध से।
सत्य का वध होता सर्वत्र, संसद से न्यायालय तक में।।(13)

आध्यात्मिकता तो दासी हो गई, भौतिकता बन गई है रानी।
अतएव भ्रष्टाचार फैला है, शान्ति समृद्धि हो रही कुर्बानी।।(14)

लिव इन रिलेशनशीप, समलैंगिकता, वधशाला व मद्य की मान्यता।
भारतीय संस्कृति के योग्य नहीं, मांस निर्यात भी योग्य नहीं।।(15)

अभी भी अन्य गुलामवृत्ति, यत्र-तत्र कर रही प्रवृत्ति।
स्वतंत्र मौलिक महान् कार्य में, भारतीयों को नहीं प्रवृत्ति।।(16)

स्वतंत्रता से ही होता विकास, परतंत्रता से होता विनाश।
स्वच्छंदता त्यागो स्वतंत्र बनो, 'कनकनन्दी' का तुम्हें आशीष।।(17)

गृहस्थाश्रमी एवं गृहस्थों की दशा-दिशा/ (समस्या)

राग : शत-शत वन्दन.....

गृह में रहकर जो श्रम करता (है), गृहस्थाश्रमी वह आत्मकामी होता।
धर्म आधारित अर्थ काम मुख्य, मोक्ष लक्ष्य युक्त सो जन होता।।स्थायी।।

विवाह सहित परिवार युक्त, असि-मसि-कृषि वाणिज्य युक्त।
सेवा व शिल्प जीविका युक्त, सामाजिक रीति-रिवाज युक्त।।
गुणस्थान होता चतुर्थ-पंचम, अविरत सम्यक्त्वी विरताविरत।

तीन व दो कषाय चौकड़ी युक्त, नव नोकषाय परिणाम युक्त।।(1)

शुभ व अशुभ लेश्या सहित, आहार निद्रा भय मैथुन युक्त।
आरम्भ परिग्रह उद्योग युक्त, त्रस-स्थावर हिंसा से सहित।।
दान पूजा (तप) व अणुव्रत सहित, किंचित् पुण्य-पाप अधिक।
गजस्नानवत् होता चारित्र, अरहट समान कार्य विचित्र।।(2)

जन्म-मरण हानि-लाभ युक्त, संयोग-वियोग सुख-दुःख।
आकर्षण-विकर्षण संक्लेश युक्त, अपेक्षा-उपेक्षा-प्रतीक्षा युक्त।।
इसमें परम सुख न मिलता, उत्तम स्वर्ग व मोक्ष न मिलता।
आत्म विकास परम न होता, अतएव मुमुक्षु साधु बनता।।(3)

धर्म व मोक्ष पुरुषार्थ रहित, अर्थ व काम व्यापार सहित।
गृहस्थाश्रमी कोई नहीं होते, आत्मिक श्रम जो नहीं करते।।
ऐसे जन तो होते अधर्मी, मोही अज्ञानी व होते कुकर्मी।
पंच-पाप सप्त-व्यसन सेवते, अष्ट मद से सहित होते।।(4)

आर्त-रौद्र परिणामी वे होते, अन्याय अत्याचारी शोषण करते।
कलह-विवाद संक्लेश करते, भोग-तृष्णा में आसक्त होते।।
महान् लक्ष्य से रहित होते, संकीर्ण भौतिकवादी वे होते।
कूप मण्डूक सम काम करते, गोबरिला सम काम करते।।(5)

आत्म विकास हेतु जो श्रम करते, मानव जन्म को सफल करते।
इह-परलोक में सुखी वे होते, 'कनक' आत्म श्रम ही भाते।।(6)

अलौकिक गणित-आध्यात्मिक मय कविता

"मेरी भावना–परम ज्ञान हेतु मुझे चाहिये स्व–ज्ञान"

राग : तेरे प्यार का आसरा.....

परम सत्य को मैं जानना चाहता हूँ।
इन्द्रिय मनातीत (मैं) जानना चाहता हूँ।।
अल्पज्ञ से परे (मैं) जानना चाहता हूँ।
भौतिक से परे (मैं) जानना चाहता हूँ।।(1)

यंत्र से परे का ज्ञान चाहता हूँ।
भौतिक विज्ञानी से भी परे चाहता हूँ।।

जिनोम से परे जानना चाहता हूँ।
डार्क-एनर्जी-मेटर से परे चाहता हूँ।।(2)

सामान्य मानव ज्ञात ज्ञान-विज्ञान से।
नीति-नियम-न्याय संविधान ज्ञान से।।
रीति-रिवाज परम्परा की सीमा से।
संकीर्ण पंथ-मत भाषा विधान से।।(3)

जानना चाहता हूँ परम सत्य को।
सत्य को जानने वाला परम ज्ञान को।।
ज्ञान के आधारभूत स्व-आत्मतत्त्व को।
(परम) सत्य के ज्ञात हेतु 'कनक' जानो हे! स्व को।।(4)

स्व को जानने हेतु भी अनन्तज्ञान चाहिये।
परम सत्य हेतु भी अनन्तज्ञान चाहिये।।
अतएव तीर्थंकर पहले जानते स्वयं को।
सर्वज्ञ बनकर जानते परम-सत्य को।।(5)

संकीर्ण भौतिकता परे भी जानो-मानो!
(परम सत्य को नहीं जानते हैं वैज्ञानिक)
(आधुनिक वैज्ञानिक नहीं है सर्वज्ञ)

राग : तुम दिल की धड़कन.....

धन्य वैज्ञानिक धन्य हो तुम!.....कितनी खोज करते हो ?!
बुद्धि इन्द्रिय यंत्रों के द्वारा.....ये सब खोज करते हो।।ध्रु.।।

तुम्हारे कारण हुए शोध-बोध.....भौतिक क्षेत्र में विविध प्रकार।
रोगोपचार व जीव सुरक्षादि.....यान-वाहन यंत्र अनेक प्रकार।।
संकीर्ण धर्म जाति क्षेत्र परे.....करते शोध-बोध विविध।
बुद्धि इन्द्रिय यंत्रों से परे.....नहीं करते (हो) शोध-बोध विविध।।(1)

बुद्धि इन्द्रिय व यंत्रों में नहीं.....असीम अनन्त सही क्षमता।
इसलिये तेरी खोज भी न होती.....असीम अनन्त सत्य पूर्णता।।
भौतिक में भी तुम खोज न पाये.....पंचानवें प्रतिशत (95%) अभी तक।
डार्क मेटर व डार्क एनर्जी सह.....ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति कारण सह।।(2)

नहीं जान पाये किन कारणों से.....महाविस्फोट हुआ कब है।

किस क्षेत्र पर हुआ बिग बैंग.....कितने बार हुए अभी तक है।।
किन कारणों से हुई जीव सृष्टि.....जीवों के मूल रूप/(शुद्ध रूप) क्या है।
कहाँ से जीव आये कहाँ हुई उत्पत्ति.....मृत्यु के परे अवस्था क्या है।।(3)

नहीं जान पाये अभी तक शुद्ध अणु.....उसके आकार-प्रकार व गुण।
उसकी शक्ति उत्पत्ति परिस्थिति.....स्पर्श रस गन्ध वर्ण व भार।।
कहाँ तक है ब्रह्माण्ड की सीमा.....कितने ब्रह्माण्ड हैं कहाँ-कहाँ पर।
आकाश काल का स्वरूप न जानते.....नहीं जानते हो अमूर्तिक द्रव्य।।(4)

किन कारणों से जीव है चेतनामय.....नहीं जानते सुख-दुःख के कारण।
नहीं जानते हो जन्म-मृत्यु के कारण.....नहीं जानते हो आदि व अन्त।।
कहाँ-कहाँ हैं जीव ब्रह्माण्ड में.....नहीं जानते हो उसका स्वरूप।
स्व-स्वरूप भी नहीं जानते हो.....नहीं जानते हो अनन्त सत्य।।(5)

कार्य-कारण सम्बन्ध (तो) मानते हो.....परन्तु अकारण/(अचानक) भी मानते।
महाविस्फोट व जीवों की उत्पत्ति.....अचानक-अकारण मानते हो।।
जड़ से चेतन (जीव) को मानते हो.....आकाश-काल भी मानते हो।
जड़-चेतन भेद न जानते हो.....मोक्ष तत्त्व को न जानते हो।।(6)

तुम मानते हो स्वयं को अल्पज्ञ.....सत्य जानने का करते प्रयास।
किन्तु भौतिक साक्ष्य को ही मानते.....जिससे श्रेष्ठ न होता प्रयास।।
भौतिक परे भी अभौतिक मानो.....अचेतन परे मानो चेतन।
इससे तुम्हारा होगा सर्वोदय.....'कनकनन्दी' का तुम्हें आशीष।।(7)

"परम रहस्य एवं चमत्कार"

राग : 1. छोटी-छोटी गैया..... 2. आत्मशक्ति से.....

परम रहस्य तो सत्य होता (है).....जो समता (व) शान्ति सहित।
परम ज्ञान व एकाग्र मन (है).....धैर्य अहिंसा व क्षमा सहित।।
पवित्र भाव व सरल स्वभाव.....दया-दान व सेवा सहित।
उदार भाव व परोपकार.....महान् लक्ष्य व दृढ़ संकल्प।।(1)

सतत पुरुषार्थ रूचि सहित.....संक्लेश-विकल्प भाव रहित।
प्रामाणिकता व कर्त्तव्यनिष्ठा.....सदाचार युक्त प्रामाणिकता।।
भाव से भाग्य भाव से भावी.....पुण्य-पाप व स्वर्ग-नरक।
भाव से विचार व्यवहार होता.....भाव रहस्य भाव से मोक्ष।।(2)

भाव ही विकास-विनाश मंत्र.....रसायन औषध मणि व तंत्र।
कल्पवृक्ष कामधेनू रक्षा यंत्र.....समस्त शक्ति के अजस्र-स्रोत।।
इसी से आत्मशक्ति जागृत होती.....नैतिक शक्ति प्रबल होती।
नकारात्मक शक्ति क्षीण होती.....सकारात्मक शक्ति प्रबल होती।।(3)

प्रज्ञा शक्ति की वृद्धि होती.....निर्णय-क्षमता भी तीव्र होती।
आकर्षण शक्ति की वृद्धि होती.....कल्पना-शक्ति तीव्र बढ़ती।।
पुण्य कर्मों का आस्रव होता.....पाप कर्मों का विनाश होता।
पुण्य की शक्ति तीव्र होती.....पाप की शक्ति क्षीण होती।।(4)

विविध ऋद्धि भी प्रगट होती.....अचिन्त्य शक्ति से युक्त होती।
अति मानवीय वे शक्ति होती.....साधारण जन से परे होती।।
अन्त में आत्मा की लब्धि होती.....अनन्त शक्ति भी प्रगट होती।
भाव/(आत्मा) ही अतः है परम रहस्य.....'कनकनन्दी' का परम लक्ष्य।।(5)

महान् लक्ष्यादि बिना सत्तादि से होता विनाश

चाल : 1. छोटी-छोटी गैया..... 2. सायोनारा.....

महान् कार्य हेतु लक्ष्य चाहिए, उदार भावना पुरुषार्थ चाहिए।
केवल सत्ता-सम्पत्ति बुद्धि-डिग्री से, महान् कार्य न होता बिना प्रज्ञा से।।स्थायी।।

रावण कंस हिटलर तानाशाहों से, महान् कार्य न हुए सत्ता आदि से।
महान् लक्ष्यादि बिना सत्ता आदि का, होता है दुरुपयोग सभी लोगों का।।

यथा सुयोग्य दयालु डॉक्टर द्वारा, अस्त्रादि का प्रयोग होता विवेक द्वारा।
क्रूर डाकू द्वारा होता अस्त्रादि प्रयोग, हत्या लूटपाट हेतु होता नियोग।।

तथाहि सत्तादि का होता प्रयोग, लक्ष्यादि के अनुसार होता नियोग।
अधिक हानिकर होती सत्तादि, अधिक से अधिक विध्वंसकारी।।

महान् लक्ष्य आदि आद्य विधेय, सत्ता आदि तदनुकूल विधेय।
अन्यथा अनर्थ होता निश्चय, विश्व इतिहास है इसी के साक्ष्य।।

परम विकास न होता सत्ता से, चक्री भी निवृत्त होते सत्ता से।
आत्म साधना से पाते वे मोक्ष, 'कनकनन्दी' का यह परम लक्ष्य।।

ईमानदारी किसी कायदे-कानून की मोहताज नहीं होती, इसी पर मनुष्य की प्रतिष्ठा निर्भर है।

-आलेबर कामू (फ्रांस के नोबल विजेता)

उत्तम भाव बिना शिक्षादि से भी न होते श्रेष्ठ काम

राग : शत-शत वन्दन.....

जब तक भाव उत्तम न होता, शिक्षा-धर्म-कानून से (भी) अच्छा न होता।
भाव से ही प्रेरित होते समस्त कर्म, उत्तम मध्यम (अथवा) जघन्य कर्म।।(1)

शरीर इन्द्रिय मन साधन यंत्र, शिक्षा धर्म न्याय राजनीति विज्ञान।
ये भी सब संचालित होते भाव से, विद्युत चालित यंत्र यथा विद्युत से।।(2)

हिटर कुलर पंखा टी.वी. मोबाईल, काम तो पृथक्-पृथक् शक्ति बिजली।
भाव ही शुभ-अशुभ-शुद्ध भी होता, यथा भाव तथा कार्य घटित होता।।(3)

भाव को उत्तम करना आद्य कर्त्तव्य, इसी हेतु शिक्षा कानून धर्म माध्यम।
उदार सहिष्णु क्षमा मृदुता शौच/(दम), दया दान सेवा सत्य होते उत्तम।।(4)

श्रेष्ठ भाव बिना न धर्म उत्तम, श्रेष्ठ भाव बिना न शिक्षा उत्तम।
तथाहि कानून राजनीति संविधान, उच्च भाव बिना न होते उत्तम।।(5)

संकीर्ण स्वार्थी मोही अज्ञानी मानव, उच्च भाव को न करे उद्भव।
केवल शिक्षा कानून/(धर्मादि) धनादि द्वारा, श्रेष्ठ बनने का कर्म करता सारा।।(6)

रावण कंस समान ही करता कर्म, महान् बनने का भी पालता भ्रम।
विपरीत दिशा में ही करता गमन, लक्ष्य प्राप्त करने का पालता भ्रम।।(7)

अच्छा भाव हेतु करो समस्त कर्म, अच्छा भाव से ही करो उत्तम कर्म।
इसी से ही सर्वांगीण होगा विकास, 'कनकनन्दी' का लक्ष्य आत्म विकास।।(8)

भोग-भूमिजों से प्राप्त शिक्षाएँ

राग : 1. छोटी-छोटी गैया..... 2. सायोनारा.....

भोग-भूमिजों से (मुझे) मिलती है शिक्षा, सरल जीवन की नैतिक शिक्षा।
प्राकृतिक जीवन व निर्द्वन्द्व भाव, असंग्रह वृत्ति व अद्रोह भाव।।(1)

बुद्धि शक्ति व कला सम्पन्न, निरोग तथा अति सुन्दर वदन।
अस्थि भी होती वज्र समान, तथापि जीते वे शान्त जीवन।।(2)

जीवन जीते वे सुदीर्घ काल, भोला-भाला व मृदु सरल।
अन्याय अत्याचार कुशील रिक्त, कलह विसंवाद तनाव रिक्त।।(3)

शोषक-शोषित नहीं मालिक-भृत्य, धनी-गरीब व उच्च व नीच।
अपना-पराया रिक्त स्वतंत्र-भाव, नहीं सामाजिक बन्धन भाव।।(4)

मुक्त परिवार व राष्ट्र बन्धन, नहीं क्षेत्र की सीमा बन्धन।
एकाधिकार का न कोई बन्धन, आवास-निवास-भोजन-भूषण।।(5)

नहीं आक्रमण सीमा लंघन, युद्ध हत्या या अपहरण।
नहीं है बलात्कार शील हरण, चोरी-डकैती व दुराचरण।।(6)

प्रकृति का नहीं करते शोषण, पशु-पक्षियों का न करते हनन।
होते हैं भद्र व मन्द कषायी, शुभ लेश्या युक्त सहज विनयी।।(7)

कानून संविधान शिक्षा के बिना, प्रलोभन दबाव भय के बिना।
इन गुणों से वे होते (हैं) सम्पन्न, शिक्षादि से युक्त हमें होना विधेय।।(8)

मिथ्यादृष्टि भी जब (वे) होते हैं, मरकर के वे स्वर्ग जाते हैं।
जो मानव-पशु दान देते हैं, मरकर के वे आर्य बनते हैं।।(9)

इन सब गुणों को मुझे पाना है, उपलब्धि का न गर्व करना है।
रत्नत्रय से भी मोक्ष पाना है, 'कनक' को निज भाव पाना है।।(10)

समता-सत्य धर्म महान्

राग : छुप गया कोई रे.....

साम्य/(सत्य) धर्म महान् है, मोही नहीं मानता।
राग-द्वेष-मोह से (वह), आवेशित (ही) रहता।।(1)

समता है आत्म धर्म, मोह-क्षोभ सहित।
निराकुल व शान्तिमय, पावन व मंगल।।(2)

समता में समाहित (है), सभी धर्म आत्मा के।
अहिंसा सत्य अचौर्य, अपरिग्रह व शील के।।(3)

उत्तम क्षमा मार्दव व, आर्जव व शौच सत्य।
संयम व तप त्याग, आकिंचन्य ब्रह्मचर्य।।(4)

मैत्री प्रमोद कारूण्य, माध्यस्थ में समाहित।
अनुप्रेक्षा द्वादश व, षोडस भावना सह।।(5)

गर्भित/(समाहित)(भी) है रत्नत्रय, श्रद्धा प्रज्ञा आचरण।
गुप्ति सहित भी ध्यान, शुभ व शुक्ल ध्यान।।(6)

समता/(सत्य) रिक्त सभी धर्म, न होते हैं सही धर्म।
आत्मा से रिक्त देह, होता है शव/(जड़) मय।।(7)

शव दहन-गाढना होता, समता रिक्त धर्म भी।
अनेक दोष जन्मे तथा, स्व-पर विश्व अहित भी।।(8)

साम्य/(समता) सहित धर्म होता, महान् ही उपकारी।
स्व-पर-विश्व के होता, बहुत ही उपकारी।।(9)

समता ही है सार्वभौम, वैश्विक धर्म है।
'कनकनन्दी' का यह, परम धर्म है।।(10)

सफलता एवं असफलता के कारक
(विशेष विकास के बाधक-साधक उपाय)

राग : 1. शत-शत वन्दन..... 2. सायोनारा.....

संकीर्ण स्वार्थी जो मानव होता, विशेष विकास नहीं कर पाता।
गृहस्थ गमला के वृक्ष सम, विशाल आकार न बन पाता।।(1)

योग्य भूमि जलवायु सूर्य-रश्मि, विशाल वृक्ष हेतु यथा चाहिये।
तथाहि सम्पूर्ण विकास के हेतु, उदार-नि:स्वार्थ भाव/(काम) चाहिये।।(2)

केवल लौकिक शिक्षा सत्ता-सम्पत्ति, नौकरी व्यापार या राजनीति से।
सम्पूर्ण विकास न होता रूढ़ि से, संकीर्ण-कट्टर धर्म राष्ट्रवाद से।।(3)

जो नया-नया ज्ञान नहीं सीखता, जिज्ञासु गुणग्राही नहीं बनता।
स्वयं को महाज्ञानी श्रेष्ठ मानता, उसका विकास रुक जाता।।(4)

स्वयं की कमियों को जो न जानता, जानकर भी उसे न दूर करता।
दूसरों के गुणों से (जो) न शिक्षा लेता, अन्य के दोषों को ही देखता।।(5)

तुच्छ उपलब्धियों का गर्व करता, अन्य की उपलब्धि से शिक्षा न लेता।
आलसी-प्रमादी-फैशनी (जो) होता, व्यसन-कलह से जीवन जीता।।(6)

घर जलने पर जो कुआँ खोदता, लगनशील सतर्क न होता।
तैराकी ज्ञान बिन कूप में कूदता, उसका विकास सही न होता।।(7)

सामान्य ज्ञान से जो रहित होता, व्यवहार ज्ञान से रहित होता।
नैतिक सदाचार नहीं जानता, उसका विकास भी सही न होता।।(8)

सही पद्धति सहित सूक्ष्म ज्ञान, लक्ष्य निर्धारण सह अनुशासन।
क्रमबद्ध व्यवस्थित (व) रूचि सम्पन्न, ईर्ष्या तृष्णा कुंठा रहित मन।।(9)

सतत पुरुषार्थी व प्रसन्न मन, गुण-दोष विज्ञानी व उदार मन।
समन्वय समता सहिष्णु जन, विशेष विकास योग्य होता सज्जन।।(10)

दीर्घ अनुभव/(बाल्यकाल) से ही यह जाना हूँ, महापुरुषों से यह जाना हूँ।
विभिन्न साहित्यों से यह जाना हूँ, 'कनक' सत्य-तथ्य रूप जाना हूँ।।(11)

सार्वभौम संविधान–न्याय एवं राजनीति

अहिंसा–अपरिग्रह का सार्वभौम नियम

मालिक–गुलाम, शोषक–शोषित भाव–व्यवहार है अप्राकृतिक

चाल : 1. छोटी-छोटी गैया..... 2. क्यूँ कर भक्ति करूँ प्रभु तेरी.....

कोई किसी का मालिक नहीं (है), स्वयं-स्वयं का ही मालिक।
कर्त्ता-धर्त्ता व स्वयं ही भोक्ता, ये नियम है सार्वभौमिक।।टेक।।

हर द्रव्य स्वतंत्र है तथा मौलिक, स्वयंभू सनातन स्वयंपूर्ण।
अनन्त-शक्ति-गुण-पर्याय सह, शुद्ध रूप से स्वयंपूर्ण।।(1)

सत्ता-सम्पत्ति व बुद्धि युक्त, मानव मालिक जो बनता।
नियम सार्वभौम को लाँघकर, वह न शुद्ध काम करता।।(2)

इसी से ही बनती है धरती खण्डित, आक्रमण युद्ध तथा संहार।
ऊँच-नीच भेद-भाव धनी-गरीब, शोषक-शोषित शिकारी-शिकार।।(3)

इसी के समाधान हेतु बनते, न्याय राजनीति व संविधान।
इसी से पुनः जन्म लेते है, शोषक-शोषित आदि व्यापार।।(4)

भले दुर्बल व असहाय रोगी, मानव-पशु की भी रक्षा करे।
उनका भरण व पोषण करे, रक्षण करे न भक्षण करे।।(5)

प्रत्युपकार भले उनसे पाये, कृतज्ञता भी ग्रहण करे।
मालिक-गुलाम शोषक-शोषित, ये भाव-व्यवहार न करे।।(6)

बहु आरम्भ जो परिग्रह करता, वह मरकर नरक में जाता।
राजेश्वरी सो है नरकेश्वरी, ऐसा जैनागम कहता।।(7)

परस्पर उपग्रह करे सभी जीव, नहीं किसी का करे अपकार।
अहिंसा-अपरिग्रह को माने, 'कनकनन्दी' का यह विचार।।(8)

संकीर्ण–क्रूर–धार्मिक से श्रेष्ठ–अधार्मिक सरल जीव

राग : 1. शत-शत वन्दन..... 2. छोटी-छोटी गैया.....

(वे) मानव ही कितने दुष्ट है, जो धर्म में भी अधर्म करते (है)।
सत्य समता शान्तिमय धर्म को, भी असत्य अशान्तिमय करते है ।।(1)

सुमधुर पोषक अँगूर की यथा, सड़ा-गलाकर मद्य बनाते है।
उसे पीकर मद-मस्त होकर, अयोग्य अनर्थकर काम करते है ।।(2)

तथाहि धर्म को स्वार्थ-संकीर्णता से, क्रूर-कठोरतम बनाते है।
ईर्ष्या-द्वेष व घृणा-तृष्णा से, अन्याय-अत्याचार करते है ।।(3)

अन्य धर्म के लोगों को तो, अधर्मी-अपराधी मानते है।
स्व-धर्म के भी अन्यान्य पंथी को, अधर्मी-अपराधी मानते है ।।(4)

उनसे करते घृणा व द्वेष, उन्हें मानते भी पापी-दुर्जन।
उन्हें कष्ट देना अपमान करना, मानते अपना धार्मिक काम ।।(5)

उनके ऊपर आक्रमण करना, तथा युद्ध व हत्या भी करना।
लूटपाट व बलात्कार करना, मानते अपना धार्मिक काम ।।(6)

अन्य धर्म की सभ्यता-संस्कृति, परम्परा भाषा को भी मानते हेय।
उन्हें नष्ट करना विकृत करना, मानते अपना पवित्र ध्येय ।।(7)

इसलिए तो धर्म के नाम पर, होते है अति अधिक पाप।
मानव समाज होता खण्ड-विखण्डित, कलह युद्ध से होता संतप्त ।।(8)

इनसे अच्छे वे मानव हैं जो, धर्म न मानते तो भी हैं मार्दव।
भोला-भाला सरल-सहज व, नहीं करते हैं विद्वेष विप्लव ।।(9)

भोगभूमिज यथा मानव पशु-पक्षी, नहीं होते जो भी धार्मिक।
तथापि वे होते सरल-सहज व, न होते वे क्रूर आक्रामक ।।(10)

ऐसे जीव भी जीते सुखमय जीवन, मृत्यु के अनन्तर पाते स्वर्ग-सुख।
किन्तु कट्टर धार्मिक क्रूर जन, उभय लोक में पाते बहु दुःख ।।(11)

ऐसे जो होते हैं भद्र जीव, आगे वे बन सकते हैं सच्चे धार्मिक।
सत्य-समता व शान्ति को पाकर, पाते हैं वे सुख अलौकिक ।।(12)

अतएव बनो है सच्चे धार्मिक, तथाहि बनो है स्वभाव मार्दव।
जिससे न स्व-पर को होवे दुःख, 'कनक' चाहे है सदा सद्भाव ।।(13)

सत्य साम्य सादगी से मिलती शान्ति
('स' प्रथमाक्षर प्रयोगात्मक पद्य)

चाल : 1. मिलती है जिन्दगी में..... 2. दुनिया में रहना है तो.....

सत्य समता सादगी से मिलती है शान्ति,
शान्ति ही मानव की है परम सम्पत्ति।
सांसारिक सम्पत्ति से न मिलती है शान्ति,
इसी से मिलती है आत्मिक शान्ति।।(1)

सत्य है सार्वभौम शाश्वतिक द्रव्य,
सत्य में समाहित समस्त विश्व।
सत्य है अकृत्रिम स्वयंभू स्वतंत्र,
सत्य-शिव-सुन्दर सम्पूर्ण-सर्वत्र।।(2)

समता परम धर्म मोह क्षोभ से रिक्त,
समस्त परिस्थिति में समता सहित।
राग-द्वेष-मोह परे परम साम्य सुख,
आध्यात्मिक सम्पूर्ण धर्म/(गुण, साधना) में समता प्रमुख।।(3)

सादगी है सरल-सहज सर्वोच्च स्वभाव,
श्रृंगार व व्यसन, रहित संक्लेश।
परिग्रह आडम्बर रिक्त सुशान्त आदर्श,
सादा जीवन सह निर्मल स्वभाव।।(4)

शान्ति है सर्वोच्च लक्ष्य सम्पूर्ण जीवों के,
सर्वभाव व व्यवहार शान्ति के निमित्त।
शान्ति के शून्य सम्पूर्ण सम्पत्ति होती (है) व्यर्थ,
शान्ति हेतु ही ''कनकनन्दी'' करे पुरुषार्थ।।(5)

कट्टर धार्मिक से श्रेष्ठ उदार वैज्ञानिक

चाल : 1. अच्छा सिला दिया..... 2. तुम्हीं हो माता-पिता तुम्हीं.....

भले धर्म श्रेष्ठ हो सदा ही काल में, श्रेष्ठ भी होता धार्मिक सभी जीव में।
तथापि कट्टर न धार्मिक श्रेष्ठ, उदार वैज्ञानिक होते हैं श्रेष्ठ।।(1)

कट्टर धार्मिक न होता (है) उदार, ईर्ष्या-द्वेष-घृणा से होता भरपूर।
भेद-भाव सहित फैलाये विद्वेष, आक्रमण युद्ध व करता संहार।।(2)

उदार वैज्ञानिक न होता है कट्टर, (होता) सनम्र सत्यग्राही तथाहि सरल।
पंथ-मत क्षेत्र भेद-भाव न करता, हर जीव उपकारी दृष्टि से सोचता।।(3)

सत्य परिज्ञान हेतु शोध-बोध करता, स्व अज्ञानता को सहजता से मानता।
संकीर्ण हठग्राही (व) क्रूर न बनता, समता (व) शान्ति हेतु कार्य भी करता।।(4)

अन्य करते वैज्ञानिक उपकरण का दुरुपयोग, स्व-पर उपकार हेतु करो सदुपयोग।
वैज्ञानिक-धर्म से ही होगा विश्वकल्याण, इसी हेतु 'कनक' करे सदा आह्वान।।(5)

अनन्त शक्ति सम्पन्न आत्मविश्वास तो-विकृत व क्षीण शक्ति युक्त अंधविश्वास

राग : 1. तुम दिल की धड़कन..... 2. एकान्त मौन में..... 3. तेरे प्यार का आसरा.....

आत्मविश्वास में न अहंभाव होता, आत्मविश्वास में न दीनभाव होता।
आत्मविश्वास न अन्धश्रद्धा होती, घृणा-तृष्णा-ईर्ष्या भी न होती।(1)

इसी में होता है सत्य विश्वास, आत्मशक्ति का सही विश्वास।
स्व-दोष-गुणों का सही परिज्ञान, आत्म-अनात्म का सही पहचान।।(2)

आत्मविश्वास है आत्मा का गुण, अनंतानुबंधी मोह से अबाधित गुण।
अनन्त शक्ति युक्त शुद्धात्मा गुण, अतएव सुदृढ़ व अखण्डित गुण।।(3)

अंधविश्वास में नहीं आत्मिक शक्ति, अंधविश्वास अतएव है दुर्बल शक्ति।
अतएव अंधविश्वास होता है बाधित, संकोचित परिवर्तित व खण्डित।।(4)

आध्यात्मिक जन होते आत्मविश्वासी, अज्ञानी मोही होते अंधविश्वासी।
सनम्र सत्यग्राही होते आत्मविश्वासी, संकीर्ण स्वार्थी होते अंधविश्वासी।।(5)

आत्मविश्वासी होते सच्चे धार्मिक, दार्शनिक चिन्तक सच्चे वैज्ञानिक।
हिताहित विवेकी व श्रद्धा प्रज्ञायुक्त, सरल-सहज नैतिक उदारता युक्त।।(6)

अंधविश्वासी होते हैं अधार्मिक, संकीर्ण हठग्राही अनुदार चित्त।
हिताहित विवेक व श्रद्धा प्रज्ञा रिक्त, न होने दार्शनिक चिन्तक वैज्ञानिक।।(7)

आत्मविश्वास से होता सदाचरण, जिससे होता है विकासपूर्ण।
अंधविश्वास से होता है पतन, 'कनकनन्दी' का लक्ष्य है आत्म उत्थान।।(8)

कार्य करने की पद्धति

चाल : 1. दुनिया में रहना है तो..... 2. तुम दिल की..... 3. रघुपति राघव.....

काम करो भाई काम करो.....सच्चा पुरुषार्थ सदा करो.....
महान् लक्ष्य से काम करो.....सत्य समता से काम करो.....(1)

आत्म-विकास का लक्ष्य धरो.....तदनुकूल पुरुषार्थ करो.....
तन-मन-आत्मा को स्वस्थ्य करो.....कार्य विभाजन से कार्य करो.....(2)

सत्य-परिज्ञान हेतु पुरुषार्थ करो.....आत्म विश्वासी सदाचारी बनो.....
दोष दुर्बलताओं को दूर करो.....धैर्य दृढ़ता से आगे बढ़ो.....(3)

प्राथमिक महत्व से काम करो.....आलस्य-प्रमाद को दूर करो.....

कार्य करो व अनुभव करो.....अनुभव करो व आगे बढ़ो.....(4)

गुणग्राही व स्वावलम्बी बनो.....नैतिक प्रामाणिक सदा बनो.....
स्व-पर उपकारी सदा बनो.....हिताहित विवेकी सदा बनो.....(5)

दोष बाधाओं से शिक्षा ले लो.....क्रम-करण को नहीं भूलो.....

कार्य-कारण को सही जानो.....भाग्य-पुरुषार्थ सच्चा मानो.....(6)

द्रव्य क्षेत्र काल भाव जानो.....उपादान-निमित्त सही मानो.....
अपेक्षा-उपेक्षा नहीं करो.....शक्ति अनुसार कार्य करो.....(7)

अपमान-निन्दा से मत डरों.....अहं-दीन भाव मत धरो.....
एकाग्र चित्त से काम करो.....'कनक' आशीष सर्वोदय करो.....(8)

हिरणमगरी, सेक्टर-4, दिनांक - 25.06.2014, रात्रि 10.32

आगम एवं आगमनिष्ठ कविता

मैं ही मेरे परम द्रव्य-सत्य-धर्म-तीर्थ हूँ

चाल : कसमें वादे.....

मैं ही मेरा परम द्रव्य हूँ, मैं ही मेरा हूँ परम सत्य।
मैं ही मेरा परम धर्म हूँ, मैं ही मेरा परम तीर्थ।।

मैं हूँ जीव द्रव्य होने से, मेरे गुण ही मुझ में स्थित।
मेरी पर्याय भी मुझ में, अत: मेरा मैं ही सत्य।।

'सद्द्रव्य' लक्षण होने से, मेरा मैं हूँ द्रव्य (व) सत्य।

'वस्तुस्वभाव' धर्म होने से, मेरा धर्म भी मुझ में स्थित।।

स्वधर्म ही है परम तीर्थ, जिससे संसार तिरा जाता।
अन्य सभी द्रव्य व सत्य, तीर्थ भी सहयोगी/(निमित्त) होते।।

मेरी गति व स्थिति हेतु, धर्माधर्म सहयोगी (भी) होते।
आकाश व काल द्रव्य भी, अवगाहन परिणमन के हेतु (होते)।।

पुद्गल द्रव्य मेरे हेतु, संसार के कारण भी होते।
दोनों के (सं) योग-वियोग से, बन्ध तथा ही मोक्ष होते।।

आस्रव-बन्ध (व) संवर-निर्जरा, मोक्ष पुण्य व पाप पदार्थ।
जन्म-मरण व सुख-दुःख भी, दोनों के संयोग-वियोग (मात्र)।।

शुद्ध स्वरूप ही मेरा होता (है), मेरा ही परम धर्म रूप।
रत्नत्रय ही मेरा शुद्ध रूप (है), (अतः) मैं ही मेरा परम तीर्थ।।

राग द्वेष मोह काम रहित हूँ, मैं हूँ मेरा शुद्ध स्वरूप।
सच्चिदानन्द धन स्वरूप (हूँ), अनन्तानन्त गुण सहित।।

द्रव्य भावनोकर्म रहित हूँ, तन-मन-धन रिक्त रूप हूँ।
जन्म-जरा-मृत्यु रिक्त रूप हूँ, शुद्ध-बुद्ध आनन्द रूप हूँ।।

यह ही मेरा (है) शुद्ध द्रव्य (व), सत्य धर्म (व) परम तीर्थ।
इसी से शून्य मेरा नहीं है रूप, मुझ में मेरा पूर्ण अस्तित्व/(स्थित)।।

मेरे अस्तित्व बिन विश्व, मेरे लिए तो शून्य रूप।
अतएव ही 'कनकनन्दी' भी, आत्मोपलब्धि हेतु दत्त चित्त।।

महान् नेतृत्व कर्त्ताओं के महान् गुण

चाल : 1. छोटी-छोटी गैया..... 2. जय हनुमान ज्ञान गुण सागर.....

सही नेतृत्व के गुण पहचानो, स्व-पर उपकारी व्यक्तित्व मानो।
तीर्थेश, गणधर, आचार्य राजा, मंत्री सेनापति आदि है नेता।।(1)

आत्मविश्वासी दृढ़ चारित्रवान्, गुण-दोष विश्लेषक विवेकवान्।
संयम धैर्ययुक्त संकल्पवान्, अनुशासन युक्त गुणी महान्।।(2)

उदार-व्यापक दूरदृष्टि सम्पन्न, प्रामाणिकता सह निर्णयवान्।
विविध प्रज्ञायुक्त प्रतिभावान्, धीर-वीर-गंभीर प्रशमवान्।।(3)

सुद्रव्य क्षेत्र काल भाव सुज्ञाता, कार्य-कारण के सम्बन्ध ज्ञाता।

निमित्त-उपादान-व्यवस्थाज्ञाता, परिस्थितिज्ञ व लोक सुज्ञाता।।(4)

दर्शन न्याय व गणितज्ञाता, संस्कृति सभ्यता (व) भाषा सुज्ञाता।
इतिहास पुराण परम्पराज्ञाता, कर्म-सिद्धांत मनोविज्ञान ज्ञाता।।(5)

स्वप्न शकुन अंगविज्ञान ज्ञाता, नीति-नियम संविधान के ज्ञाता।
तर्क राजनीति भूगोल ज्ञाता, सनम्र सत्यग्राही होता सुनेता।।(6)

आलस्य-प्रमाद व भय विमुक्त, दीन-हीन-अहंभाव से मुक्त।
संकीर्ण पक्षपात स्वार्थ से मुक्त, अनुशासन युक्त क्रूरता मुक्त।।(7)

स्याद्वाद कथन सह अनेकान्तज्ञ, ईर्ष्या-तृष्णा-घृणा-रिक्त मर्मज्ञ।
यथायोग्य आप्त/(नेता) होते सुनेता,
''कनकनन्दी'' वन्दे/(मान्य/चाहे) आध्यात्म नेता।।(8)

आगमनिष्ठ आध्यात्मिक कविता

सत् < चित्त < आनन्द या आनन्द > चित्त् > सत्
(सत् से श्रेष्ठ चित्त् चित्त् से श्रेष्ठ आनन्द)

राग : 1. एक परदेशी मेरा..... 2. रघुपति राघव..... 3. सायोनारा.....
4. ऊँकार स्वरूप.....

'सच्चिदानन्द' है मेरा स्वरूप, 'सत्य शिव सुन्दर' मेरा ही रूप।
'शुद्ध-बुद्ध आनन्दकन्द' स्वरूप, 'आत्मविश्वास ज्ञान चारित्र' रूप।।

श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर गुण सहित, सत् से श्रेष्ठतर चित्त सहित।
चित्त से श्रेष्ठतम आनन्द युक्त, तथाहि सत्य शिव सुन्दर युक्त।।

शुद्ध से श्रेष्ठतर बुद्ध स्वरूप, बुद्ध से श्रेष्ठतम आनन्द रूप।
आत्मविश्वास ज्ञान चारित्र तथा, श्रेष्ठ से श्रेष्ठ (तर) श्रेष्ठतम कथिता।।

सत् होने से मैं (हूँ) अस्तिवान्, अनन्त स्वगुणों की मैं हूँ खान।
चित्त होने से मैं हूँ ज्ञानवान्, आनन्द होने से हूँ आल्हादवान/(सौख्यवान्)।।

'शुद्ध' होने से मैं बन्धन मुक्त, 'बुद्ध' होने से मैं ज्ञान से युक्त।
'आनन्द' होने से मैं सुख स्वरूप, इसलिए अन्य द्रव्यों से श्रेष्ठ।।

'सत्य' तो अन्य द्रव्य भी होते, 'चित्त' रहित वे निर्जीव होते।
इसलिए वे न भोगते सुख, 'चिदानन्द' होने से मैं हूँ प्रमुख।।

'शुद्ध' भी चारों द्रव्य भी होते, 'चिदानन्द' शून्य निर्जीव होते।
'आनन्द' रिक्त यदि मैं होता है 'बुद्ध', जानने का फल न होता समृद्ध।।

'बुद्ध' सहित यदि होता है दुःख, 'बुद्ध' से यदि न मिलता सुख।
'बुद्ध' तो अधिक होगा दुःखद, अधिक ज्ञान से अधिक दुःख।।

अतएव श्रेष्ठ गुण होता 'आनन्द', 'आनन्द' हेतु बनना शुद्ध-बुद्ध।
'आनन्द' रिक्त शुद्ध/बुद्ध/(ज्ञान) नहीं है श्रेष्ठ, 'आनन्द' रिक्त बुद्ध नहीं है ज्येष्ठ।।

'आनन्द' प्रमुख गुण जीवों का, 'आनन्द' लक्ष्य हर जीवों का।
आनन्द हेतु ही हर कार्य करते, पुण्य-पाप या मोक्ष करते/(चाहते)।।

मुझे चाहिये शुद्ध-बुद्ध आनन्द, न चाहिए मुझे बन्ध/(भोग) आनन्द।
स्व-स्वरूप का मैं आनन्द चाहूँ, 'कनक' अशुद्ध या पर न चाहूँ।।

सत्य-समता सुख का वैश्विक रुप

चाल : 1. तुम दिल की धड़कन..... 2. सयोनारा.....

सत्य-समता (व) सुख/(शान्ति) में समाहित
समस्त विश्व (व) धर्म व लक्ष्य।
सत्य में विश्व तो समता/(साम्य) में धर्म,
सुख/(शान्ति) में है हर जीव का लक्ष्य।।

छहों द्रव्य हैं सत्य स्वरूप, विश्व है छहों द्रव्य मय।
समता में सभी धर्म समाहित, सुख प्राप्ति है हर जीव का लक्ष्य।।

जीव पुद्गल व धर्म-अधर्म, आकाश काल होते हैं द्रव्य।
इनसे ही निर्मित समस्त विश्व, अतएव सत्य है विश्व स्वरूप।।

समता में गर्भित रत्नत्रय व, दशधर्म व पाँचों ही व्रत।
गुप्ति समिति व परिषह जय, ध्यान अध्ययनमय आत्म स्वरूप।।

हर जीव का तो अन्तिम लक्ष्य, सुख ही उपलब्धि होता है।
सुख प्राप्ति हेतु (ही) प्रत्येक जीव, प्रत्येक कार्य को भी करता है।।

सत्य-समता से रहित जो जीव, सुख की इच्छा भी करता है।
सुख न मिलता दुःख ही मिलता, असत्य विषमता में सुख नहीं है।।

सुख की विकृति दुःख होने से, असत्य आदि से दुःख मिलता है।
विपरीत से विपरीत फल मिले, सुख मिले सत्य समता से।।

सत्य समता का फल है सुख, इनसे विपरीत फल है दुःख।
यही है सार्वभौम सिद्धान्त, 'कनक' का ध्येय 'सत्य-साम्य-सुख'।।

सम्यग्दृष्टि की श्रद्धा-प्रज्ञा-परिणति

चाल : 1. अच्छा सिला दिया..... 2. छोटी-छोटी गैया.....

सम्यग्दृष्टि की होती (है) परिणति, श्रद्धा प्रज्ञा सहित अलौकिक।
बुद्धि-तर्क से परे ये परिणति, रूढ़ी-परम्परा-लौकिक रिक्त।।(1)

लौकिक नीति-नियम संविधान, परे होता है सामाजिक बन्धन।
शरीर सहित होने पर भी, परे होता है श्रद्धा का आयाम।।(2)

द्रव्य भाव नोकर्म सह तथापि, स्वयं को मानता है इससे परे।
सच्चिदानन्द अमूर्त स्वभाव, अनादि अनिधन ज्ञानमय।।(3)

स्वयं को मानता है निश्चयनय से, शुद्ध-बुद्ध व नित्य निरंजन।
द्रव्य भाव नोकर्मों से रहित, अनन्त चैतन्य-वैभववान्।।(4)

क्रोध मान माया लोभ काम मोह, ईर्ष्या तृष्णा घृणा को मानता पर।
तन मन इन्द्रिय भोग वैभव को, स्व-शुद्ध आत्मा से मानता पर।।(5)

स्वयं को न माने मानव तिर्यंच, नारकी देव या धनी गरीब।
गोरा-काला या छोटा-बड़ा, दीन-हीन कायर-नीच बाला।।(6)

सुन्दर-असुन्दर मालिक-मजदूर, राजा-प्रजा या शोषक-शोषित।
नहीं मानता है निर्बल-बलवान्, बालक वृद्ध युवक तरुण।।(7)

जन्म-जरा व मरण से परे, स्वयं को मानता है अजर-अमर।
दृश्यमान समस्त अवस्थाएँ, कर्मजनित मानता श्रद्धावान्।(8)

चक्रवर्ती को भी न बड़ा मानता, निर्धनी को भी न छोटा मानता।
सभी के आत्मा तो जीव द्रव्य/(समान) होते, छोटा-बड़ा कौन कोई न होता।।(9)

स्वयं को मानता यथा शुद्ध-बुद्ध, तथाहि मानता है हर जीव को।
द्रव्य अपेक्षा से हर जीव समान, न कोई क्षुद्र न कोई महान्।।(10)

चारित्र मोह के वशवर्ती होकर, भले न धरता है श्रमणाचार।
तथापि साधु बनने के लिये, सतत करता है यत्नाचार।।(11)

नहीं करता सप्त व्यसन सेवन, नहीं करता अष्टविध मद।
तीन मूढ़ता से भी रहित होता, द्रव्य-तत्त्वों का करता विश्वास।।(12)

करे आराधना देव शास्त्र गुरु की, करता है दया दान व सेवा।
न्याय-नीति से जीविका चलाता, कमल के सम निर्लिप्त रहता।।(13)

मरण के अनन्तर स्वर्ग में जाता, स्वर्ग से चयकर मानव बनता।
श्रमण बनकर साधना करता, कर्म नष्ट कर शुद्धात्मा बनता।।(14)

सम्यग्दृष्टि न बनता नारकी, तथाहि तिर्यंच व नीच देव।
निर्धन विकलांग स्त्री न बनता, न करता दीर्घकाल संसार भ्रमण।।(15)

अन्तर्मुर्हूत में बन सकता भी सिद्ध, श्रमण बनकर सम्यग्दृष्टि जीव।
उत्कृष्ट से अर्द्ध पुद्गल परिवर्तन में, मध्यम में भी कुछ भवों में।।(16)

यह है सम्यग्दृष्टि की महिमा, ज्ञान चारित्र युक्त साधु की महिमा।
अनन्त आत्म-शक्ति की महिमा, 'कनकनन्दी' की शुद्धात्मा महिमा।।(17)

आत्मविश्वास युक्त ज्ञान सुज्ञान अन्यथा मिथ्याज्ञान

राग : 1. तेरे प्यार का आसरा..... 2. एकान्त मौन.....

सम्यग्ज्ञान होता है आत्मविश्वास युक्त, मिथ्याज्ञान होता है आत्मविश्वास मुक्त।
श्रद्धा प्रज्ञा युक्त होता है सुज्ञान, श्रद्धा प्रज्ञा मुक्त होता है कुज्ञान।।(1)

इन्द्रिय मन से जो ज्ञान होता, श्रद्धा युक्त सो सुमतिज्ञान होता।
श्रद्धा मुक्त से कुमतिज्ञान होता, श्रद्धा का नामान्तर आत्मविश्वास होता।।(2)

मतिज्ञान पुरस्सर होता श्रुतज्ञान, श्रवण अध्ययन से होता यह ज्ञान।
आत्म अभिमुख होता यह ज्ञान, आत्मानुभव रूप होता श्रुतज्ञान।।(3)

केवल सुनना या श्रुत/(ग्रंथ) पढ़ने से, होता है मतिज्ञान अनुभव शून्य से।
श्रद्धा रहित यदि होता श्रुतज्ञान, वह है कुश्रुतज्ञान यह आगम वर्णन।।(4)

अवग्रह ईहा आवाय व धारणा, मति स्मृति संज्ञा चिन्ता अभिनिबोध।
जो ज्ञान होते इन्द्रिय मन से, वे सब मतिज्ञान जानो आगम से।।(5)

अनुभव पूर्ण सुश्रुतज्ञान से ही, होता है ज्ञात आत्मा-परमात्मा भी।
मूर्तिक-अमूर्तिक का भी होता ज्ञान, आंशिक रूप से ही परोक्ष ज्ञान।।(6)

अन्यथा मतिज्ञान या कुश्रुतज्ञान से, न होता यह ज्ञान अनुभव शून्य से।
अविधज्ञान भी होता सु या कुज्ञान, श्रद्धा सहित सु अन्यथा कुज्ञान।।(7)

मन:पर्यय होता अवश्य सुज्ञान, अन्य के मनगत जानता यह ज्ञान।

केवलज्ञान तो अनन्त सम्यग्ज्ञान, लोकालोक ज्ञाता होता है यह ज्ञान।।(8)

सम्पूर्ण घातीकर्म क्षय होने से, सम्पूर्ण ज्ञान गुण प्रगट होने से।
युगपत् यह ज्ञान जानता सभी को, 'कनकनन्दी' चाहे केवलज्ञान को।।(9)

आगम एवं आध्यात्मिक दृष्टि से

लौकिक–व्यवहार सम्यग्दृष्टि तथा निश्चय सम्यग्दृष्टि
(व्यवहार से धार्मिक तथा निश्चय से धार्मिक)

चाल : छोटी-छोटी गैया.....

आत्म-स्वभाव है सम्यग्दर्शन, जो सत्य प्रतीति/(श्रद्धान) मय होता है।
आत्मविश्वास सह सुज्ञान होता, जिससे होता सम्यग्चारित्र है।।(1)

अनन्तानुबन्धी व मिथ्यात्व कर्म के, उपशम क्षयोपशम क्षय सहित है।
अष्टमद व तीन मूढ़ता रहित, अष्ट गुण-अष्ट अंग सहित है।।(2)

इसी से होता है तत्त्वार्थ श्रद्धान, जो षट् द्रव्य सप्त तत्त्व मय है।
नव पदार्थों का भी होता है श्रद्धान, देव शास्त्र गुरु श्रद्धान भी है।।(3)

यह है आगम करणानुयोग वर्णित, निश्चय-व्यवहार सम्यग्दर्शन है।
चतुर्थ गुणस्थान से प्रारम्भ होकर, होता है पंच परमेष्ठी तक में है।।(4)

नारकी देव भी हो सकते सुदृष्टि, नहीं हो सकते वे पंच परमेष्ठी।
संज्ञी पंचेन्द्रिय पशु-पक्षी भी, हो सकते है सुदृष्टि-देशव्रती।।(5)

अनेक देव भी होते हैं कुदृष्टि, किन्तु न होते हैं द्रव्य मिथ्यादृष्टि।
पूजते विमान स्थित जिन चैत्य को, कुलदेव मानकर (अतः) वे कुदृष्टि।।(6)

ऐसा ही जो मानव करते हैं, देव शास्त्र गुरु की भी आराधना।
मिथ्यात्व-अनन्तानुबन्धी उदय से, न होती उनकी सच्ची आराधना।।(7)

लोक व्यवहार से भले वे, नहीं सेवते हैं द्रव्य मिथ्यात्व।
अंतरंग मिथ्यात्व उदय से, नहीं होता है उन्हें सम्यक्त्व।।(8)

अतः उन्हें होता है अष्टमद, सत्ता-सम्पत्ति प्रसिद्धि का मद।
न होते 'संवेग[1] निर्वेद[2] उपशम[3], पश्चाताप[4] व दोष[5] शोधन।।(9)

भक्ति[6] वात्सल्य[7] अनुकम्पा[8] से रिक्त, होते है अष्ट अंगों से रहित।
न जानते आत्म-परमात्म स्वरूप, न जानते आत्म-अनात्म रूप।।(10)

भले होते कुछ मन्दकषायी जीव, यथा भोगभूमिज कुदृष्टि जीव।
तथापि न वे होते सुदृष्टि जीव, उदय से मोह मिथ्यात्व भाव।।(11)

सच्चा सम्यग्दृष्टि स्वयं को मानते, निश्चय से शुद्ध-बुद्ध रूप।
द्रव्य-भाव-नोकर्मों से रहित, अनन्त चतुष्टय सहित रूप।।(12)

स्वयं को न मानते दीन व हीन, नहीं करते हैं वे अभिमान।
सत्ता-सम्पत्ति प्रसिद्धि बुद्धि से, स्वयं को मानते हैं पूर्ण भिन्न।।(13)

पंच अणुव्रतधारी व निर्व्यसनी, होते हैं जो वे देशव्रती।
पंच महाव्रतों को धारण करते, होते हैं जो होते महाव्रती।।(14)

अमूर्तिक गुण है सम्यग्दर्शन, जो आत्मविशुद्धि से है उत्पन्न।
केवली ज्ञानगम्य है यह गुण, उक्त गुणों से होती बाह्य पहचान।।(15)

ज्ञानवरणीय कर्म तीव्र उदय से, भले न बने कोई महाज्ञानी।
तो भी सुदृष्टि होता है भेदज्ञानी/(सुज्ञानी), 'कनक' बनना चाहे सर्वज्ञानी।।(16)

पंच व्रत (अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) पालन करने वाले, सप्त व्यसन त्याग करने वाले तथा क्रोध, मान, माया, लोभ त्यागने वालों के लिए मानवकृत किसी भी संविधान या कानून की आवश्यकता नहीं है, वे कानून व संविधान के परे होते हैं। मानवकृत अधिकांश संविधान एवं कानून सार्वभौम व सार्वकालिक समतापूर्ण नहीं होते।

-आचार्य कनकनन्दी

परिशिष्ठ

प्रवीण मुनि का पत्र

ॐ अर्हम्

आचार्य भगवान् श्री कनकनन्दी जी म.सा. की चरण सेवा में वन्दन-अभिनन्दन करता हूँ।

आपश्री का मंगल प्रवेश से लेकर अब तक दर्शन नहीं कर पाया इसका मुझे अपने आप में खेद है।

''जैन तत्त्व प्रकाश'' ग्रंथ आपश्री को अच्छा लगा जानकर महत्ती प्रसन्नता हुई। आवश्यकता हो तो ग्रहण करने की कृपा करवावे।

आपश्री के शीघ्र दर्शन करने की भावना रखता हूँ। अन्य संतजन एवं ब्रह्मचारी जी को हमारी वन्दना सुख साता परिज्ञात करवावे।

आपका ही अपना
मुनि प्रवीण
संघस्थ-राष्ट्रसंत गणेश मुनिजी
'शास्त्री'

आचार्यश्री कनकनन्दी जी के नाम प्रवीण मुनि की पाती

सृजनकार-प्रवीण मुनि जी
संघस्थ-राष्ट्रसंत गणेश मुनि 'शास्त्री' जी

चाल : 1. सायोनारा..... 2. आओ बच्चों.....

उन्हें कैसे भुलाएँ.....जिन्होंने जैन-जन एकता की.....
उन्हें कैसे भुलाएँ.....जिन्होंने एकता पे विश्वास किया.....
वन्दे आचार्य वरम्.....वन्दे सद् गुरुवरम्.....(स्थायी).....

आचरण के साथ.....अपनी धारणा-परम्परा दी.....
उन्हें कैसे भुलाएँ.....नव इतिहास जिन्होंने दिया.....
उन्हें कैसे भुलाएँ.....जिनने समाज शुद्धिकरण किया.....(वन्दे).....(1)

समाज की पुरानी सीढ़ियाँ/(रूढ़ियाँ).....जर्जर हो चुकी हैं.....
समय रहते हम सबको.....नव-निर्माण करना है.....
आचार्य कनकनन्दी जी का.....नेतृत्व प्रेरणादायी है.....(वन्दे).....(2)

प्रासाद छोड़कर वर्धमान.....वीर-महावीर बन गये.....
प्रमाद छोड़ कनकनन्दी.....रणवीर/(धर्मवीर) बन गये.....
लोग कुछ भी कहते रहे.....ध्यान नहीं देना है.....
अपने कर्म पथ पर.....आगे बढ़ते रहना है.....(वन्दे).....(3)

संतों का सान्निध्य बड़ी.....कठिनाई से मिलता है.....
बहार-ए-चमन में.....कनक गुरु जैसा नहीं मिलता.....
खूब फलों फूलों गुरुवर.....हर हाल में खुश रहो.....
''प्रवीण मुनि'' का शुभ भाव.....सदा तुम्हारे साथ है.....(वन्दे).....(4)

चलते-चलते मेरी कविता यह याद रखना.....
कभी अलविदा ना कहना.....2

(हिरणमगरी, सेक्टर-11, वर्ष 2014 के वर्षायोग अवधि में लिखी यह कविता)

सरलीकरण-श्रमण मुनि सुविज्ञसागर

'कनक गुरू' के नाम धर्म व शिक्षा

सृजनकार-प्रवीण मुनिजी

चाल : ऐ मालिक तेरे बन्दे हम.....

हे! 'कनकनन्दी' तेरे बन्दे हम.....ऐसे हो हमारे करम.....
धर्म प्रेमी बने.....शिक्षा प्रेमी बने.....विश्व में फैले जैन धरम.....
हे! कनकनन्दी.....

तुमने ज्ञान-ज्योति जलाई.....अज्ञानी को राह दिखाई.....
करे ऐसे करम.....विश्व में प्रसारे.....अहिंसा परमो धरम.....
हे! कनकनन्दी.....

तेरा मानव कहाँ जा रहा.....सम्प्रदायों में बँटता जा रहा.....
कोई दिगम्बर.....कोई श्वेताम्बर.....कोई तेरापंथी है बना.....
हे! कनकनन्दी.....

है तेरी लेखनी में वो दम.....जिससे मिट जाये जग के भरम.....
विश्व धर्मसभा.....के माध्यम से.....सारे जग में प्रसारे धरम.....
हे! कनकनन्दी.....

जैन एकता से लेकर.....जन एकता का करे यतन.....
अब न हो बँटवारा.....हो भाईचारा.....हम भूलाते चले मतभेद.....
हे! कनकनन्दी.....

अब जहाँ भी मन्दिर बने.....साथ में विद्यालय भी बने.....

ज्ञान-विज्ञान-गुण.....की हो प्रभावना.....जिसे दुनिया करेगी याद.....
हे! कनकनन्दी.....

गुरुवर कनक का नाम लेना

रचनाकार-प्रवीण मुनिजी

चाल : ऐ रात के मुसाफिर.....

गुरुवर का नाम लेना.....भक्ति में रमने वाले.....
चरणों की धूल लेना.....चिन्मयता पाने वाले.....
श्वासों में 'कनक' गुरु हो.....बस हो बसेरा तेरा.....
जिह्वा मेरी रुके ना.....गुणगान तेरा गाते.....
श्रीसंघ के प्रभाकर.....आशीष हमको देना.....
धन्य हुए हैं प्राणी.....सुनकर जिनवाणी खास.....
मेरे ध्रुव तारा इक हो.....रत्न संघ गगन में.....
दिव्य देशना हो तेरी.....मुक्ति सिद्धि प्राप्ति हेतु.....
देह से विदेही बनना.....मेरा लक्ष्य है तुम्हीं से.....
तुम से रूचि जगी है.....'कनक' तत्त्व देने वाले.....
विश्व धरा हुई धन्य.....नाम तेरा अमर है.....
अरदास करे प्रवीण.....हो करके विनीत.....

हिरणमगरी, सेक्टर-11, दिनांक - 24.08.2014

कनक गुरु के चरणों से दूर जाना नहीं

भाव शब्द सुमन-प्रवीण मुनिजी

चाल : परदेशी-परदेशी जाना नहीं.....

'कनक गुरु' की शरण छोड़ जाना नहीं.....2 कभी भूल के.....2
'कनकनन्दी' एक सहारा.....शरणागतों का
आप जहाँ जाना.....हमें साथ ले जाना.....कनक गुरु.....

'कनक गुरु' के सेवक का बेड़ा पार हुआ.....
जो भी शरण में आया.....उसका उद्धार हुआ.....
ज्ञानी-विज्ञानी बनकर ध्यान लगाया
भव के सागर से उसे पार लगाया.....कनक गुरु.....

प्रवीण मुनि के लिये आचार्यश्री कनकनन्दी जी का पत्र

सत्य साम्य सुखाय नमः
श्रीयुत मुनि प्रवीण जी,

संघस्थ-राष्ट्रसंत गणेश मुनि 'शास्त्री' जी ससंघ
सस्नेह सुख साता पृच्छा!

अत्र कुशलम तत्रास्तु!

आपके द्वारा प्रेषित ग्रंथ ''जैन तत्त्व प्रकाश'' सादर पत्र सह प्राप्त हुआ। आचार्य भगवन्त श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के कर-कमलों में ग्रंथ प्रदान करते ही पूज्यश्री ने अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव किया। इसके अतिरिक्त आपके द्वारा सृजित समन्वयात्मक कविता ''आचार्य कनकनन्दी जी के नाम प्रवीण मुनि की पाती'' प्राप्त कर आचार्यश्री संघ को अतिशय आनन्दानुभूति हुई है। आपकी यहाँ आकर मिलने की जो भावना है उन भावों के लिए आह्लादपूर्वक सुस्वागत है। आप श्रीसंघ सहित पधारें! ऐसी शुभ भावना है। आपकी काव्यात्मक भावाभिव्यक्ति अत्यन्त श्लाघनीय व अनुमोदनीय है। आपकी कविता व पत्र आचार्यश्री स्व-ग्रंथ में देना चाहते हैं।

शुभाकांक्षा सह
श्रमण मुनि सुविज्ञसागर
संघस्थ-वैज्ञानिक श्रमणाचार्य
श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव
आदिनाथ भवन,
हिरणमगरी, सेक्टर-11, उदयपुर

शुभ खर्च शुभ लाभ

(आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ससंघ का
जैन एकता सम्बन्धी प्रयास अनुकरणीय व अनुमोदनीय)

-मुनि आर्य हंस स्थानकवासी
स्थान-भूताला

भूताला-मुनि आर्यहंस जी ने अपने प्रवचन में फरमाया कि, हम लाखों रुपयों का दान करवाते हैं, करते हैं, लेकिन अगर हमारा भाव शुभ नहीं है तो सब बेकार है। मन्दिर बनवाना, स्थानक बनवाना कोई पाप नहीं है, लेकिन इसके पीछे हमारा भाव शुभ होना चाहिये। सबसे पहले हमारा शुभ भाव अपने माता-पिता के प्रति बनना

चाहिये। हम जाति से भले ही जैन हैं यह कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन अगर हमारे कर्मों में जैनत्व है तो यह हमारा शुभ भाव है। अन्यथा सब बेकार है।

उन्होंने अपने प्रवचन में कहा कि आज समाज को आचार्य कनकनन्दी जैसे संतों की आवश्यकता है जिन्होंने हल्दी-घाटी में महाराणा-प्रताप की कर्मभूमि में अपना चातुर्मास किया। वहाँ से पूरे मंगरा प्रांत पूरे देश में, विदेश में जैन एकता की मिसाल कायम की। आज इसी प्रकार समस्त संत मिलकर एकता के सूत्र में बंधते जायेंगे तो आज जैन समाज को अल्पसंख्यकता में नहीं रहना पड़ेगा।

दिनांक - 14.08.2014
गाँव-भूताला, समय - 9.30

भ्रष्टाचार की जीवन रेखा न बनें अदालत

राजेश पासवान,
एसो. प्रोफेसर, जेएनयू

'मुझे इस देश की न्यायपालिका पर पूरा भरोसा है।' यह वह कथन है जो हमें प्राय: तब सुनने को मिलता है जब भी कोई नामचीन व्यक्ति कानून के लंबे पर फिसलन भरे हाथों की गिरफ्त में आ जाता है। मैं प्राय: इस कथन में छिपे उनके मंतव्य के बारे में सोचता हूँ। सालों-साल अदालत में केस चलते और कोर्ट से आते-जाते दिए जाने वाले इस बयान का आखिर क्या आशय है ? क्या सचमुच यह बयान हमारी न्याय प्रणाली की बेहतरी का सूचक है ? अनुभव और आँकड़े इसकी गवाही नहीं देते। कहने की जरूरत नहीं कि जब न्याय पराजित होता है तो भ्रष्टाचार फलता-फूलता है।

यह बात कहने की जरूरत इसलिए पड़ी क्योंकि हम भ्रष्टाचार पर सारा ठीकरा नेताओं, अधिकारियों और उद्योगपतियों के सिर फोड़ने के आदि हो गए हैं, पर पूरी प्रणाली के अहम अंग न्यायपालिका पर सवाल उठाना उचित नहीं समझा जाता है। मुझे लगता है कि अब इसे बदले जाने की जरूरत है। न्यायपालिका को संदेह के परे मानने का विशेष औचित्य नहीं दिखता। कई बार तो लगता है कि न्याय प्रणाली ही मानो भ्रष्टाचार की जीवन रेखा बनती जा रही हैं इसलिए अब जरूरत इस बात की है कि न्यायपालिका के निर्णयों को गुण-दोष विवेचना से परे न माना जाए। मीडिया में न्यायपालिका के निर्णयों पर भी बहस हो, यह आवश्यक हो गया है। अगर हमारी न्याय प्रणाली स्वस्थ और सेहतमंद है तो निर्णयों पर बहस से वह कमजोर नहीं, वरन् मजबूत ही होगी। हमें गाँठ बाँध लेनी चाहिए कि न्याय प्रणाली को बेहतर बनाए बिना हम भ्रष्टाचार से लड़ाई में कभी सफल नहीं हो सकते। भ्रष्टाचार पर शिकंजा कसने

का दूसरा जाँचा-परखा उपाय यह है कि अधिक से अधिक प्रक्रियाओं और लेन-देन को ऑनलाइन कर दिया जाए। कुछ ऐसा नियम बना दिए जाने चाहिए कि 5 या 10 हजार से अधिक का हर पेमेंट ऑनलाइन ही लिया जाए।

शिक्षा संस्थानों में ही मिल रहे भ्रष्ट संस्कार

राजीव गुप्ता, प्रोफेसर,
राजस्थान विश्वविद्यालय

आज के हालात में ऐसा लगता है कि शिक्षा प्रणाली भ्रष्टाचार के संस्कारों की 'नर्सरी' बन गई है। अच्छे स्कूलों में बच्चे का एडमिशन कराने के लिए माता-पिता आज जो कुछ करने को मजबूर हैं वह सब भ्रष्टाचार के दायरे में ही आता है जो कि आगे जाकर स्कूलों द्वारा नियम विरुद्ध तमाम हथकंडों से पैसा वसूलने और कैपिटेशन फीस तक जाता है। इस प्रक्रिया से गुजरने वाले छात्र पर ही संस्कार पड़ेंगे जो आगे जाकर भ्रष्टाचार करेगा। इनसे निपटने के लिए कुछ उपाय तुरंत अपनाए जा सकते हैं-

- शिक्षा के अधिकार कानून को हर निजी और सरकारी शिक्षण संस्थान में लागू किया जाए।
- कौन शिक्षक अगले सप्ताह किन विषयों या विषय-वस्तु की कितनी क्लासे लेगा और क्लास लेने के बाद उसकी कक्षा में कितने छात्र आए थे, इसका रिकॉर्ड सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किया जाना चाहिए। बल्कि उच्च शिक्षा में हर क्लास के एक दिन पहले छात्रों को शिक्षक द्वारा ली जाने वाली क्लास के संक्षिप्त नोट्स भी उपलब्ध कराए जाने चाहिए, जिससे स्टूडेंट 'पढ़ाए' जाने के बजाय संवाद की तैयारी से आये।
- सभी नियुक्तियों के लिए होने वाले साक्षात्कार की वीडियो रिकॉर्डिंग हो और इसे संस्थानों की वेबसाइट पर डाल दिया जाना चाहिए।
- सभी निजी और सरकारी शिक्षा संस्थानों की सरकार और सिविल सोसायटी समितियों द्वारा मॉनीटरिंग की जाए।

आत्मविश्वास रखें

आत्मविश्वास जितना सत्य के निकट की चीज है, अहंकार उतना ही मिथ्या का पर्यायवाची। जो यह जानता है कि वह क्या है, वह यह भी निर्णय कर सकता है कि उसे क्या करना है। आत्मविश्वासी बातचीत में बार-बार अपने लक्ष्य की आवृत्ति अहंकार-प्रेरित होकर नहीं करता, बल्कि इसलिए करता है कि उसके सामने प्रत्येक

क्षण उस लक्ष्य का स्पष्टतर चित्र प्रकट होता रहता है। इन आवृत्तियों के द्वारा वह अपने अभिलक्षित संकल्प को और बलिष्ठ करता है और धैर्य के साथ अपने पथ पर गतिशील बने रहने की प्रेरणा प्राप्त करता है। हम यह भी जानते है कि हमारे सभी कार्यों और व्यवहारों के मूल में अहंकार की ही प्रधानता रहती है।

अहंकार की उचित व्याख्या है-महत्वपूर्ण बनने की आकांक्षा। ऐसे व्यक्ति, जिनमें आत्मविश्वास का अभाव होता है, उनको प्राय: अपने को क्षुद्र या हीन मानने की धारणा हो जाती है। दूसरों की बात तो छोड़ ही दीजिए, अपनी नजरों में ही वे खुद को ऊपर नहीं रख पाते।

दूसरों का व्यवहार उनके प्रति कैसा भी हो, लेकिन वे यही समझते हैं कि हम सबसे तिरस्कृत और उपेक्षित है। यह भावना उस व्यक्ति को मौन और निष्कर्म बना देती है। इससे उनके विचारों की गति रुक जाती है और उनका व्यक्तित्व संकुचित हो जाता है। ऐसे व्यक्ति धीरे-धीरे आत्मनिंदक हो जाते है।

दैनिक नवज्योति, दिनांक - 30.07.2014

मेरी वैराग्य कहानी, मेरी जुबानी

पिताजी! आप हमेशा मुझसे कहा करते हो कि किसी भी विषय को गंभीरता से लो। अपने परम उद्देश्य पर चलो, परन्तु मैं कभी-कभी अपितु हमेशा ही अपने कर्त्तव्यों में आलस्यता बरतता रहा, परन्तु कल जब मैं भरतेश वैभव के अंतिम पृष्ठ पढ़ रहा था। उसने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया, कि श्रेणिक तू ये क्या कर रहा है, वो देख भरत चक्रवर्ती जो छह खण्ड का अधिपति हैं, वो भी जन्म-मरण के फेर से मुक्त होना चाहता है, जैनेश्वरी दीक्षा की कामना करता है, तो तू तो उसके सामने तृणमात्र भी नहीं है। तू अपना कल्याण कर अपना परम उद्देश्य पा। इन्हीं चीजों ने मुझे कल बहुत सोचने पर मजबूर कर दिया। मैं देर रात्रि तक सोचता रहा, कई प्रकार के खयाल मन में आए, परन्तु मैंने सभी विवादास्पद बातों को दरकिनार करते हुए, गुरुदेव के श्री चरणों में पुन: क्षमायाचना पूर्वक जाकर रहने का निर्णय लिया है।

निर्णय लेते समय कई विचार मन में आए परन्तु मुझे पता है कि मेरे पिता अच्छे कार्य और इस परम उद्देश्य के निर्वाह हेतु मेरे लिए पूर्णत: सहायक रहेंगे। मुझे इस बात की भी खुशी है कि मेरा पूरा परिवार इस महान् कार्य में मेरा सहयोग करता है। पिताश्री आपने कभी मुझे इन कार्यों के लिए नहीं रोका है, आशा एवं उम्मीद करता हूँ कि आगे भी आप मुझे नहीं रोकेंगे।

अत: मैं स्वयंमेव ही गुरुदेव के पास जा रहा हूँ। इससे आपको भी फायदा रहेगा, आपको किसी की बात नहीं सुननी पड़ेगी। आप कह पाओगे की वह स्वयं ही चला गया और मैं ये भी जानता हूँ की आपको इस तरह ये फैसला मैंने कैसे किया, और कैसे चला गया। इस बात पर कभी विश्वास नहीं होगा, क्योंकि आप इसके लिए मुझे अयोग्य ही समझते रहे हो। परन्तु, हाँ मैं बहुत भटका हुआ हूँ और फैसले लेने में मजबूत नहीं हूँ, अपितु फिर भी मैंने ये फैसला बहुत ही सोच-समझकर, हर पहलु को ध्यान में रखकर किया है।

कुछ भोग की वस्तुओं की आकांक्षा में मैं संसार के सारे झंझटों में नहीं फँसना चाहता हूँ। क्योंकि मुझे एकदम इतने सारे Incident से समझ आ चुका है कि संसार में सभी जीव स्वार्थी है। सब अपना ही सोचते है, आजकल कोई किसी का नहीं है। परन्तु मुझे ये बात नहीं जमती है और आप ही तो कहते हो कि वह मनुष्य ही क्या जो स्वयं के लिए जिए। स्वयं के लिए तो पशु भी जी लेते है। एवं कई गतियों में कई बार भ्रमण करने के उपरांत ये मनुष्य गति हमें प्राप्त हुई है तो इसका सदुपयोग करना चाहता हूँ और यदि आप मेरे बीते कल को लेकर सोचते हैं, और कहना चाहते हो तुझे भेजा तो था परन्तु लौट आया। मैं जानता हूँ पिताजी मैं लौट आया। परन्तु उस समय मुझमें परिपक्वता नहीं थी, इतनी विचार करने की क्षमता नहीं थी और बस दूसरों के कहने पर चलता था, परन्तु लौट आने पर मुझे जिन कटु अनुभवों का सामना करना पड़ा, उसने मुझे इस निर्णय के लिए सक्षम बनाया और इन अनुभवों के उपकार बदौलत ही में यह फैसला ले पाया हूँ।

इन सब चीजों से ऊपर सबसे बड़ी बात यह है कि आचार्यश्री कनकनन्दी जैसे गुरु मुझे कहीं नहीं मिलेंगे। क्योंकि मैं बस इतना जानता हूँ कि गुरुदेव के साथ रहूँगा तब ही मैं एक सच्चा इंसान, व्यक्ति, संत बन पाऊँगा। उनकी यदि 10% चीजे भी मैं सीख पाऊ तो मैं अपने-आपको धन्य समझूँगा और आप भी तो कहते हो कि शीश कटाकर भी यदि उत्तम गुरु मिले तो उन गुरु के लिए सब त्याग देना चाहिए और दूसरी तरफ संसार की बेड़ी है जिसका अच्छा-खासा अनुभव है आपको इसलिए मैं आपको भी कहूँगा कि इन लोगों को छोड़कर इस संसार को त्यागकर जल्द से जल्द आप भी दीक्षा ग्रहण करें। क्योंकि मौत किसी की रिश्तेदार नहीं होती है और सबसे महत्वपूर्ण बात न मैंने पहले अपने ब्रह्मचर्य पर दाग लगने दिया है न आगे लगने दूँगा। मैं व्रत का भंगी नहीं बनना चाहता हूँ और आपके लिए भी यही मनोकामना करता हूँ की जल्द से जल्द आप भी मोक्ष मार्ग पर अग्रसर हो।

ब्र. श्रेणिक

(संघस्थ आ. कनकनन्दी जी गुरुदेव)

मेरी वैराग्य कहानी, मेरी जुबानी

भावाभिव्यक्ति
-ब्र. श्रेणिक

शब्द रचना
-श्रमणी आ. सुवत्सलमति माताजी

राग : दुनिया बोले.....

दुनिया बोले, बोलती रहे,
मैं हूँ दीवाना अध्यात्म-भाव का.....(ध्रुवपद)

माता-पिता तो जन्मदाता तन के, बंधु-बांधव नाते इस देह के,
स्वार्थवश सभी संबंध रखते, स्वार्थ ना पूरा हो तो मुँह मोड़ते,
इस मायावी जगत से मुझे क्या लेना.....दुनिया बोले..... ।।1।।

मोहवश मैंने भ्रमण किया, अनादि से योनियों में घूमता रहा,
भरतेश-वैभव से मुझे प्रेरणा मिली, चक्रवर्ती को भी यहाँ शांति न मिली,
आत्म कल्याण की मेरी भावना.....दुनिया बोले..... ।।2।।

संसार तो लुभावना लगता है, दूरस्थ पहाड़ सुहावना लगता है,
संसारी भुलैया में नहीं पड़ना है/फँसना है, स्वार्थी दुनिया से दूर रहना है,
अपना हित सोचना ही बुद्धिमानी है.....दुनिया बोले..... ।।3।।

स्वयं के लिये तो पशु भी जीये, स्व-पर उपकार के लिये हम भी जीये,
दुर्लभ मनुष भव पाया हूँ, भव-भ्रमण से छूटना चाहता हूँ,
भ्रमण से छूटने गुरु पास आया हूँ.....दुनिया बोले..... ।।4।।

बहुत चिन्तन के बाद निर्णय किया, अनेक भावों ने मेरा पीछा है किया,
विभावों पर मैंने विजय पाया, गुरु चरणों में मैं शीघ्र आया,
जन्मदाता तो मेरे हित-चिन्तक (सहायक).....दुनिया बोले..... ।।5।।

धार्मिक संस्कार मुझे परिवार से मिले, आहार दान साधु सेवा के अवसर मिले,
कोई तुम्हें ना कहे पुत्र को भेजा, गुरु चरणों में मैं स्वयं आया,
अपनी योग्यता साबित करने आया.....दुनिया बोले..... ।।6।।

एक बार भूल की पछताया, संसार सुख मेरे मन ना भाया,
तब मैं विचारों से परिपक्व न था, निर्णय लेने में क्षमतावान न था,
दूसरा कहे वह करता था.....दुनिया बोले..... ।।7।।

कटु अनुभवों से शिक्षा लिया हूँ, स्वयं निर्णय लेने में समक्षम हुआ हूँ,
अनुभव ज्ञान से निर्णय लेकर, मोक्ष मार्ग पर अब दृढ़ रहूँगा,
मोक्ष मार्ग प्रशस्त हो यही चाहता.....दुनिया बोले..... ।।8।।

गुरु छाया में समर्पित होऊँगा, उत्तम श्रावक व संत बनूँगा,
गुरु कृपा पाकर धन्य होऊँगा, गुरु देशना से आत्मकल्याण करूँगा,
सिर कटे गुरु मिले तो भी सस्ता.....दुनिया बोले..... ।।9।।

जीवन की घड़ियाँ हैं क्षण भंगुर, शरीर से आत्मा कब हो जाये दूर,
हे! पिता स्वयं आत्मकल्याण करो, संसार की मोह-माया को छोड़ों,
समाधि पूर्वक मैं मरण को वरूँ.....दुनिया बोले..... ।।10।।

गंभीर चिन्तन कर यह मैं लिखा, संसार सुख क्षणिक है यह मैं सीखा,
विनम्रता से सबको प्रणाम करूँ, 'कनक' चरणों को पाकर दीक्षा को वरूँ,
परम लक्ष्य को मैं प्राप्त करूँगा.....दुनिया बोले.....बोलती रहे,
मैं हूँ दीवाना अध्यात्म-भाव का।।11।।

बन्ध एवं मोक्ष डगर

राग : कौन दिशा में तुझे.....

कौन दिशा में तुझे जाना है रे! मनुआ.....2
एक मोक्ष की डगर, एक बन्ध की डगर, जरा सोच तो तू.....2
अज्ञान मोह स्वार्थ काम-क्रोध मय होता है बन्ध डगर।
इसी से विपरीत सत्य समतामय, होता है मोक्ष डगर।
विवाह बन्धन परिवार सर्जन, होता है बन्ध डगर।
महाव्रत धारण व ध्यान-अध्ययन होता है मोक्ष डगर।.....(1)
ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि प्रपंच होता है बन्ध डगर।
निस्पृह निराडम्बर एकान्त मौन, ध्यान होता (है) मोक्ष डगर।
तेरा-मेरा भेद-भाव शत्रु-मित्र प्रभेद, होता है बन्ध डगर।
मैत्री प्रमोद व माध्यस्थ कारूण्य, होता है मोक्ष डगर।.....(2)
आर्त रौद्र ध्यान चंचल/(मलिन) चिन्तन, होता है बन्ध डगर।
धर्म शुक्ल ध्यान निर्मल परिणाम, होता है मोक्ष डगर।
पर में प्रवृत्ति चित्त/(भोग) में आसक्ति, होता है बन्ध डगर।
स्वयं में प्रवृत्ति चित्त/(भोग) निवृत्ति, होता है मोक्ष डगर।.....(3)
मोह क्षोभ क्षय अष्ट कर्म क्षय, होता है मोक्ष स्वरूप।
यह ही निज रूप स्वशुद्धात्मा रूप, 'कनक' का शुद्ध (भावी) रूप।।
मोक्ष से मिलते है अनन्त सुख वीर्य ज्ञान दर्शन सम्यक्त है।
अव्याबाधमय अनन्त वैभव, जो चिदानन्दमय रूप है।.....(4)

हिरणमगरी, सेक्टर11, दिनांक - 17.07.2014, मध्याह्न 2.17
(यह कविता ब्र. श्रेणिक तथा डॉ. अजय जैन की श्रमण दीक्षा लेने की भावना से भी प्रेरित है)

प.पू. स्वाध्याय तपस्वी आचार्य भगवंत श्री कनकनन्दी जी गुरुदेवाय नमः

बुधवार,

दिनांक - 30 जुलाई, 2014

प्रिय,

''श्रेणिक''

वन्दन-अभिनन्दन.....

आजकल मैं बेहद आल्हादित हूँ और तुमसे प्रेरित भी हूँ, मेरा तन-मन अत्यधिक गौरवान्वित होता हुआ मुझे हरदम-हरपल इस बात के लिये उत्साहित करता है कि अजय!! अब सारे प्रमादों एवं आलस्यों पर पानी फेरो और बढ़ चलो, कदम बढ़ाओ, मोक्ष मार्ग के लिये उद्यत होओ क्योंकि श्रेणिक ने जो अपने कदम इस ओर बढ़ाये हैं वो कोई सहसा होने वाली या सरलता से हस्तगत होने वाली घटना नहीं है। अति पुण्यशाली के लिये ही ये संभव है, यद्यपि ये अवसर, ये स्नेह पूज्यश्री के चरण-रज का ही प्रताप है। मैं अपने अनुभवों में ही ऐसी महान् घटनाओं को स्वयं में महसूस करता रहता हूँ। गुरु-प्रसाद स्वरूप सकारात्मक प्ररूपणाओं का आगमन निरन्तर जीवन में उपस्थित पाता हूँ।

यद्यपि सोचते-सोचते रहने से सोच ही लग जाने का अंदेशा रहता है तथापि जो क्रांतिकारी अथवा कर्त्तव्यनिष्ठ होते हैं वे इन महान् उपलब्धियों को सहज प्राप्त कर आगे बढ़ जाते है। और एक मैं हूँ जिसने सोचने में ही 45 वर्ष गवाँ डाले हैं। मुझे अपने मूर्खत्व पर बेहद अफसोस भी होता है, किन्तु इस बात का भी परम संतोष है कि आज मैं संसार का सबसे खुशनसीब हूँ जिस पर पूज्यश्री सहित समस्त श्रीसंघ का वरदहस्त एवं शुभाशीष है।

मुझे हर्ष है कि मेरा मन सब ओर से आध्यात्मिकता को पाने के लिये बेचैन रहता है, तदनुकूल चिंतन-मनन भी करता रहता है।''श्री भरतेश-वैभव'' तो मैंने भी पढ़ा था किन्तु स्वाध्याय का नवनीत जो तुम्हारे हाथ लगा, इसका मुझे तुम्हारा सदैव गौरव करने का मन करता है।

तुम्हारे जैसे दृढ़ता पाने की मैं कोशिशें करता रहूँगा और हमेशा चाहूँगा कि ऐसी ही, सम्यक प्रयास-परिणाम के साथ पानी की जीजीविषा मुझमें पैदा होती रहे।

"I proud of my son" मैंने उदयपुर पहुँचते ही यह तुम्हें कहा था। ऐसा

तुमसा साहस बिरले ही किया करते है। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि तुम भविष्य में गुरुदेव के प्रयासों को पूरी ताकत के साथ आगे बढ़ाकर, माँ जिनवाणी की सुश्रुषा और जैनत्व की आभा को पल्लवित-पुष्पित-सुरभित करते हुए सुफलाम्-सुजलाम् के मंत्र को आल्हादित कर पूज्यश्री की कीर्ति में चार-चाँद लगाते रहोगे।

प.पू. गुरुदेव के गुणानुवाद करने की मेरी योग्यता पर मुझे ही प्रश्नचिह्न नजर आता है, तथापि जब जहाँ जैसे भी यह प्रयत्न मैं करता भी हूँ तो मुझे ये समझ में नहीं आता कि मैं उनके बारे में कम समय में ही इतना सारा कि आगे वाला उनको जानने, दर्शनार्थ आल्हादित हो उठता है, कैसे ये मैं चर्चा कर पाता हूँ। ये प्रज्ञा ये आत्मविश्वास मुझमें कैसे भर जाता है ? कठिनतम चिंतनों के लिये भी सहजता से चर्चा करता चला जाता हूँ जो केवल गुरुश्रेष्ठ के लिये ही संभव है। अप्रतिम-पुरुषार्थ जो गुरुवर ने किया है, शायद ये उसके पुरस्कार स्वरूप हम सभी को, विशेषकर मुझे गुरुप्रसाद रूप में अत्यधिक प्राप्त हो रहा है।

बेहद पुण्यशाली हैं हम लोग! जो उनका सान्निध्य सहज-सरल रूप में हमारे भाग्य में सौभाग्य रूप में है। ये महासौभाग्य हमें अपने पुरखों की महान् संस्कारों के बदौलत भी प्राप्त हुआ है क्योंकि मुझे स्मरण है..... आबाजी, आई, पूज्यश्री सुविज्ञ सागर जी, पूज्या माँ सुवत्सलमति माताजी आदि ने हमें इस ओर प्रोत्साहित करने में विशेष भूमिका निभाई है, इनके ऋण से हम कभी उऋण नहीं हो सकते हैं। आबाजी कहा करते थे कि मुझे भी प्रातः स्वप्न जान पड़ता है कि मैं भी अगले भव में मुनि-दीक्षा धारण कर आत्मकल्याण करूँगा। इसके लिये भी श्री गुरुदेव महानिमित्त के रूप में अपने स्वरचित साहित्य के रूप में मोहखेड़ में विद्यमान थे। पढ़ने की उनकी इच्छाशकित ने पूज्यश्री के शब्दों के माध्यम से उस वक्त भी चर्चाओं के द्वारा गुरुदेव की विशिष्टता से सभी को रूबरू कराया था। सदैव कहते रहते थे कि पूज्यश्री बेहद मेधावी एवं महान् तार्किक उपाध्याय संत जान पड़ते हैं। प.पू. देवनन्दी जी से चर्चाओं के माध्यम से भी उन्होंने पूरी जानकारी ''गुरु-संघ'' की प्राप्त की थी। जीवन भर विद्वानों से इसका चर्चा-चिंतन-मनन मैंने भी उनके द्वारा खूब सुना था।

मैं महसूस करता हूँ कि केवल ''गुरुश्रेष्ठ'' की चर्चाओं के माध्यम से ही हम सबमें इतना तब से अब तक सौभाग्य जागा है और साक्षात् रूप में उनका सतत सान्निध्य, उनके आभामण्डल का विशेष प्रकाश जब हमें अनवरत प्राप्त हो जाये तो फिर हमारे भाग्योदय की चर्चा संसार ही नहीं बल्कि स्वर्गों में भी अहोभाग्य रूप में होवेगी। इस अवसर को हस्तगत करने का तुम्हारा प्रयास निश्चित ही सुनहरे कल को आमंत्रित करेगा।

गुरुदेव की सदाशयता, उनकी सहृदयता के कारण चुम्बक की भाँति कोई भी

उनका अपना सदा के लिये हो जाता है और अपनी तरह दूसरों के कल्याण का भाव उनके मन में सदा-सर्वदा हिलोरे लेता रहता है। ऐसे अनुपम वे अकेले शख्स मुझे जान पड़ते हैं। उनसा व्यक्तित्व सारी कायनात/(परिवेश) में ढूँढ़े नहीं मिलेगा, इसीलिये मैं उनका इतना दीवाना हूँ। लाखों पुत्र रूपी रत्नों को पाकर भी कोई माँ-बाप इतने गौरवान्वित नहीं होते जितना एक पुत्र जो एकाकी पराक्रमी रत्नत्रयधारी रूप में उन्हें प्राप्त होता है। सांसारिक अनुकूलता, स्वस्थ शरीर बल प्राप्त कर लोग अकसर दुरुपयोग ही किया करते हैं, किन्तु जो तुमने सदुपयोग इस तन का किया है वो काबिले तारीफ व अनुकरणीय है। साधारण विद्याओं का विशारद होना सहज सर्वसुलभ है किन्तु आत्म-विद्या का विशारद होना सबसे महान् उपलब्धि है। इस हेतु गुरुदेव हमारे लिये महान् सेतु के रूप में उपलब्ध है। ऐसी अनुकूलता में हम अपना हित न साध सके तो फिर हम-सा दुर्भागी कौन होगा ? लेखनी विराम नहीं लेना चाहती तथापि अपनी भावनाओं को यही विराम देना चाहता हूँ। अस्तु.....

आत्म वैभव के धनी पूज्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के शिष्य श्रेणिक जी मैं आपको वंदना करता हूँ। आपके महापुण्य की प्रशंसा करता हुआ, गुरुवर के श्रीचरणों में अपने लिये भी अनुशंसा करता हूँ कि मुझमें भी यह विवेक यथाशीघ्र जागे और मुझमें इतना साहस पैदा हो कि मैं श्रीचरणों में सदैव के लिये समर्पित हो जाऊँ। उनका आशीष हम सब पर सदैव बना रहे, हम आत्मसाधना हेतु उनसा रूप ही धारण कर ले तो फिर आत्मकल्याण में कोई बाधा नहीं है।

प.पू. गुरुदेव के चरणों में कोटिश नमोस्तु। प.पू. श्री सुविज्ञसागर जी के चरणार्विंद में एवं प.पू. श्री अध्यात्मनन्दी जी गुरुदेव के चरणों में मेरा हार्दिक नमोस्तु वंचना, प.पू. आर्यिका माताजी श्री सुवत्सलमति माताजी के चरणों में सविनय वंदना! प.पू. क्षुल्लिकाश्री माताजी सुविक्षमति जी के पावन चरणों में अनवरत इच्छामि। सबके दुलारे दादा ब्र. श्री सोहनजी को वंदना सादर जय जिनेन्द्र!

सुखद-सफल-उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित!

आपका अपना
अजय जैन, नागपुर
संघस्थ आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव

सुबह से शाम तक काम करके आदमी इतना नहीं थकता जितना क्रोध या चिन्ता से एक घंटे में थक जाता है।

-जेम्स ऐलन

वैरागी पुत्र के लिए पिता का अनुमोदनात्मक पत्र

-आ. सुवत्सलमती

चाल : कसमें-वादे.....

माता-पिता बन्धु-भ्राता, स्वार्थी नाते है इनका क्या ?
स्वारथ के है संगी-साथी, सच्चे साथी गुरु यहाँ।

प्रिय श्रेणिक! अभिनन्दन, वन्दना करता (हूँ) तुम्हें,
आजकल में आल्हादित हूँ, प्रेरक मानूँ तुम्हें,
उत्साहित हूँ प्रतिक्षण, गौरवान्वित मैं हूँ यहाँ।।(1)

पुण्यशाली जीव ही, ऐसा साहस करता है कभी,
तुमसे प्रेरणा प्राप्त कर मैं, प्रमाद को त्यागूँ अभी,
गुरु प्रसाद ही सशक्त निमित्त, सतत अनुभव मैं करूँ।।(2)

कर्त्तव्यनिष्ठ आध्यात्मप्रेमी, क्रांतिकारी जो हुये,
महान् उपलब्धि के कारण अमूल्य जीवन जो जिये,
पैतालीस वर्ष मैंने सोचने में गवाँ दिये।।(3)

भाग्यशाली हूँ कि मुझ पर कनकगुरु/(पूज्यश्री) का आशीष है,
मन मेरा आध्यात्म पाने, हर समय बेचैन है,
तदनुकूल मनन-चिंतन, करता रहता हूँ मैं यहाँ।।(4)

'भरतेश वैभव' पठन करके, नवनीत तुमने जो लिया,
तुमसे पुत्र पर मेरा मन, गौरवान्वित है हुआ,
तुम सम दृढ़ता व लक्ष्य पाने की जीजीविषा रहे।।(5)

I proud of my son, मैंने आते ही कहा,
आशा नहीं पूर्ण विश्वास, गुरु गुणों को तुम पाओगे,
जिनवाणी माँ की सेवा करके, जिनधर्म सुरभित तुम करो।।(6)

पूज्यश्री की यशकीर्ति को, आगे बढ़ाओ तुम सही,
गुणानुवाद गुरु के गाऊँ, योग्यता मुझमें नहीं,
भक्ति वश ही गुरुगुणों का, कथन करता हूँ यही।।(7)

पुण्यशाली है सभी हम, सहज गुरु सान्निध्य मिला,
पूर्वजों के सत् संस्कारों से, महत् सौभाग्य है मिला,
माता-पिता व जेष्ठ भ्राता से, प्रोत्साहित सदा रहा।।(8)

माता-पिता व भ्राता गुण का, ऋणी रहूँ मैं सदा,
आगामी भव में मुनि बनूँगा, पिता/(दादा) का कथन सदा,
साहित्य रूप में गुरु विराजे, मम निवास में सदा।।(9)

तार्किक मेधावी है उपाध्याय/(कनकनन्दी), कथन करते थे पिता,
श्रीसंघ की चर्चा वार्ता, देवनन्दी गुरुवर से किये,
सौभाग्य जागा हम सभी का, गुरुकृपा सतत मिले।।(10)

सहृदय सदाशयी, सरलतम है गुरु,
चुंबकीय शक्ति से, गुणगान उनका मैं करूँ,
अनुपम अद्वितीय इस धरा पर है गुरु।।(11)

स्वस्थ तन-मन पाकर, तुमने सदुपयोग है किया,
तुमसा 'पुत्र रत्न' पाकर, मैं तो धन्य हो गया,
लौकिक विधा विशारद, सरल-सहज है यहाँ।।(12)

कनकनन्दी श्रेष्ठ गुरुवर, नूतन जीवन प्रदाता है,
आत्म विद्या विशारद होने, गुरुकुल में आये है,
आत्मसाधन कर ना पाये तो हमसे दुर्भागी कौन है ?।।(13)

सभी गुरुवरों को सादर सनम्र प्रणाम है,
संसार विकल्पों को तजकर, चिर सान्निध्य पाना है।
अंत में हो समाधि मरण, अजय का अंतिम लक्ष्य है।।(14)

दिनांक - 11.08.2014, प्रात: 7.30

वैरागी भ्राता के लिए बहिन का अनुमोदनात्मक पत्र...

शुक्रवार, 1 अगस्त, 2014

प्रिय,

''श्रेणिक दादा'',

सादर वंदना! जय जिनेन्द्र!!

आप चले गये थे तो हम बहुत दु:खी थे। लेकिन जब आपका पत्र पढ़ा तो हम बहुत खुश हुए और आपने पत्र में बहुत अच्छे भाव व्यक्त किये है और इतनी अच्छी हिन्दी लिखी है। मुझे 10% भी हिन्दी नहीं आती है। जो भी घर पर आता है वो आपके पत्र को पढ़कर खुश हो जाता है। मैं आपकी इस महान् उपलब्धि की अनुमोदना करती हूँ। मुझे आशीर्वाद दो कि मैं भी आपके मार्ग की अनुगामिनी बन सकूँ और पूज्यश्री

गुरुदेव के चरणों का प्रसाद मैं भी प्राप्त कर सकूँ। मैं मम्मी के साथ आना चाहती थी, पर क्या करूँ school की tension ने मुझे फाँस रखा है। दीवाली की छुट्टी में दादू के संग आकर गुरुदेव एवं श्रीसंघ की सेवा करूँगी। पहली बार पत्र लिखा है आगे भी लिखने का प्रयास करूँगी और मुझे भी गुरुदेव का सतत मार्गदर्शन प्राप्त होवे ऐसा यत्न करने का प्रयास करती रहूँगी। संघ में समस्त साधुओं को यथा योग्य वंदन कहना ना भूलना।

तुम्हारी शुभाकांक्षी
श्रुति अ. जैन

Waiting for Shri Guru
Shri Sangh.

कुछ लाईनें लिखने का प्रयत्न कर रही हूँ।
ये मेरी आपके लिए शुभकामनाएँ एवं साधुवाद है।

जो करे गुरु की भक्ति बारमबार,
तकदीर उसकी खिल जाये,
जो करे जिनवाणी का अभ्यास बारमबार,
वो क्यूँ न intelligent बन जाये।

I am proud of you my borther with lots of blessings from your loving sister.

Shruti

वैराग्य भाव से ओतप्रोत बड़े भ्राता के लिये छोटी बहन की अनुमोदक 'पाती'

-आ. सुवत्सलमती

चाल : तुम दिल की धड़कन में.....

प्रिय श्रेणिक दादा! को, श्रुति की सादर वंदना।
महत् भाग्यशाली है, तुम्हारी यह छोटी बहना।।(धृ.)।।

आप छोड़कर चले गये तो, हम बहुत दुःखी हुए।
लेकिन (पाती)/पत्र पढ़ने पर, परिवार (सब) जन खुश हुए।।
आपने प्रौढ़ हिन्दी भाषा में, उत्कृष्ट भाव व्यक्त किये।
आपके भावों को जानकर, सभी जन प्रमुदित हुए।।1।।

इस महान् उपलब्धि की, अनुमोदना (मैं) सहर्ष करूँ।
मुझे आशीष दो दादा! तुम्हारी अनुगामिनी बनूँ।।
गुरु चरणों में शीघ्र आकर, गुरु प्रसाद को मैं पाऊँ।
पढ़ाई कुचक्र से निकलकर, सम्यग्ज्ञान को मैं पाऊँ।।2।।

दीपावली अवकाश में आकर, श्रीसंघ की करूँ सेवा।
गुरु निश्रा में रहकर के, पाऊँ सुज्ञान मेवा।।
मार्गदर्शन गुरु से पाकर, मिटाऊँ भ्रमण का फेरा।
सतत श्रुति वन्दना से, मार्ग प्रशस्त हो मेरा।।3।।

जो करे गुरु भक्ति सतत, तकदीर उसकी खिल जाये।
जिनवाणी माँ का दूध पानकर, भविप्राणी ज्ञानी बन जाये।।
मार्ग प्रशस्त हो आपका, शुभकामना है मेरी।
आशीष गुरु का मिल जाये तो, लक्ष्य प्राप्ति में क्यों देरी ?।।4।।

हिरणमगरी, सेक्टर-11, उदयपुर,
दिनांक - 06.08.2014, मध्याह्न 1.30

वीरागी पुत्र का अनुमोदक पिता के लिए पत्रोत्तर

प्रिय,

''पिताजी''

सादर जय जिनेन्द्र,

आपका पत्र पढ़कर मन अत्यधिक प्रसन्नता से आल्हादित हो उठा। आपने जो भावना इस पत्र द्वारा प्रगट की है उसे आप साकार रूप अतिशीघ्र ही दे ऐसी मेरी अंत:करण से भावना है। जब आप इन भावना को मूर्तिक रूप दोगे तब सबसे ज्यादा, अत्यधिक प्रसन्नता मुझे ही प्राप्त होगी। आपने जो मेरी इतनी अनुमोदना की है इसके लिए आपको कोटिश: धन्यवाद। आप जैसा भाव हर पिता में नहीं होता। ऐसा भाव मिलना दुर्लभ है। मैं भी यही चाहता हूँ कि आप भी शीघ्र, अतिशीघ्र सभी आलस्य और प्रमादों व सांसारिक झंझटों को छोड़कर मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर होते हुए श्रीगुरु चरण में आए मैं ऐसी अनुमोदना, भावना, इच्छा, आकांक्षा रखता हूँ।

आपने लिखा की मैं पुण्यशाली हूँ कि मैंने साहसिक कार्य किया परन्तु ये सब तो मम गुरुवर, स्वाध्याय तपस्वी, प्रखर वक्ता, तात्कालिक ज्ञानी-विज्ञानी, ज्ञान दिवाकर, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, तेजस्वी आचार्य भगवंत कनकनन्दी जी गुरुवर की असीम कृपा है कि इस मूर्ख शिरोमणि को उन्होंने इस काबिल बनाया की वह स्वयं स्व-कल्याण के लिए उचित कार्य कर सके। मेरे गुरुदेव की मुझ पर असीम कृपा है

इसलिए आज मैं उनके चरणों में बैठकर जिनवाणी माँ का अध्ययन कर प्रफुल्लित हो रहा हूँ।

''गुरु जैसी न दुनिया में, कोई जागीर होती है,
गुरु का साथ मिल जाए, वही तकदीर होती है,
गुरु चरणों में जिसने भी गुजारी जिन्दगी अपनी,
वह पाता हर कदम खुशियाँ न दिल में पीर होती है।''

गुरु कृपा के साथ-साथ ही आपके द्वारा दिए हुए उच्चतम, श्रेष्ठतम संस्कारों की बदौलत ही मैं यह कार्य कर पाया हूँ। यदि आप बचपन से मुझे इन संस्कारों से परिपूर्ण नहीं करते तो मैं आज यहाँ श्रीगुरु चरणों में नहीं आ सकता था। इन संस्कारों के प्रदान करने हेतु भी आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने ही मुझे गुरु के स्वरूप से परिचित कराया, गुरु का महात्म्य बताया, तथा हर प्रकार से मोक्षमार्ग पर बढ़ने, अग्रसर होने हेतु मुझे हमेशा प्रेरित, उत्साहित किया, कभी हतोत्साहित नहीं किया। आपके कारण ही गुरु विनय, स्वाध्याय आदि सिखा हूँ। आपने ही सिखाया है कि बेटा यदि गुरु भिखारी के जैसे भी द्युतकार देते है तो भी उनके प्रति खोटा भाव न करते हुए विनय भाव, उत्कृष्ट भाव ही रखना चाहिए। क्योंकि.....

''यह जग विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान,
शीश कटा कर गुरु मिले, तो ही सच्चा जान।''

गुरु चरण का प्रताप अद्भुत होता है, इन चरणों में जो आता है भवसागर, समुद्र से पार हो जाता है और ऐसे गुरु का गुणानुवाद मैं क्या करूँ, इनके उपकारों को कुछ शब्दों, वाक्यों में समाहित नहीं किया जा सकता। उनके उपकार तो अनेको रूपों द्वारा मुझे आगे बढ़ाने के लिए कारक जिम्मेदार है।

''मेरे दिल में रजा क्या है, ये गुरुवर को बताऊँगा,
रजा की क्या सजा होगी, पता गुरु से लगाऊँगा,
गुरु के बोल अमृत के समां होते है दुनिया में,
गुरु का नाम लेकर के स्वयं को खुदा बनाऊँगा।''

मेरे गुरुवर यदि मेरे किसी कार्य से प्रसन्न होते है, तो उनके मुख पर जो प्रसन्नता आती है, जो हँसी आती है, उससे मैं अत्यधिक सुख, आनंद का अनुभव करता हूँ, क्योंकि-

''मेरे गुरुवर का ये जलवा कहीं भी कम नहीं होता,
तेरा हो साथ गर मुझको कभी भी गम नहीं होता,
तेरी नजरें गमे दिल को हँसी इतना बनाती हैं,
करे गम दिल में पैदा गम, किसी में दम नहीं होता।''

अब तो श्रुति बहन के भाव भी गुरु चरण रज प्राप्त करने के है, उनकी सेवा-सुश्रुषा करने के है और माँ ने भी श्रीगुरु चरण में अपनी अंतस भावना व्यक्त कर दी है कि वे भी दीक्षा लेना चाहती है। इससे अब तो आपको भी अपने महान् लक्ष्य की प्राप्ति में कठिनाई नहीं होगी तथा आपके इस लक्ष्य की अनुमोदना करके उसमें स्वयं बढ़ने वाले साथी भी मिल जायेंगे।

श्री गुरुदेव का दिल दरिया है, वो जगत कल्याण सर्व कल्याण करना चाहते है, परन्तु कई व्यक्ति उन्हें गलत मान लेते है। परन्तु मैंने तो मेरे गुरुवर को जान लिया है, वह मेरे लिए हमेशा अच्छा, उचित, सर्वोत्कृष्ट ही करेंगे।

''गुरु के हाथ से आशीष जब-जब भी मिला करता,
हृदय मेरा स्वयं गुलसा, यहाँ तब-तब खिला करता,
तहे दिल से जो लेता नाम गुरु का पार हो जाता,
गुरु की सद् कृपा से ही ये दिल दरिया हुआ करता।''

गुरुवर इस जगत में सिर्फ आपका ही सहारा है, आपके उपदेश पाकर ही हर व्यक्ति सम्यक्त्व प्राप्त करता है, उसी प्रकार मुझे भी सम्यक्त्व पथ पर बढ़ने के लिए आशीर्वाद दीजिए।

''सहारा आप है गुरुवर! सहारे आपके हम हैं,
समन्दर आप है गुरुवर! किनारे आपके हम हैं,
तेरा आशीष हो तो हँस के हम हर गम को सह लेंगे,
मेरे सब कुछ हो गुरुवर तुम, इशारे आपके हम हैं।''

गुरुवर से जो मुझे आशीष, मार्गदर्शन, ज्ञान, विज्ञान, अनुभव आदि से प्राप्त हो रहा है मैं उसमें अनवरत, सतत वृद्धि करना चाहता हूँ और स्वयं का विकास कर अपना सर्वोच्च, सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट, सर्वश्रेष्ठ, अविनाशी, शाश्वत, अनन्त ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य प्रदायुक्त मोक्षमार्ग के पथ पर अविराम बढ़ना चाहता हूँ, उसे प्राप्त करना चाहता हूँ। इसके लिए मैं गुरुवाणी का अमृत रसपान कर रहा हूँ और श्रद्धा रूप से उसे समझकर, ग्रहण कर आगे बढ़ने का प्रयत्न कर रहा हूँ। मेरे गुरुवर ज्ञान पिपासु, विद्यार्थी है वो हर विषय से ज्ञानार्जन करते है। मैं उनके जैसा ही जीवन पर्यंत विद्यार्थी, शोधार्थी ही रहना चाहता हूँ। क्योंकि विद्यार्थी का जीवन सबसे सुखमय, आनंदमय, शांतिमय, वात्सल्यपूर्ण, करूणामय और धार्मिक कार्यों में संलग्न रहकर सतत चिंतन, मनन, पठन, पाठन, लेखन आदि कार्यों, भावनाओं, उत्कृष्ट विचारों आदि में बीतता है। जिससे वह पुण्य का अर्जन (Gain) कर, पापों की निर्जरा, प्रक्षालन करते हुए राग-द्वेष आदि शत्रुओं से दूर रहकर अनन्त सुख की अनुभूति, प्राप्ति कर सकता है। सभी व्यक्ति भी अपना बालकवत, विद्यार्थी जीवन ज्यादा जीना चाहते है। परन्तु मैं तो मेरे गुरुवर जैसे सदा विद्यार्थी रहते हुए, उन्मुक्त, स्वछन्द, स्वतंत्र, मस्त, आनंदमय

रहना चाहता हूँ। गुरुवर से यहीं चाहता हूँ की मैं जब तक इस धरा पर, आपके श्रीचरणों में रहूँ बस विद्यार्थी बनकर, ज्ञान पिपासु बनकर ही रहूँ। नमोस्तु गुरुदेव-

''गुरु की गर इनायत हो तो हर गम फूल बन जाता,
बड़ा हो हादसा वह भी चरण की धूल बन जाता,
सभी ताकत गुरु के सामने नाकाम हो जाती,
हर एक प्रतिकूल-सा मौसम स्वयं अनुकूल हो जाता।''

गुरु के श्रीचरणों में बैठकर मेरे जीवन की सभी प्रतिकूलता समाप्त-सी नजर आती है, मुझे हर वस्तु अनुकूल दिख पड़ती है और हो भी क्यों न मैं इतने महान् गुरु के श्रीचरणों में जो हूँ। गुरुदेव की कृपा से मेरा स्वास्थ्य, आहार-विहार सभी सुधर गया है। गुरु चरणों में मैं बहुत आनंद का अनुभव करता हूँ और गुरुवर को हमेशा अपना आदर्श मानता हूँ।

''काँटों पर चलकर फूल खिलते है,
विश्वास पर चलकर गुरुवर मिलते है,
एक बात हमेशा याद रखना मित्रों,
सुख में सब मिलते है, लेकिन दुःख में सिर्फ गुरुवर मिलते है,
भीगने का अगर शौकर हो,
तो आकर मेरे गुरुवर के चरणों में बैठो,
ये बादल तो बरसों में बरसते है,
लेकिन मेरे गुरु की रहमत तो हर पल बरसती है।''

यदि स्वाध्याय की चर्चा की जाये तो उसमें गुरुदेव सर्वप्रथम, अग्रणी, विद्वान आचार्य भगवंत है। अभी तो गुरुदेव उन विषय पर स्वाध्याय करा रहे है, जिसे विज्ञान भी पूर्णतः सिद्ध नहीं कर पाया है। इसलिए इस प्रकार ग्रहणीय, सूक्ष्म, विषय पर स्वाध्याय होने से बेहद आनंद की अनुभूति होती है।

क्योंकि कहा भी हैं-

''ज्ञान जगे गुरुदेव संग, दीप जले धृत संग,
मरघट पर वैराग्य जगे, भाग्य जगे सत्संग।''

मेरे गुरुवर की सत्संगति में जो आएगा तो तरता ही जाएगा और सतत अपने भावों में निर्मलता, शुद्धता, पवित्रता लाता जाएगा। पिताश्री आपने भी जो कहा है कि गुरुदेव के प्रयासों को मैं संपुर्णतः, पूरे प्रयत्न द्वारा आगे बढ़ाकर माँ जिनवाणी की सेवा-सुश्रुषा कर जैनधर्म का नाम रोशन करूँगा एवं गुरुदेव की कीर्ति में भी चार-चाँद लगाने का प्रयत्न सतत जीवन के अंत होने तक करता रहूँगा। मैं तो सिर्फ इतना चाहता हूँ कि लोग गर्व से कह सके की देखो वह आचार्य कनकनन्दी जी का शिष्य है। मेरे गुरु

के नाम से सब मुझे जाने, जग में मेरी पहचान मेरे गुरु के नाम से हो ऐसी मेरी अंत:करण, अर्न्तमन से प्रबल भावना है।

''कलम मेरी भी दीवानी नाम गुरुवर का लिखती है,
आँखों की बात जो कह दूँ उनके सजदे में झुकती है,
इबादत भी मेरी उनकी भक्ति में फना कर दूँ,
उनकी यादों के सायों में, मेरी साँसें भी पलती है।''

मैंने पूर्व में भी कहा था कि मेरे गुरुदेव के लिए जितना लिखो कम ही है। मेरे गुरुवर अनंत गुणों की खान है। अंतत: मैं अपनी वाणी को विराम देना चाहता हूँ और यही भावना भाता हूँ की मेरे गुरुवर जयवंत हो।

''खुदा जब आसमाँ से यूँ जमीं पर देखता होगा,
मेरे गुरुवर को किसने यूँ बनाया सोचता होगा,
इन्हीं के द्वय चरण में मिलता हमको ज्ञान का पानी,
इन्हीं चरणों में अब मेरा यहाँ कल्याण भी होगा।''

अंत में यही कहूँगा-

''गुरु कृपा मुझको मिली, हो आतम उद्धार।
गुरु चरण सेवा करूँ, पाऊँ मुक्ति द्वार।''

आपके उन्नत, उज्ज्वल भविष्य की कामना हेतु, आपकी उत्तम भावनाओं का अनुमोदक।

आपका अपना
ब्र. श्रेणिक
(संघस्थ आ. कनकनन्दी जी गुरुदेव)

शुभाशीर्वाद

चाल : तुम दिल की धड़कन.....

चंदनबाला की कहानी लिखी है आर्या -'आस्थाश्री' ने।
शील-संयम की रक्षार्थे, भव्यों को शिक्षा निमित्ते।।

चंदनबाला की जीवनी, संघर्षमय है कहानी।
महानों की है महान् कहानी, नीचों की नीच कहानी।।
भले अन्यायी व दुराचारी, हो कितने भी बलशाली।
होता अवश्य उसका पतन, विजयी होता शीलधारी।।(1)

कहाँ राजकन्या दासी बनी, यह (है) सामाजिक बुराई।
दासप्रथा के निर्मूलन हेतु, महावीर ने क्रांति जो लाई।।
पउगाहन किया दासी ने, आहार भी दिया महावीर को।
हुआ पंचाश्चर्य जिससे, भक्ति/(शक्ति) का ज्ञान हुआ सभी को।।(2)

आर्यिका बनी चंदनबाला, बनी है प्रमुख गणिनी।
पतीता से पावन बनी, ऐसी है दिव्य कहानी।।
वाचन-पाचन-आचरण करो, ऐसी दिव्य कहानी।
''कनकनन्दी'' का आशीष, सभी को, बनो है आध्यात्म ज्ञानी।।(3)

हिरणमगरी, सेक्टर-11, उदयपुर, दिनांक - 20.08.2014

अतिशय क्षेत्र सीपुर में आगामी 20 चातुर्मास हेतु महान् गुरुभक्त श्री नितिन जैन द्वारा आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ससंघ को साग्रह निवेदन...

प्रस्तुति-श्रमण मुनि श्री सुविज्ञसागर

दिनांक 20.08.2014 के माध्याह्निक स्वाध्याय सभा के अनन्तर अतिशय क्षेत्र सीपुर से पधारे श्री गुरुदेव के अनन्य भक्त श्री नितिन जैन द्वारा आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ससंघ को क्षेत्र पर आगामी 20 चातुर्मास करने हेतु भावभीना साग्रह निवेदन किया गया। इसके पूर्व भी आचार्यश्री का एक चातुर्मास अपूर्व धर्म प्रभावना व उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हो चुका है। स्वयं नितिन जैन भी सभा में बोले कि आचार्यश्री के चातुर्मास के बाद से क्षेत्र का चहुँमुखी विकास हो रहा है।

राष्ट्रसंत गणेश मुनि शास्त्रीजी के शिष्यद्वय 1. जिनेन्द्र मुनि, 2. प्रवीण मुनि भी स्वाध्याय में पधारे व आचार्यश्री के व्यक्तित्व व कृतित्व के प्रति अपना मनोगत व्यक्त करते हुए हर्षित हुए।

डॉ. बी.एल. सेठीजी जो कि आचार्यश्री के साहित्य के शोध-निर्देशक शिष्य हैं से सूचना प्राप्त हुई कि शोधार्थी आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के साहित्य से ब्रह्माण्डीय विज्ञान पर पीएच.डी. (Ph.D.) करना चाहते हैं। ऐसे ही विदेश के विंसटन विश्वविद्यालय के शोधार्थी भी जैन धर्म के ब्रह्माण्डीय विज्ञान को पढ़ना चाहते हैं। आचार्यश्री ने इस सूचना के पाते ही श्री सेठीजी को प्रेरणा व अशीर्वाद प्रदान किया।

आचार्यश्री के निर्देशन व नेतृत्व में आगामी 13वीं अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी दिनांक 9-10-11 नवम्बर वर्ष 2014 को आयोजित की जा रही है। उदयपुर

सेक्टर-11 के आदिनाथ भवन में यह संगोष्ठी आयोजित है। इसी तरह पर्यूषण पर्व के दस दिनों में आचार्यश्री के वैज्ञानिक, विद्वान शिष्यों द्वारा विविध विषयों पर नि:शुल्क प्रवचन रखे गये हैं। धर्मतत्त्व के जिज्ञासु जन अवश्य लाभान्वित हो ऐसी श्रीसंघ की भावना है। उपरोक्त संगोष्ठी का विषय-

-त्रय दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी-

"जैन सिद्धान्त परम विज्ञान-आधुनिक ज्ञान-विज्ञानों से भी परे"...

मातुश्री विमलाबेन चम्पकलाल जी खेतानी परिवार की ओर से अखिल भारतीय दि. जैन साधु-साध्वियों की चिकित्सा व्यवस्था का गत 3 माह से शुभारम्भ

-: सम्पर्क :-

डॉ. शोभालाल जी औदिच्य 094146-20938
वैद्य श्यामसुंदर जी औदिच्य 097729-42861

दिन-रात काम करके मैं जितना नहीं थकता हूँ, उससे भी अधिक एक क्षण मात्र के क्रोध, चिन्ता, अयोग्य चिन्तन-भाव-व्यवहार तथा दूसरों की अव्यवस्था, लड़ाई-झगड़ा, पर-निन्दा आदि से मैं थक जाता हूँ।

-आचार्य कनकनन्दी

आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के शोधपूर्ण साहित्य

जैन/(भारतीय) तथ्य जो आधुनिक विज्ञान से परे-ज्ञानधारा

अ.क्र.	विषयानुक्रमणिका	मूल्य
1.	ब्रह्माण्डीय-जैविक-भौतिक एवं रसायन विज्ञान	151
2.	अनन्त शक्ति सम्पन्न परमाणु से लेकर परमात्मा तक	201
3.	करो साक्षात्कार यथार्थ सत्य का	50
4.	वैज्ञानिक आइंस्टीन के सिद्धांतों को पुनः परीक्षण की आवश्यकता	15
5.	ब्रह्माण्ड एवं प्रतिब्रह्माण्ड का धार्मिक वैज्ञानिक विश्लेषण	15
6.	करो साक्षात्कार यथार्थ धर्म एवं भाव का	40
7.	विभिन्न क्रम विकासवाद एवं परम आध्यात्मिक विकासवाद (I.Q. < E.Q. < S.Q.)	25
8.	ब्रह्माण्ड-काल-आकाश एवं जीव अनन्त (लघु)	25
9.	ब्रह्माण्ड-काल-आकाश एवं जीव अनन्त (वृहत्)	201
10.	सत्य परमेश्वर	75
11.	अनन्त परम सत्य का समग्र उल्लेख सम्भव नहीं है धार्मिक ग्रंथों से एवं वैज्ञानिक ज्ञान-उपकरणों से	101
12.	ब्रह्माण्ड के परम विचित्र जीव-मानव	401
13.	सूक्ष्म जीव विज्ञान से शुद्ध जीव विज्ञान	801
14.	विश्व-प्रतिविश्व एवं श्याम विवर	35
15.	परम विकास के उपाय-स्वाध्याय	101
16.	मानव मन की विकृतियों का अनुसंधान प्रायोगिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से	41
17.	सर्वोच्च शाश्वतिक विकास आध्यात्मिक ज्ञानानन्द	201
18.	वैज्ञानिक डार्विन तथा अन्यान्य जीव विज्ञान अधिक असत्य आंशिक सत्य	101
19.	प्राचीन-परग्रही (ANCIENT-ALIENS)	101
20.	WHAT IS GOD PARTICLE!? (क्या है ईश्वरीय कण)	121
21.	विश्व का स्वरूप एवं विश्व की कार्य प्रणाली	201

पद्यात्मक कृतियाँ (गीतांजली)

अ.क्र.	विषय	मूल्य
1.	बाल-आध्यात्मिक गीतांजली	31
2.	प्रौढ़-आध्यात्मिक गीतांजली	51
3.	जैन-आध्यात्मिक गीतांजली	31
4.	नैतिक-आध्यात्मिक गीतांजली	51
5.	प्रकृति (पर्यावरण) गीतांजली	51
6.	विविध गीतांजली	21
7.	आत्मकल्याण-विश्वकल्याण गीतांजली	51
8.	महान् आध्यात्मिक-वैज्ञानिक तीर्थंकरों के व्यक्तित्व-कृतित्व-शिक्षा गीतांजली	51
9.	समीक्षा-गीतांजली	31
10.	विश्व शांति-गीतांजली (गद्य-पद्य मय)	51
11.	सर्वोदय-गीतांजली (गद्य-पद्य मय)	51
12.	स्वास्थ्य-गीतांजली	75
13.	आधुनिक-गीतांजली	101
14.	सर्वोदय-शिक्षा-गीतांजली	101
15.	ब्रह्माण्डीय-विज्ञान गीतांजली	151
16.	मानवीय-गीतांजली	51
17.	नारी-गीतांजली (गद्य-पद्य मय)	31
18.	अनुभव-गीतांजली	101
19.	भारतीय-गीतांजली	51
20.	जैन एकता एवं विश्व शांति गीतांजली	31
21.	धर्म-गीतांजली	101
22.	सफलता-गीतांजली	71
23.	चिन्तन-स्मरण-गीतांजली	31
24.	कथा-आत्मकथा-गीतांजली	51
25.	धर्म-दर्शन-गीतांजली	51
26.	सर्वोदय-गीतांजली	51
27.	अनुशासन-गीतांजली	101
28.	व्यक्तित्व विकास-गीतांजली	101
29.	जीवन प्रबंधन-गीतांजली	101
30.	उपलब्धि-गीतांजली	101

अ.क्र.	विषय	मूल्य

III. आध्यात्मिक

1.	अनेकान्त सिद्धान्त (द्वि.सं.)	41
2.	अहिंसामृतम् (द्वि.सं.)	25
3.	अनेकान्त के प्रकाश में मोक्षमार्ग	21
4.	अपुनरागमन पथ : मोक्षमार्ग	05
5.	आदर्श नागरिक की प्रायोगिक क्रियायें	10
6.	आहारदान से अभ्युदय	15
7.	उपवास का धार्मिक-वैज्ञानिक विश्लेषण	25
8.	जीवन्त धर्म-सेवा धर्म	15
9.	दिगम्बर साधु का नग्नत्व एवं केशलोंच (हिन्दी, मराठी, गुजराती, उर्दू-11 सं.)	10
10.	धर्म, जैन धर्म तथा भगवान् महावीर	75
11.	बन्धु बन्धन के मूल	51
12.	विनय मोक्षद्वार (द्वि.सं.)	31
13.	विश्व धर्मसभा (समवसरण)	51
14.	क्षमा वीरस्य भूषणम् (तृ.सं.)	35
15.	श्रमण संघ संहिता	61
16.	त्रैलोक्य पूज्य ब्रह्मचर्य (द्वि.सं.)	35
17.	सत्य परमेश्वर	75
18.	सनातन वैदिक धर्म में भी वर्णित है समाधिमरण	21
19.	मौन रहो या सत्य (हित-मित-प्रिय) कहो!	101
20.	दसण मूलो धर्मों तहा संसार मूल हेतु मिच्छतं	25
21.	धर्म-दर्शन-विज्ञान प्रवेशिका (भाग-1) स.सं.	15
22.	धर्म-दर्शन-विज्ञान प्रवेशिका (भाग-2) स.सं.	20
23.	धर्म-दर्शन-विज्ञान प्रवेशिका (भाग-3) स.सं.	30

IV. आध्यात्मिक मनोविज्ञान

1.	अतिमानवीय शक्ति (द्वि.सं.)	51
2.	क्रांति के अग्रदूत (द्वि.सं.) (तीर्थंकर का धार्मिक एवं वैज्ञानिक विश्लेषण)	35
3.	कर्म का दार्शनिक एवं वैज्ञानिक विश्लेषण (द्वि.सं.)	75
4.	ध्यान का वैज्ञानिक विश्लेषण (द्वि.सं.) (हिन्दी, अंग्रेजी)	51

अ.क्र.	विषय	मूल्य
5.	लेश्या मनोविज्ञान (द्वि.सं.)	21
6.	तत्त्व-चिन्तन-सर्वधर्म समता से विश्व शांति	51
7.	अनन्त परम सत्य का समग्र उल्लेख... सम्भव नहीं...	101
8.	कलिकाल में साधु क्यों बने ?	75

V. शिक्षा-मनोविज्ञान

1.	आचार्य कनकनन्दी की दृष्टि में शिक्षा	11
2.	नैतिक शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान	40
3.	सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान (वृहत्)	401
4.	सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान (लघु)	21
5.	सर्वोदय तथा संकीर्ण शिक्षा से स्वरूप एवं परिणाम	21

VI. शोध (धार्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक)

1.	अग्नि परीक्षा	21
2.	अनुभव चिन्तामणि	15
3.	उठो! जागो! प्राप्त करो! (हिन्दी, कन्नड़) (द्वि.सं.)	11
4.	जैन धर्मावलम्बी संख्या और उपलब्धि	21
5.	जीवन विकास एवं विनाश के सूत्र	21
6.	जैन धर्मावलम्बियों की दिशा-दशा-आशा	5
7.	जैन एकता एवं विश्व शांति (सं.द्वि.सं.)	5
8.	धार्मिक कुरीतियों का परिशोधन (द्वि.सं.)	10
9.	नग्न सत्य का दिग्दर्शन (द्वि.सं.) सत्य को जानो-मानो-स्वीकारो!	25
10.	निकृष्टतम स्वार्थी तथा क्रूरतम प्राणी : मनुष्य	21
11.	प्रथम शोध-बोध-आविष्कार एवं प्रवक्ता	75
12.	प्राचीन भारत की 72 कलाएँ (द्वि.सं.)	21
13.	भारत को गारत एवं महान् भारत बनाने के सूत्र	15
14.	भारत के सर्वोदय के उपाय (सं.द्वि.सं.)	5
15.	मानवीय निकृष्ट संघर्ष का इतिहास	10
16.	मेरा लक्ष्य-साधना एवं अनुभव (आचार्यश्री की जीवनी)	10
17.	ये कैसे धर्मात्मा, निर्व्यसनी, राष्ट्रसेवी	21
18.	व्यसन का धार्मिक एवं वैज्ञानिक विश्लेषण (च.सं.) (सप्त व्यसन)	51

अ.क्र.	विषय	मूल्य
19.	विज्ञान को भी अविज्ञात सत्य	20
20.	शाश्वत समस्याओं का समाधान	25
21.	शिक्षा, संस्कृति एवं नारी गरिमा	61
22.	संगठन के सूत्र (द्वि.सं.)	41
23.	संस्कार (हिन्दी, गुजराती, मराठी, कन्नड़)(15वाँ संस्करण)	10
24.	संस्कार (वृहत्)	50
25.	सत्यान्वेषी आ. कनकनन्दी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	10
26.	संस्कृति की विकृति	10
27.	संस्कार और हम	35
28.	हिंसा की प्रतिक्रिया है : प्राकृतिक प्रकोपादि (द्वि.सं.)	35
29.	क्षमा वीरस्य भूषणम्(तृ.सं.)	21
30.	विभिन्न क्रम विकासवाद एवं परम आध्यात्मिक विकासवाद	25
31.	भारत की अंतरंग खोज	10
32.	विभिन्न भावात्मक प्रदूषण एवं भ्रष्टाचार : कारण तथा निवारण	41
33.	वर्तमान की आवश्यकता : धार्मिक उदारता न कि कट्टरता	15
34.	वैश्वीकरण, वैश्विक-धर्म एवं विश्व शांति	21
35.	वैज्ञानिक आध्यात्मिक धर्म तीर्थ प्रवर्तन	51
36.	अभी की समस्याएँ-सभी के समाधान	21
37.	मानव धर्म : स्वरूप एवं परिणाम (सं.द्वि.सं.)	15
38.	विकास के चतुः आयाम सिद्धान्त	51
39.	एकला चलो रे!	
40.	आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से भी परे है प्राचीन जैन ग्रंथों का वर्णन	21
41.	सत्य गवेषणा	51
42.	बोल्ड, स्मार्ट एवं ब्यूटीफूल पर्सनल्टी अप टू डेट बनने का फार्मूला	5

VII. अनुवाद, टीका, समीक्षा (आध्यात्मिक विज्ञान)

1.	इष्टोपदेश (आध्यात्मिक मनोविज्ञान)	101
2.	पुरुषार्थ सिद्धयुपाय (अहिंसा का विश्व स्वरूप)	201
3.	विश्व द्रव्य-विज्ञान (द्रव्य संग्रह)	101
4.	स्वतंत्रता के सूत्र (मोक्षशास्त्र/तत्त्वार्थ सूत्र)(द्वि.सं.)	501
5.	सत्यसाम्यसुखामृतम्(प्रवचनसार)	601
6.	आध्यात्मिक रहस्य के रहस्य (भावना द्वात्रिंशतिका)	

अ.क्र.	विषय	मूल्य

VIII. मीमांसा, समालोचना, संकलन

1.	कौन हैं विश्व का कर्त्ता-हर्त्ता-धर्त्ता ?	21
2.	ज्वलन्त शंकाओं का शीतल समाधान (द्वि.सं.)	75
3.	जिनार्चना पुष्प-1 (तृ.सं.)	75
4.	जिनार्चना पुष्प-2	21
5.	निमित्त उपादान मीमांसा (द्वि.सं.)	21
6.	पुण्य-पाप मीमांसा (द्वि.सं.)	35
7.	पूजा से मोक्ष, पुण्य, पाप भी	41
8.	भाग्य एवं पुरुषार्थ (हिन्दी, मराठी) (पं.सं.)	15
9.	शोधपूर्ण ग्रंथ तथा ग्रंथकर्त्ता आ. कनकनन्दी	10
10.	अमृत तत्त्व की उपलब्धि के हेतु समाधि मरण	40
11.	परोपदेश कुशल बहुतेरे.....	5
12.	विविध दीक्षा विधि	31
13.	विश्व हितकारी जैन धर्म का स्वरूप	10

IX. इतिहास

1.	अयोध्या का पौराणिक, ऐतिहासिक एवं राजनैतिक विश्लेषण	35
2.	ऋषभ पुत्र भरत से भारत (द्वि.सं.)	35
3.	धर्म प्रवर्तक 24 तीर्थंकर (द्वि.सं.)	21
4.	पार्श्वनाथ का तपोपसर्ग कैवल्य धाम : बिजौलिया	35
5.	भारतीय आर्य कौन कहाँ से, कब से, कहाँ के ?	50
6.	युग निर्माता भ. ऋषभदेव (द्वि.सं.)	61
7.	युग निर्माता भ. ऋषभदेव (पद्यानुवाद)	5
8.	विश्व इतिहास	51

X. स्मारिका (वैज्ञानिक संगोष्ठी)

1.	कर्म सिद्धान्त और उसके वैज्ञानिक मनोविज्ञान एवं सामाजिक आयाम	60
2.	शिक्षा-शोधक-स्मारिका	100
3.	स्मारिका (स्वतंत्रता सूत्र में विज्ञान)	81
4.	स्मारिका (स्वतंत्रता के सूत्र में विज्ञान)	51
5.	जैन धर्म में विज्ञान	150
6.	भारतीय संस्कृति में विश्व शांति और पर्यावरण सुरक्षा के सूत्र	20
7.	मन्थन (जैन दर्शन एवं विज्ञान)	

अ.क्र.	विषय	मूल्य

XI. स्वप्न, शकुन–भविष्य विज्ञान, मंत्र, सामुद्रिक शास्त्र (शरीर से भविष्य ज्ञान)

1.	सर्वांग विज्ञान की वैज्ञानिक गवेषणा (भाव-भाग्य तथा अंग विज्ञान)	251
2.	भविष्य फल विज्ञान (द्वि.सं.)	301
3.	मंत्र-विज्ञान (द्वि.सं.)	35
4.	शकुन-विज्ञान	75
5.	स्वप्न-विज्ञान (द्वि.सं.)	101

XII. स्वास्थ्य विज्ञान

1.	समग्र स्वास्थ्य के उपाय : तपस्या	25
2.	आदर्श विचार-विहार-आहार (द्वि.सं.)	75
3.	धर्म एवं स्वास्थ्य विज्ञान (भाग-1) (तृ.सं.)	50
4.	धर्म एवं स्वास्थ्य विज्ञान (भाग-2)	21
5.	शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक स्वास्थ्य के विविध आयाम	201
6.	जीवनोपयोगी सामान्यज्ञान	21

XIII. प्रवचन

1.	क्रांति दृष्टा प्रवचन	11
2.	जीने की कला (सं.द्वि.सं.)	25
3.	भ. महावीर तथा उनका दिव्य सन्देश	5
4.	भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने के लिये समग्र क्रान्ति चाहिये	11
5.	मनन एवं प्रवचन (द्वि.सं.)	10
6.	विश्व शांति के अमोघ-उपाय (द्वि.सं.)	10
7.	विश्व धर्म के दश लक्षण	41
8.	व्यक्ति एवं समाज निर्माण के आद्य कर्त्तव्य	15
9.	शान्ति क्रांति के विश्व नेता बनने के उपाय	41
10.	समग्र क्रांति के उपाय	15
11.	भ्रष्टाचार-हिंसा मुक्ति	25
12.	दिव्य उपदेश	51

XIV. अंग्रेजी साहित्य

1.	Fate and Efforts (II. ed.)	25
2.	Leshya Psychology (II. ed.)	21

अ.क्र.	विषय	मूल्य
3.	Moral Education	51
4.	Nakedness of Digamber Jain Saints and Keshlonch (II. ed.)	21
5.	Sanskars	10
6.	Sculopr the Rishabhdeo	51
7.	Phylosophy of Scientific Religion	51
8.	What kinds of Dharmatma (Piousman) these are	51
9.	Spiritual Meditation	

XV. कथा

1.	कथा सुमन मालिका	15
2.	कथा सौरभ	21
3.	कथा पारिजात	15
4.	कथा पुष्पांजली	15
5.	कथा चिन्तामणि	15
6.	कथा त्रिवेणी	10

XVI. आचार्य के शिष्यों द्वारा रचित साहित्य

डॉ. एन.एल. कछारा के साहित्य
(संस्थान के सचिव)

1.	जैन कर्म सिद्धान्त : आध्यात्म और विज्ञान	50
2.	समवसरण (आ. कनकनन्दी जी से भेंटवार्त्ता)	
3.	Jain Doctrine of Karma	35
4.	षट्द्रव्य की वैज्ञानिक मीमांसा	300
5.	जैन दर्शन सम्बन्धी अंग्रेजी में डाक्यूमेंट्री फिल्म सी.डी.	
6-7.	Science Explaration of Jain Doctrine "Part I-II"	

प्रो. डॉ. पारसमल जी अग्रवाल (भूतपूर्व वैज्ञानिक, अमेरिका)

1.	"Soul Science" Part-I	

प्रो. डॉ. प्रभात कुमार जैन एवं प्रो. डॉ. सुशीलचन्द्र जैन

1.	आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के साहित्य पर शोध प्रबन्ध	

XVII. आचार्यश्री के आगामी प्रकाशनाधीन ग्रंथ

1. सम्पूर्ण कला एवं वाणिज्य, न्याय, राजनीति, अर्थशास्त्र एवं समाज विज्ञान (नीतिवाक्यामृतम्)
(शीघ्र प्रकाशनाधीन) पृष्ठ प्राय : 1500

अ.क्र.	ग्रंथ	लागत मूल्य
2.	विश्व प्रसिद्ध अनसुलझे रहस्यों का रहस्य-उद्घाटन का प्रयास	

XVIII. ताम्रपत्र में उत्कीर्ण ग्रंथ

प्रकाशक एवं अर्थ सहयोग-प्रो. प्रभात कुमार जैन, सपरिवार

1.	द्रव्यसंग्रह	8500
2.	समाधि तंत्र	16000
3.	तत्त्वार्थ सूत्र	52000
4.	इष्टोपदेश	
5.	भक्तामर स्तोत्र	
6.	कषाय पाहुड़-सिद्धान्त सूत्र	

ताम्रपत्र के ग्रंथ लागत मूल्य से भी कम मूल्य में उपलब्ध है।

ताम्रपत्र के ग्रंथ तथा आधी छूट में आचार्यश्री कनकनन्दी जी के ग्रंथ एवं प्राचीन ग्रंथ क्रय करने के लिये सम्पर्क करें।

7. महावीराष्टक

XIX. कैलेण्डर

1. जीवनोपयोगी दोहा
2. आ. कनकनन्दी श्रीसंघ तथा भक्ति-शिष्यों द्वारा धर्म प्रचार
3. आ. कनकनन्दी की आध्यात्मिक यात्रा
4. आ. कनकनन्दी श्रीसंघ के नियम
5. आ. कनकनन्दी जी सम्बन्धी व्यक्तित्व-कृतित्व एवं भविष्य

XX. फोल्डर

1. कविताओं के फोल्डर - 12 प्रकार के
2. आहारदान के फोल्डर - 1 प्रकार के

XXI. अन्यान्य

1. गुरु अर्चना-रचनाकार मुनिश्री गुप्तिनन्दी, आर्यिका राजश्री क्षमाश्री
2. आनन्द की खोज-लेखिका-विद्याश्री सुषमा जैन, सहारनपुर

''सम्पर्क सूत्र एवं ग्रंथ प्राप्ति स्थल''

डॉ. नारायणलाल कछारा (सचिव)
55, रवीन्द्र नगर, उदयपुर (राज.)-313001
फोन नं. 0294-2491422, मो. 9214460622
ई-मेल-nlkachhara@yahoo.com

''प्रायोगिक जीवन्त धर्म सेवा धर्म''
(सेवाभावी वैद्य व सज्जनों का सम्मान)

परम पूज्य आध्यात्मिक वैज्ञानिक श्रमणाचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ससंघ की प्रेरणा व अनुमोदना से भारत के सर्व दिगम्बर साधु-साध्वियों की चिकित्सा व्यवस्था के व्यापक अभियान से सेवाभावी चिकित्सक वैद्य डॉक्टर जुड़ते जा रहे हैं। इस कार्य शृंखला में उदयपुर नगर के दो वैद्य 1. डॉ. श्यामसुन्दर जी औदिच्य व 2. डॉ. शोभालाल जी औदिच्य को आचार्यश्री के शुभ हाथों से स्वर्ण निर्मित प्रशस्ति सह पुरस्कृत किया गया। यह कार्यक्रम सेक्टर-11 के आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में सम्पन्न हुआ। गुरुदेव ने अपनी स्वरचित कविता ''सेवा का व्यापक स्वरूप एवं फल'' की प्रस्तुति के अनन्तर प्राचीन से लेकर आधुनिक युग में सेवा का स्वरूप धर्म एवं विज्ञान की दृष्टि से बताते हुए श्रद्धालु जनों को सेवा (वैयावृत्य) हेतु प्रेरित किया।

इस महाअभियान में दूसरी कड़ी के रूप में नागपुर (महाराष्ट्र) से पधारे डॉ. अजय कुमार जैन ने भी उपरोक्त कार्य में अपना सक्रिय योगदान करने की भावना व्यक्त की। इससे आगे स्वयं अपने सुपुत्र ब्र. श्रेणिक जैन के वैराग्य भाव की अनुमोदना करते हुए आगे जिन दीक्षा लेने का मानस दर्शाया। उपस्थित श्रोताओं ने भी करतल ध्वनि से अनुमोदना की। मुकेश जैन, संजय जैन, खुशपाल जी जैन, आशा देवी जैन, भँवरलाल जी मुण्डलिया, रॉटिया जी आदि महानुभावों ने सेवाभावी-वैराग्यभावी जनों की अनुमोदना की।

ज्ञान प्रभावना-ज्ञानदान की उपलब्धि सह पर्यूषण पर्व सानन्द सम्पन्न

स्वाभिमान व गुरुभक्ति की ऐतिहासिक धरा मेवाड़ प्रान्त के उदयपुर, सेक्टर-11 के आदिनाथ भवन में वर्षायोगरत वैश्विक सन्त प्रवर आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ससंघ सान्निध्य में ज्ञान-विज्ञान, ज्ञान-दान, शोध-बोध, स्वाध्याय के विविध आयामों की उपलब्धियों के साथ आध्यात्मिक पर्यूषण पर्व मनाया गया। दश धर्मों का आध्यात्मिक-वैज्ञानिक-व्यावहारिक कार्य-कारण सम्बन्धों से जोड़ रूप प्रतिपादन आचार्यश्री ने अपनी अनूठी-अद्वितीय पद्धति से किया।

आचार्यश्री के शोध निर्देशक शिष्य डॉ. बी.एल. सेठीजी ने धर्मसभा में उपस्थित श्रोताओं को बताया कि राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में आचार्यश्री कनकनन्दी

जी के साहित्य पर पीएच.डी. करने वाले स्कॉलर्स को जूनियर रिसर्च फेलोशिप रूप में प्रथम-द्वितीय वर्ष में 19,000/- रु. प्रतिमाह व दो वर्ष बाद 25,000/- रु. मासिक स्कॉलरशिप प्रारम्भ हो चुकी है। वर्तमान में शोधार्थी विकास कुमार को भी जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, झुंझुनू द्वारा यह लाभ प्रारम्भ हो चुका है अगस्त, 2014 से एवं एलाइड आर.ए.एस. में उनका सिलेक्शन भी हो गया है। इसी प्रकार सुश्री शिखासिंह भी आचार्यश्री के ब्रह्माण्डीय विज्ञान विषय पर पीएच.डी. कर रही हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय शोध क्षेत्र में प्रथम प्रयास के रूप में आचार्यश्री के धर्म-दर्शन सेवा संस्थान के सचिव शिष्य डॉ. एन.एल. कछारा जी ने भी बताया कि जैन विश्व भारती, लाडनूँ विश्वविद्यालय में एक शोध केन्द्र की स्थापना हुई जिसके अंतर्गत 4 विषयों में 4 Chair (विभाग) स्थापित होकर प्रथम चेयर का विषय है-''जैन दर्शन में विज्ञान एवं गणित।'' इस चेयर में प्रारम्भिक कार्य एक मोनोग्राफ तैयार करने का किया गया है इसमें देश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक व गणितज्ञ विद्वानों को आमंत्रित किया गया है। दिनांक 2-3 अक्टूबर, 2014 को आचार्य महाश्रमण जी के सान्निध्य में देश-विदेश के विद्वानों के बीच होने वाली कार्यशाला में उपरोक्त विषय को प्रस्तुत किया जायेगा। इसके प्रमुख परामर्शदाता आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के अग्रणी शिष्य डॉ. एन.एल. कछारा जी को बनाया गया है। मोक्षशास्त्र की आचार्यश्रीकृत टीका ग्रंथ ''स्वतंत्रता के सूत्र'' का द्वितीय संस्करण हिरणमगरी, सेक्टर-11 वालों के उदार सहयोग से प्रकाशित होने जा रहा है।

शुभाकांक्षा सह-श्रमण मुनि सुविज्ञसागर

''आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के संक्षिप्त व्यक्तित्व-कृतित्व''

(आचार्यश्री ससंघ के नियम-कार्य)

1. आचार्य श्री कनकनन्दी जी तथा उनके शिष्यों के द्वारा अभी तक धर्म, दर्शन, विज्ञान, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि सम्बन्धी शोधपूर्ण गद्य साहित्य प्रायः 200 तथा पद्य साहित्य प्रायः 30 का प्रकाशन विभिन्न भाषाओं में एवं अनेक संस्करणों में हो गया है तथा अभी भी गतिशील है।

2. भारत के 14 प्रदेशों के 57 विश्वविद्यालयों में शोध के लिये ''आचार्य कनकनन्दी साहित्य कक्ष'' की स्थापना तथा 14 प्रदेशों के शताधिक मन्दिर, लाइब्रेरी में साहित्य कक्षों की स्थापना एवं देश-विदेशों के विभिन्न धर्मावलम्बी विद्यार्थी से लेकर प्रोफेसर्स-वैज्ञानिकों के द्वारा शोध कार्य चालू है, यह शोधकार्य स्व-प्रोफेसर्स

शिष्यों के द्वारा हो रहा है।

3. अभी तक 13 प्रदेशों में हजारों कक्षा, 33 शिविर, 11 वैज्ञानिक संगोष्ठी के माध्यम से विभिन्न धर्मों के लाखों विद्यार्थी को पढ़ाना।

4. स्वसंघ (आचार्य कुन्थुसागर जी) तथा पर-संघ के प्रायः 250 आचार्य, उपाध्याय, साधु-साध्वी, ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी आदि को पढ़ाना।

5. विभिन्न धर्म के शताधिक विद्वान, शिक्षक, लेक्चरार, डॉक्टर, प्रोफेसर्स, इंजीनियर, कुलपति, वैज्ञानिक, वकील, जज आदि को पढ़ाना तथा देश-विदेशों के शिष्य-भक्तों के द्वारा शोधकार्य, धर्म प्रचार, विश्वविद्यालयों से लेकर विश्वधर्म संसद तक होना।

6. ''जैन एकता एवं विश्वशान्ति'' के लिये देश-विदेशों में कार्य करना। इस कार्य को व्यापक एवं प्रायोगिक रूप देने के लिए आचार्यश्री ससंघ का ''अखिल भारतीय जैन एकता मंच'' द्वारा हल्दीघाटी में चातुर्मास हुआ और 20-25 श्वेताम्बर जैनों के ग्राम में विहार हुआ।

7. आध्यात्मिक-वैज्ञानिक उदारवादी धर्म द्वारा स्व-पर-विश्वकल्याण करना, भारत को पुनः विश्वगुरु बनाना तथा सर्वोपरि सत्य की उपलब्धि करना अन्तिम लक्ष्य है।

विशेष ध्यान योग्य-उपरोक्त समस्त कार्य आचार्यश्री कनकनन्दी के देश-विदेशों के विभिन्न धर्मावलम्बी भक्त-शिष्यों के द्वारा स्वेच्छा से तन-धन-मन-समय- श्रम के सहयोग से हो रहा है और आगे भी होगा। इसके लिये किसी भी प्रकार के चन्दा-चिट्ठा, याचना-प्रलोभन-दबाव-बोली-व्यापारीकरण सर्वथा वर्जित है। आचार्यश्री तो उपर्युक्त कार्य के लिये अकिंचित्कर हैं (कर्त्ता नहीं हैं) केवल वे अपने शिष्य-भक्तों को पढ़ाते हैं, मार्गदर्शन देते हैं एवं आशीर्वाद देते हैं।

8. आचार्यश्री के साहित्य पर शोध करने वाले विद्यार्थियों को प्रथम द्वितीय वर्ष में 19,000/- रु. तथा तृतीय-चतुर्थ वर्ष में 25,000/- रु. स्कॉलरशिप रूप में मिलेंगे।

9. जैन विश्व भारती, लाडनूँ में 'जैन दर्शन विज्ञान एवं गणित' सम्बन्धी चेयर (विभाग) का प्रारम्भ हुआ है जिसके प्रमुख आचार्यश्री के शिष्य डॉ. एन.एल. कछारा हैं।

बुद्धिमान व्यक्ति समय पर सीखते हैं, जबकि मूर्ख उस समय सीखते हैं जब विवशता हो, या स्वयं की स्वार्थ पूर्ति हो!

-आचार्य कनकनन्दी